अगस्त 2023 ■ वर्ष : 68 ■ अंक : 11 ■ पृष्ठ : 60 ■ मूल्य : ₹ 60

अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

1949 - 2024

अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत अमृत महोत्सव

जीवन व्यवहार की पवित्रता का रहस्य

अणुव्रत आंदोलन
75
1949 - 2024

नई पीढ़ी में रचनात्मकता और सकारात्मकता
को प्रोत्साहित करने का राष्ट्रव्यापी अभियान

ANUVRAT CREATIVITY CONTEST 2023

मुख्य विषय : असली आजादी अपनाओ

प्रतियोगिताएं

लेखन | चित्रकला | गायन | भाषण | कविता

राष्ट्रीय स्तर पर आकर्षक पुरस्कार

15 राज्य

200 शहर

1 लाख बच्चे

सम्पर्क करें :

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

+91-91166-34514

स्कूल स्तर पर प्रतियोगिता करवाने की अंतिम तिथि 30 अगस्त 2023

अणुविभा

अणुव्रत
विश्व भारती
सोसायटी

■ ■ ■

मैं मानता हूँ कि व्रतों के बिना दुनिया चल नहीं सकती। व्रतों को त्यागने से सर्वनाश हो जाता है। मैं व्यक्ति-सुधार में विश्वास नहीं रखता। सामूहिक सुधार को सत्य मानकर चलता हूँ। व्यक्ति-सुधार की प्रक्रिया में उतना वेग और उत्साह नहीं रहता, जितना सामूहिक सुधार में रहता है। इसके तात्कालिक परिणाम भी लोगों को आकृष्ट कर लेते हैं। अणुव्रत आंदोलन इस दिशा में मार्ग-सूचक बने, ऐसी मेरी भावना है।

- आचार्य जे.बी. कृपलानी

■ ■ ■

वर्ष 68 ● अंक 11 ● कुल पृष्ठ 60 ● अगस्त, 2023

सम्पादक
संचय जैन

सह–सम्पादक
मोहन मंगलम

■ ■ ■

टाइपसेटिंग व लेआउट
मनीष सोनी

क्रिएटिव्स
आशुतोष रॉय

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

अविनाश नाहर, अध्यक्ष
भीखम सुराणा, महामंत्री
राकेश बरड़िया, कोषाध्यक्ष

प्रकाशन मंत्री
देवेन्द्र डागलिया
संयोजक, पत्रिका प्रसार
सुरेन्द्र नाहटा

:: सदस्यता शुल्क विवरण ::

एक अंक	– ₹ 60
एक वर्षीय	– ₹ 750
त्रैवर्षीय	– ₹ 1800
पंचवर्षीय	– ₹ 3000
दसवर्षीय	– ₹ 6000
योगक्षेमी (15 yrs.)	– ₹ 15000

:: बैंक विवरण ::

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
केनरा बैंक
A/c No. **0158101120312**
IFSC : CNRB0000158

:: ऑनलाइन भुगतान के लिए ::

इस क्यूआर
कोड को स्कैन करें

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002

anuvrat.patrika@anuvibha.org
www.anuvibha.org
दूरभाष : 011–23233345, मोबाइल : 9116634512

अनुक्रमणिका

प्रेरणा पाथेय

- संतुलित जीवनशैली का आधार 06
  आचार्य तुलसी
- जीवन व्यवहार की पवित्रता का रहस्य 09
  आचार्य महाप्रज्ञ
- संयम से क्या मिलेगा? 13
  आचार्य महाश्रमण

आलेख

- करुणा का दीप जलाएं 16
  मुनि सुखलाल
- विचार-क्रांति का दर्शन है अणुव्रत 18
  मुनि कोमल कुमार 'उमरी'
- राष्ट्रबोध ही एकमात्र लक्ष्य हो 19
  गिरीश पंकज
- अणुव्रत गीत : एक अनुशीलन 23
  संचय जैन
- सहिष्णुता : आज की महती आवश्यकता 27
  डॉ. लोकेन्द्र सिंह कोट
- An Alternative Lifestyle... 29
  H. M. Desarda
- सफलता के प्रतिमान 34
  नरेन्द्र सिंह 'नीहार'

कहानी

- स्नेह का बंधन 32
  रंगनाथ द्विवेदी

कविता

- मुझे बताओ मित्र? 26
  डॉ. कैलाश सुमन
- क्या सीखा हमने? 31
  सुकीर्ति भटनागर

लघुकथा

- सवाल का जवाब 15
  गोविंद भारद्वाज

- संपादकीय 05
- कदमों के निशां 21
- अणुव्रत पुरस्कार 36
- गौरवशाली अतीत के झरोखे से... 37
- सम्मति 44
- आचार्य प्रवर का भव्य चातुर्मासिक प्रवेश 46
- अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट बैनर विमोचन 47
- अणुव्रत बालोदय किडजोन का शुभारंभ 48
- जीवन विज्ञान चिंतन संगोष्ठी 49
- 'बच्चों का देश' रजत जयंती वर्ष 52
- समिति समाचार 53
- अणुव्रत पत्रिका विशेष योजना 56
- अणुव्रत की बात 57

- अणुव्रत सिद्धांत, स्वास्थ्य, जीवन–मूल्य एवं अभिप्रेरणा विषयक सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा।
- anuvrat.patrika@anuvibha.org पर ही सामग्री प्रेषित करें।
- ईमेल द्वारा संप्रेषित कम्पोज की गयी प्रकाशन सामग्री की Open Word File को प्राथमिकता दी जाएगी।
- फोटो की गुणवत्ता कम होने पर उसे प्रकाशित करने में असमर्थता रहेगी। व्हाट्सएप पर फोटो न भेजें।
- अनिमंत्रित सामग्री को लौटाने हेतु बाध्यता नहीं रहेगी।
- प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों का निजी चिंतन है। प्रकाशक एवं सम्पादक इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं।
- इस प्रकाशन से सम्बन्धित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

स्वतंत्रता और हमारी भूमिका

15 अगस्त को हम एक उत्सव की तरह मनाते हैं। देशभर में भव्य आयोजन होते हैं। विदेशों में भी भारतीय अपने स्वतंत्रता दिवस को शान से मनाते हैं। व्यक्ति, समूह या समाज की स्वतंत्रता एक बात है। उसका महत्व कम नहीं होता, लेकिन एक देश की स्वतंत्रता अतिविशिष्ट घटना है। न जाने कितनी पीढ़ियों के संघर्षों की दास्तान छुपी होती है किसी देश की आजादी के पीछे। स्वतंत्रता दिवस तो मात्र एक प्रतीक होता है लेकिन उस दिवस तक पहुँचने में कितने सेनानियों ने कितनी रातें जाग कर बितायीं, कितनी जिंदगियाँ कुर्बान हो गयीं, गुलामी की जंजीरों में जकड़ कर कितने मासूमों ने अत्याचार की वेदनाएँ सहीं... इसकी स्मृति का स्मारक होता है एक देश का स्वतंत्रता दिवस।

लेकिन क्या यथार्थ में हम जोड़ पाते हैं स्वयं को उस अतीत से जो हमारे वर्तमान की बुनियाद बना! क्या हम जोड़ पाते हैं खुद को उन सपनों से जो स्वतंत्रता सेनानियों ने फांसी पर लटकते हुए या सीने पर गोली खाते हुए अपने देश के लिए देखे थे! क्या हम अपनी कथनी और करनी से सच्ची श्रद्धांजलि दे पा रहे हैं उन शहीदों को जिन्होंने अपनी जान इसलिए न्यौछावर कर दी थी कि आने वाली पीढ़ियाँ आजाद हवा में सांस ले सकें! प्रतिदिन नहीं, यदि प्रत्येक 15 अगस्त भी हमें इन प्रश्नों से दो-चार कर सके तो निश्चय ही इस दिवस की सार्थकता पर कोई प्रश्नचिह्न नहीं लगेगा।

लेकिन 15 अगस्त पर होने वाले औपचारिक आयोजन और ऊपरी तौर पर की जाने वाली खोखली बातें इस तरफ इशारा नहीं करती हैं। प्रतिदिन घटित होने वाली भ्रष्टाचार, हिंसा, बलात्कार, शोषण और भेदभाव की घटनाएँ बताती हैं कि देश के बारे में सोचने की हमें अब फुर्सत ही कहाँ है? लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं का जितना दुरुपयोग किया जा सकता है, उसमें सब से आगे रहने की मानो होड़-सी लगी है। राजनैतिक दलों और राजनेताओं ने मर्यादाओं को ताक पर रख कर एक ऐसा माहौल बना दिया है जहाँ वे देश के विकास की गाड़ी के दो पहिये नहीं वरन एक-दूसरे के दुश्मन नजर आते हैं। देश की आजादी, हमारे लोकतंत्र और संविधान की सुरक्षा का दायित्व मुख्यत: जिन चार स्तम्भों पर टिका है, यदि वे कमजोर होने लगें तो अंतिम आशा जनता होती है। क्या जनता अपना दायित्व भली प्रकार निभा पा रही है?

जब बात जनता पर आती है तो प्रश्न उठता है कि क्या वह सही मायने में आजाद है? क्या भीतर से मजबूत है? या वह स्वयं इस क्षरण का हिस्सा बन गयी है! क्या वह अपने स्वार्थ में इतनी लाचार हो गयी है कि सत्ता की ताकत उसे चाहे जिधर लुढ़का सकती है। किसी देश के चरित्र का निर्धारण उस देश की जनता के चरित्र से होता है। आज इस बात की सबसे अधिक जरूरत है कि हमारा, देश की जनता का चरित्र उन्नत हो। इस दिशा में सार्थक प्रयास की अपेक्षा राजनेताओं और सत्ताधीशों से करना बेमानी है, जिनका स्वयं का चरित्र दागदार है। ऐसे में संत-महात्माओं और सद्जनों को अपने प्रयासों को नयी गति और शक्ति देने की आवश्यकता है जो अपने चरित्र की ताकत से जन-जन को सही दिशा दिखा सकें। समाज को भी व्यापक हित में यह सोचना होगा कि उसे किन्हें सम्मान की दृष्टि से देखना है और आदर्श के रूप में स्थापित करना है - भ्रष्ट राजनेताओं, प्रशासकों को या चरित्रवान व्यक्तियों को!

देश की आजादी को मजबूत करने में मैं क्या योगदान दे सकता हूँ, यह प्रश्न आपके और मेरे, हम सब के मन में उठे, पूरी ताकत के साथ उठे, यह कामना करता हूँ और गत 15 अगस्त के दिन मन में उठे विचारों की काव्य पंक्तियाँ समर्पित करता हूँ -

आज पंद्रह अगस्त है
भारत खुशियों की
तिरंगी होली मना रहा है
हर घर तिरंगा, तो कहीं
हर हाथ तिरंगा
मानो उल्लास का महापर्व है।

हर भारतीय आज खुशी मनाये
यह लाजिमी भी है, किंतु
खुश होने की मेरी कोशिश
आज लगातार नाकाम हो रही है।
मैं गौरवान्वित अवश्य हूँ
पर खुश नहीं।

गौरवान्वित हूँ
देश की आजादी पर,
मातृभूमि के उन वीर सपूतों पर
जिनके बलिदान से
हमें आजादी मिली,
गौरवान्वित हूँ
हमारी सांस्कृतिक धरोहर पर
समृद्ध विरासत पर
दुनिया ने जिससे सीख ली।

लेकिन मैं खुश नहीं हूँ।
खुशी वर्तमान में छुपी होती है
इतिहास में नहीं
और वर्तमान मुझे झकझोर रहा है
खुश होने से रोक रहा है
गंभीर प्रश्न पूछ रहा है
क्या योगदान है तुम्हारा?

यही कि आजादी के जज्बे को
मूकदर्शक बन
तार-तार होते देख रहे हो?
स्वार्थ की चादर में लिपटे
छद्‌म देशप्रेम को
परवान चढ़ते देख रहे हो?
धार्मिक कट्टरवाद के बीच
मानवता को पिसते देख रहे हो?

मेरे दोस्त!
जरा अपने गिरेबान में झांक कर तो देखो
उत्सव मनाने का हक भी है तुम्हें?
दूसरों के बलिदान पर उत्सव मना कर
क्या अपनी नाकामी छुपा सकते हो तुम?
इतिहास तो कल भी लिखा जाएगा
आने वाली पीढ़ियां
क्या गौरव कर पाएंगी तुम्हारी भूमिका पर?

सं. जै.
sanchay_avb@yahoo.com

संतुलित जीवनशैली का आधार

किसी प्राणी के प्राणों का वध हिंसा है। उससे भी बड़ी हिंसा प्रमाद का वह क्षण है, जब व्यक्ति आत्मतुला के सिद्धान्त को भूलकर किसी का प्राण-वियोजन करता है। विचारों के जिस धरातल पर हिंसा के भाव अंकुरित होते हैं, उस धरातल का निर्माण प्रमाद के क्षणों में ही हो सकता है।

समय का चेहरा बदलता है, पर सत्य नहीं बदलता। अर्थ अनर्थ का मूल है, यह एक सनातन सत्य है। मनुष्य जीवन की एक बड़ी विसंगति है अर्थ। एक ओर अर्थ को अनर्थ का मूल माना गया है, दूसरी ओर अर्थ के बिना किसी का जीवन नहीं चलता। जहाँ अर्थ है, वहाँ हिंसा है। अर्थ का अर्जन, अर्थ का भोग, अर्थ का संग्रह और अर्थ की सुरक्षा। इनके साथ हिंसा ऐसे गुंथी हुई है कि उसे वहाँ से अलग किया ही नहीं जा सकता। ऐसी स्थिति में अहिंसा और शान्ति के अर्थशास्त्र की चर्चा सचमुच चौंकाने वाली है।

अध्यात्म की भाषा में प्रमुख पाप दो हैं - हिंसा और परिग्रह। दूसरे शब्दों में प्रमाद और आसक्ति। प्रमाद हिंसा है। महावीर ने गौतम से कहा - "समयं गोयम ! मा पमायए" अर्थात् गौतम! तू एक क्षण भी प्रमाद मत कर। अहिंसा का व्रत स्वीकार करने के बाद प्रमाद होता है तो उससे अहिंसा खण्डित होती है। किसी प्राणी के प्राणों का वध हिंसा है। उससे भी बड़ी हिंसा प्रमाद का वह क्षण है, जब व्यक्ति आत्मतुला के सिद्धान्त को भूलकर किसी का प्राण-वियोजन करता है। विचारों के जिस धरातल पर हिंसा के भाव अंकुरित होते हैं, उस धरातल का निर्माण प्रमाद के क्षणों में ही हो सकता है।

हिंसा परिग्रह की जननी है या परिग्रह हिंसा का जनक है? यह एक गंभीर प्रश्न है। कुछ लोग हिंसा के साथ परिग्रह को जोड़ते हैं। अहिंसा परमो धर्मः – इस अवधारणा के आधार पर वे सब बुराइयों की जड़ हिंसा को मानते हैं। यह सत्य का एक पक्ष है। इसका दूसरा पक्ष सब समस्याओं का मूल परिग्रह को मानता है। महावीर ने कहा - "ण एत्थ तवो वा दमो वा णियमो वा दिस्सति"- परिग्रह में आसक्त मनुष्य के न तप होता है, न शांति होती है और न नियम होता है।

अर्थ को अनर्थ का मूल मानने पर भी इसे छोड़ा नहीं जा सकता क्योंकि यह समाज के लिए आवश्यक है, उपयोगी है। अर्थ हिंसा से छुटकारा नहीं हो सकता। अर्थ हो और हिंसा न हो, यह कैसे संभव हो सकता है? सन् 1965 में हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के बीच जंग छिड़ी। उस समय हम दिल्ली में थे। विश्वविद्यालय के कुछ प्रोफेसर हमारे पास आकर बोले - "आचार्य जी! पाकिस्तान ने देश पर आक्रमण कर दिया। आप अहिंसक हैं। आपके लिए यह समय बहुत संकट का है। अब क्या होगा?" मैंने कहा - "संकट तो पूरे देश पर है। इसमें आप और हम अलग कहाँ रहते हैं?" प्रोफेसर बोले- "जैन लोग अहिंसा को मानते हैं। युद्ध में उनकी क्या भूमिका हो सकती है?" उनके कथन

अर्थ के साथ हिंसा की बात कोई नयी अवधारणा नहीं है। जब कभी और जहाँ कहीं अर्थ की सीमा का अतिक्रमण हुआ है, वहाँ हिंसा को भड़कने का अवसर मिला है। प्राचीन काल में युद्ध का प्रमुख कारण अर्थ या परिग्रह को ही माना जाता था। परिग्रह को केन्द्र में रखकर चलने वाले हिंसा से कभी नहीं बच सकते।

का अभिप्राय समझकर मैंने कहा- "जैन लोग अहिंसा में विश्वास करते हैं, यह बात सही है, पर क्या सब जैन संन्यासी हैं? वे देश में रहते हैं। अपने बाल-बच्चों के साथ रहते हैं। उनके पास जमीन-जायदाद है। वे व्यवसायी हैं। वे अपनी और अपने देश की सुरक्षा नहीं करेंगे क्या?" प्रोफेसरों का अगला प्रश्न था - "क्या जैन लोग मोर्चे पर जा सकते हैं? युद्ध में सम्मिलित हो सकते हैं?" मैंने कहा - "आप भी कैसी बात कर रहे हैं? लगता है कि आपको इतिहास का ज्ञान नहीं है। जैन सम्राट हुए हैं। सेनापति हुए हैं। उन्होंने युद्ध लड़े हैं, पर उनके युद्ध में एक सीमा थी कि अनर्थ हिंसा न हो, अनावश्यक हिंसा न हो।" यह बात उनकी समझ में आ गयी।

युद्ध के प्राचीन और अर्वाचीन कारण

अर्थ के साथ हिंसा की बात कोई नयी अवधारणा नहीं है। जब कभी और जहाँ कहीं अर्थ की सीमा का अतिक्रमण हुआ है, वहाँ हिंसा को भड़कने का अवसर मिला है। प्राचीन काल में युद्ध का प्रमुख कारण अर्थ या परिग्रह को ही माना जाता था। परिग्रह को केन्द्र में रखकर चलने वाले हिंसा से कभी नहीं बच सकते। इस दृश्य परिग्रह से भी बड़ा परिग्रह होता है, मत का, विचारों का परिग्रह। जब तक मनुष्य के विचारों में हिंसा नहीं उतरती, वह हाथ में हथियार नहीं उठा सकता।

आज युद्ध का स्वरूप बदल गया है। उसकी परिभाषाएं ही बदल गयी हैं। युद्ध के मोर्चों पर सेनाओं की आमने-सामने लड़ाई में शस्त्रों के साथ युद्ध कौशल का महत्व था। सुरक्षात्मक उपायों में परकोटों, दुर्गों, बुर्जों और खाइयों का मूल्य था। अब हवाई हमलों के सामने ये उपाय कितने असहाय बन गये हैं। स्टारवार की विभीषिका से पूरा विश्व संत्रस्त है। आज तो एक व्यक्ति आयुधशाला में बैठकर एक बटन दबा दे तो प्रलय की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। यही कारण है, अब बड़े-बड़े शक्तिशाली राष्ट्र शस्त्रपरिसीमन, निःशस्त्रीकरण और युद्ध को टालने की बात में विश्वास करने लगे हैं।

इस शताब्दी का सबसे अधिक भयावह युद्ध है आर्थिक। आर्थिक युद्ध अर्थात् व्यापार में कॉम्पीटिशन। विश्व स्तर पर व्यावसायिक प्रतिस्पर्धाएं। भारत में बहुउद्देश्यीय कम्पनियों के आगमन की आशंका की दृष्टि से देखा जा रहा है। देश में एक अनाम भय बढ़ता जा रहा है। व्यवसायी लोगों का एक ही चिन्तन है कि जैसे-तैसे उत्पादन बढ़े। उत्पादन बढ़ेगा और आवश्यकताएं नहीं बढ़ेंगी तो उत्पादन की खपत नहीं होगी। इसलिए आवश्यकता को बढ़ाने की प्रक्रिया काम में ली जा रही है। एक से एक आकर्षक विज्ञापनों के माध्यम से मनुष्य में उपभोग की आकांक्षा जगायी जा रही है। आकांक्षा की पूर्ति के लिए अर्थ बढ़ेगा, सम्पन्नता बढ़ेगी। जैसे-जैसे सम्पन्नता बढ़ेगी, नयी आकांक्षाएं पैदा होंगी। आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए उत्पादन बढ़ेगा। इस प्रकार एक चक्र चलता रहेगा। उत्पादन भी किसका? शस्त्रों का, शराब का, ड्रग्स का, और भी न जाने किस-किस का। यहाँ जरूरत है विवेक की। यहाँ अपेक्षा है नियंत्रण की। विवेक और नियंत्रण से मुक्त व्यवसाय आदमी को कहाँ ले जाएगा, कुछ भी कहना कठिन है।

व्यापार की सीमाएं

महावीर ने कभी व्यवसाय का निषेध नहीं किया, पर वहाँ भी कुछ सीमा-रेखाएं खींचीं। उन्होंने श्रावक आनन्द को बारह व्रतों का स्वरूप समझाया। इनमें सातवां व्रत है 'उपभोग-परिभोग-परिमाण।' इस व्रत के सन्दर्भ में उनका चिन्तन स्पष्ट है-

भोग के साधन विपुल हैं, अतुल मन की लालसा,
लालसा की पूर्ति में आरंभ है भूचाल-सा।
खाद्य-संयम वस्त्र-संयम वस्तु का संयम सधे,
भोग या उपभोग का संयम सफलता से बढ़े।।

श्रावक को जीवन-यापन के लिए व्यवसाय करना होता है, किन्तु ऐसा व्यवसाय जिसमें हिंसा की सीमा नहीं रहती, त्याज्य है।

इस प्रकार के व्यवसाय में पन्द्रह कर्मादानों का समावेश होता है। अंगारकर्म, वनकर्म, शाकटकर्म, भाटककर्म आदि पन्द्रह कर्मादानों को श्रावक के लिए एक सीमा के बाद वर्जित माना गया है। व्यवसाय के क्षेत्र में भी मान्यताओं में बहुत परिवर्तन हुआ। ऐसी स्थिति में किसी निश्चित मानक का निर्धारण कठिन प्रतीत होता है। फिर भी शस्त्र, अभक्ष्य पदार्थ, मादक व नशीले

मनुष्य अपने जीवन को सही ढंग से जीना चाहता है। जीवन सही है या नहीं? इस जिज्ञासा को समाहित करने के लिए चार मानक निर्धारित हैं - शान्ति, तुष्टि, पवित्रता और आनन्द। भारतवर्ष की संस्कृति में अर्थ, भोगविलास, सत्ता और संघर्ष को जीवन का आदर्श नहीं माना गया।

पदार्थ (ड्रग्स) तथा क्रूर हिंसा जनित वस्तुओं के व्यापार से तो बचा ही जा सकता है।

प्राचीन काल में अधिक लोग खेती करते थे। उसे उत्तम माना जाता था – उत्तम खेती मध्यम व्यापार। इस दृष्टि से अनेक प्रकार के व्यापार निषिद्ध थे। मूल बात यह है कि उस समय इच्छाएं कम थीं, आवश्यकताएं कम थीं, इसलिए व्यापार भी सीमित था। व्यापार की सीमा के पीछे मूल उद्देश्य यह था कि जीवन की शान्ति का भंग नहीं होना चाहिए। अशान्ति को मोल लेकर अर्थार्जन और अर्थ-संग्रह का मतलब ही क्या है?

जीवन की परिभाषा

मनुष्य अपने जीवन को सही ढंग से जीना चाहता है। जीवन सही है या नहीं? इस जिज्ञासा को समाहित करने के लिए चार मानक निर्धारित हैं – शान्ति, तुष्टि, पवित्रता और आनन्द। भारतवर्ष की संस्कृति में अर्थ, भोगविलास, सत्ता और संघर्ष को जीवन का आदर्श नहीं माना गया। इस भूमिका पर जीवन की एक अच्छी परिभाषा यह हो सकती है –

शान्तं तुष्टं पवित्रं च सानन्दमिति तत्त्वतः।
जीवनं जीवनं प्राहुः भारतीयसुसंस्कृतौ।।

प्रश्न एक ही है कि शान्ति और तुष्टि कैसे मिले? पवित्रता आये कहाँ से? आनन्द का उत्स कहाँ है? खोजने वालों के लिए समाधान की कमी नहीं रहती। जो चलता है, वह मंजिल तक पहुँच जाता है। हमने महावीर का दर्शन पढ़ा। उसको आधार बनाकर चिन्तन किया। वहाँ से प्राप्त समाधान की इस भाषा में प्रस्तुति दी जा सकती है -

सन्तोषाज्जायते शान्तिस्तोषहेतुः स्वतंत्रता।
हेतुशुद्धया पवित्रत्वं स्वस्थ आनन्दमर्हति।।

शान्ति की चाह है तो सन्तोष करो। अन्यथा अरबों-खरबों की संपदा के बीच रहकर भी शान्ति उपलब्ध नहीं हो सकेगी। तुष्टि की चाह है तो स्वतंत्र बनो, आत्मानुशासित बनो। अन्यथा बाह्य नियंत्रण की परवशता में तुष्टि की संभावना ही समाप्त हो जाएगी। पवित्रता की आकांक्षा है तो साधनशुद्धि का ध्यान रखो। धतूरे के पेड़ पर आम नहीं लग सकते। इसी प्रकार अशुद्ध साधनों से पवित्रता नहीं आ सकती। आनन्द की आकांक्षा है तो स्वस्थ रहो, अपने आप में रहने का अभ्यास करो, पर में आनन्द खोजने वाला व्यक्ति भटक जाता है। पदार्थ पर है। मनुष्य की सहज मनोवृत्ति यह है कि वह पदार्थ में आनन्द का अनुभव करता है। वह आनन्द भ्रम है। वह अनुभूति क्षणिक है। आत्मस्थ होने पर जैसा आनन्द मिलता है, वह एक बार भी मिल जाये तो पदार्थजनित आनन्द की तुच्छता समझ में आ जाएगी।

स्वस्थ और संतुलित जीवन

महावीर के अर्थशास्त्र में आकांक्षाओं और आवश्यकताओं को बढ़ाने का नहीं, प्राप्त साधन सामग्री में सन्तोष करने का निर्देश है। उन्होंने विवशता से गरीबी का अभिशाप झेलने की नहीं, स्ववशता में अर्थ को सीमित करने की बात कही। उन्होंने अर्थ के अर्जन का निषेध नहीं किया, किन्तु साधनशुद्धि पर पूरा बल दिया। उन्होंने चोरी को तो त्याज्य माना ही, चोर को चोरी करने में सहयोग देने को भी उचित नहीं माना। उनकी दृष्टि से चोरी का माल खरीदना, राज्य द्वारा निषिद्ध वस्तु का आयात-निर्यात करना, मिलावट करना, असली वस्तु दिखाकर नकली वस्तु देना, तौल-माप में कमी-बेसी करना, रिश्वत लेना आदि अर्थार्जन के अशुद्ध साधन हैं। ऐसे साधनों से अर्जित अर्थ से पवित्रता नहीं आ सकती।

महावीर की दृष्टि में तात्कालिक लाभ का नहीं, दीर्घकालिक लाभ का महत्व था। ईमानदारी को गिरवी रखकर, व्यवसाय के क्षेत्र में अपनी साख खोकर तात्कालिक लाभ चाहने वाले व्यक्ति स्वस्थ नहीं हो सकते। अस्वस्थता शरीर की हो या मन की, वह आनन्द में बाधक है। स्वस्थ और सन्तुलित जीवनशैली के लिए महावीर के अर्थशास्त्र को पढ़ना और आत्मसात करना बहुत आवश्यक है।

तुलसी उवाच

मानवीय मूल्यों का सौरभ

अणुव्रत मनुष्यता का व्रत है। मनुष्यता सहज मानवीय गुणों का अभ्युदय है। जहां मनुष्य के व्यवहारों में अपने और पराये की भेदरेखा उभर आती है, वहाँ सहजता का लोप हो जाता है। जिस कार्य के लिए मनुष्य को यह सोचना पड़े कि मैं अमुक काम सबके सामने करूं या नहीं, वहाँ असहजता हो जाती है। असहज प्रवृत्तियों में क्रियाकाण्ड को बल मिल सकता है, पर चरित्र का पोषण नहीं होता। चरित्र को पुष्ट करने के लिए करणीय और अकरणीय का विवेक अपेक्षित है। जो मनुष्य अकरणीय कार्य से निवृत्त होकर स्वयं को करणीय से जोड़ लेता है, अग्राह्य को छोड़कर ग्राह्य को ग्रहण करता है तथा अवाच्य से अपना बचाव कर वाच्य में अपनी वाणी का नियोजन करता है अर्थात् जिस व्यक्ति में मनुष्यता होती है, वह जहाँ जाता है, मानवीय मूल्यों के सौरभ से वहाँ का वातावरण सुरभित बना देता है।

■ आचार्य महाप्रज्ञ ■

जीवन व्यवहार की पवित्रता का रहस्य

ध्यान को धोखा न बनाएं, विडंबना न बनाएं। बहुत पवित्रता के साथ यह अनुभव करें कि ध्यान की क्या मर्यादा है? ध्यान का क्या प्रतिफल है? इस दृष्टि से भीतर और बाहर - दोनों के प्रति जागरुकता बढ़े। इस उभयमुखी जागरुकता में ही जीवन व्यवहार की पवित्रता का रहस्य छिपा है।

अपने भीतर कौन कैसा है, यह पता चलना तो बहुत कठिन बात है, किन्तु व्यवहार जैसा सामने आता है, उसके आधार पर व्यक्ति को पहचाना जाता है। हमारी पहचान का सबसे बड़ा साधन बनता है व्यवहार। हम बाहर में कैसे प्रकट होते हैं? हमारी अभिव्यक्ति क्या होती है? हम दूसरे के प्रति, पदार्थ के प्रति, वस्तु के प्रति, व्यक्ति के प्रति कैसा व्यवहार करते हैं? उस व्यवहार में हमारा पूरा व्यक्तित्व झलक जाता है।

ध्यान का परिणाम है जागरुकता। छोटी से छोटी घटना के प्रति, छोटी से छोटी वस्तु के प्रति और छोटे से छोटे व्यक्ति के प्रति जागरुकता आ जाती है तो समझना चाहिए कि ध्यान ने बहुत अच्छा काम किया है। यह जागरुकता न आये, उतना ही प्रमाद बना रहे, जितना ध्यान करने से पहले था तो समझना चाहिए कि ध्यान किया तो था, पर परिणाम नहीं आया।

ध्यान से अन्तरंग बदलना चाहिए और व्यवहार भी बदलना चाहिए। अन्तरंग बदलाव - भाव शुद्धि, विचार शुद्धि। बाह्य बदलाव - चर्या शुद्धि, आर्थिक शुद्धि, सम्बन्ध शुद्धि। ध्यान से भीतर बदलेगा और बाहर से नहीं बदलेगा, यह बात सम्भव नहीं है। जो भीतर से बदलेगा, वह बाहर से भी बदलेगा। बदलाव दोनों दिशाओं में आएगा। बाहर से कोई बदलता है तो यह जरूरी नहीं है कि भीतर से भी बदल जाये। बाहर तो छलना हो सकती है। एक आदमी बाहर से बदल गया, बाहर बदलाव दिखाता है, किन्तु हो सकता है कि भीतर प्रवंचना हो। वहीं, जो भीतर में भी बदल जाएगा, उसके लिए यह निश्चित है कि वह बाहर में भी बदलेगा। जब आदमी भीतर से बदलता है तब दो शुद्धियां घटित होती हैं – भाव शुद्धि और विचार शुद्धि। ये दोनों स्व तक सीमित हैं।

चर्या शुद्धि

ध्यान का तीसरा परिणाम है – चर्या शुद्धि। इसका पहला तत्त्व है जागरण, जागने के बाद शारीरिक क्रिया करना। जहाँ शारीरिक क्रिया का प्रश्न है, वहाँ स्वच्छता की बात आएगी। वह ऐसा कोई भी कार्य नहीं करेगा, जिससे गन्दगी बढ़े, अस्वच्छता बढ़े, प्रदूषण बढ़े। यदि स्वच्छता की बात समझ में नहीं आती है तो धर्म की बात कैसे समझ में आएगी? वह आत्मा-परमात्मा, स्वर्ग-नरक, परलोक, पुनर्जन्म जैसे सूक्ष्म और गूढ़ तत्त्वों को कैसे समझ पाएगा?

ध्यान करने वाले व्यक्ति में चर्या शुद्धि की बात जागती है। वह अपनी ओर से वातावरण में गन्दगी पैदा नहीं करेगा। आज प्रदूषण का ज्वलंत प्रश्न है। एक धार्मिक आदमी, ध्यान की

जो आदमी जागरूक हो जाता है, उसका व्यवहार बदलता है चाहे कितनी ही बड़ी घटना सामने आये। ऐसा लगे, कोई पहाड़ टूट रहा है, अन्याय हो रहा है तो भी जल्दबाजी में वह कोई कार्य नहीं करेगा। बड़े धैर्य के साथ कार्य करेगा। यदि इस प्रकार का व्यवहार हो जाये तो परिवार में होने वाले सारे झगड़े समाप्त हो जाएं।

साधना करने वाला व्यक्ति इसके प्रति जागरूक रहेगा। वह सोचेगा – मेरे द्वारा प्रदूषण का बढ़ना हिंसा का बढ़ना है। ध्यान करने वाला व्यक्ति हिंसा को बढ़ावा देना नहीं चाहता। वह सारे दिन की चर्या – सोना, बैठना, उठना, बात करना आदि सब कुछ जागरुकता से करता है।

भगवान महावीर के सामने प्रश्न आया - एक साधक धर्म की आराधना करता है और एक व्यक्ति धर्म की आराधना नहीं करता है, दोनों में क्या भेद रेखा है? हम कैसे पहचान सकते हैं कि यह ध्यानी है, धार्मिक है और यह धार्मिक नहीं है? भगवान ने बहुत थोड़े में उत्तर दिया – अन्नहा णं पासह परिहरेज्जा – जो पश्यक् है, द्रष्टा है, जिसने सच्चाइयों को जानना, देखना शुरू कर दिया है, उसका सारा व्यवहार अन्यथा होगा। वह आम आदमी की तरह नहीं चलेगा। वह बोलेगा, खाएगा तो देखने वाले को पता लग जाएगा कि कितनी जागरुकता से काम कर रहा है, कितनी जागरुकता से चल रहा है।

जो आदमी जागरूक हो जाता है, उसका व्यवहार बदलता है चाहे कितनी ही बड़ी घटना सामने आये। ऐसा लगे, कोई पहाड़ टूट रहा है, अन्याय हो रहा है तो भी जल्दबाजी में वह कोई कार्य नहीं करेगा। बड़े धैर्य के साथ कार्य करेगा। यदि इस प्रकार का व्यवहार हो जाये तो परिवार में होने वाले सारे झगड़े समाप्त हो जाएं।

व्यवहार की एक कसौटी है – आहार शुद्धि। एक जागरूक व्यक्ति के खान-पान में सहज सभ्यता आ जाती है। वह संयम का मूल्य जानता है। इन्द्रियों की लोलुपता और आकर्षण उसके आड़े नहीं आएंगे। यह आहार शुद्धि चर्या की शुद्धि है। ध्यान करने वाला व्यक्ति पहले नम्बर का सभ्य होगा, शिष्ट और व्यवहारकुशल होगा। यदि ऐसा नहीं होता है, तो मान लेना चाहिए कि ध्यान हुआ नहीं है। जब हमारे भीतर के भाव बदलते हैं, तब बाहर का व्यवहार भी बदलना चाहिए। यदि ध्यान और व्यवहार अलग-अलग हो जाये, दोनों में कोई तालमेल नहीं रहे तो एक साधक की भी आज के धार्मिक जैसी स्थिति हो जाये। आज के तथाकथित धार्मिक के व्यवहार को देखकर कोई नहीं कह सकता कि यह धार्मिक व्यक्ति है। यदि ध्यान करने वाला न बदले तो वह ध्यानी भी तथाकथित धार्मिक जैसा बन जाएगा। ऐसा नहीं होना चाहिए।

आर्थिक शुद्धि

ध्यान का चौथा परिणाम है आर्थिक शुद्धि। ध्यान के साथ व्यवहार में परिवर्तन जरूरी है। एक व्यक्ति ध्यान करता है और अर्थ की शुद्धि के प्रति जागरूक नहीं है तो मानना चाहिए कि ध्यान का व्यवहार में अवतरण नहीं हुआ। आर्थिक शुद्धि की पहली मर्यादा है - व्यक्ति किसी के प्रति क्रूर व्यवहार न करे। एक साधक अर्जन की शुद्धि के प्रति जागरूक होगा। अर्जन में क्रूरता और कठोरता नहीं होगी। मालिक का मजदूर के प्रति कठोर और क्रूर व्यवहार नहीं होगा। क्रूर व्यवहार या क्रूरता का जो प्रसंग है, वह धार्मिक या ध्यान करने वाले आदमी में हो नहीं सकता। उसके मन में प्राणी मात्र के प्रति करुणा जागनी चाहिए।

आर्थिक शुद्धि का पहला लक्षण है - करुणा का विकास। एक साधक किसी के प्रति क्रूर व्यवहार नहीं कर सकता। क्या इस स्थिति में मिलावट की बात सोची जा सकती है? वह खाद्य वस्तु में मिलावट की बात कैसे सोच सकता है? वह धोखाधड़ी कैसे कर सकता है? वह किसी के प्रति अन्याय कैसे कर सकता है? किसी का गला कैसे घोंट सकता है? आर्थिक शुद्धि होने पर व्यक्ति किसी का शोषण नहीं कर सकता।

ध्यान करने वाले व्यक्ति में आर्थिक शुद्धि का विकास अवश्य होना चाहिए। हमारे पुराने आचार्यों ने एक परिभाषा बना दी - "अर्थशुचिः शुचि - जो अर्थ में पवित्र है, वह आदमी पवित्र है।" जो अर्थ में पवित्र नहीं है, घोटाला करता है, वह बिल्कुल अपवित्र है, दिल से काला है। हमारे दिल की पहचान आर्थिक शुद्धि से होती है और आर्थिक शुद्धि हमारी शुद्धि का हेतु बनती है।

जो ध्यानी होता है, उसमें सहयोग और सहानुभूति की भावना जागती है। वह केवल अपने स्वार्थ के लिए नहीं जीता, बल्कि जो

असमर्थ हैं, पिछड़े हुए हैं, उनके प्रति सहयोग और सहानुभूति की भावना जाग जाती है। वह अकेला ही नहीं खाना चाहता। दूसरे का कष्ट देखना उसके लिए सह्य नहीं होता। एक ध्यानी व्यक्ति अपनी सुविधा के लिए अधिक संग्रह नहीं कर सकता। वह भोग और उपभोग की सीमा करता है - "मैं अपने जीवन में इतने से ज्यादा अर्थ का प्रयोग नहीं करूँगा। इतने से ज्यादा पदार्थों का प्रयोग नहीं करूँगा। व्यक्तिगत जीवन को संयत रखूँगा।" आजकल कुछ स्थितियां देखते हैं, सुनते हैं कि लोग बुरे साधनों से धन कमाते हैं, फिर अपनी सुख-सुविधा, बड़प्पन और साज-सज्जा के लिए लाखों-करोड़ों रुपये तक खर्च कर देते हैं। यह प्रदर्शन की जो मनोवृत्ति है, बिल्कुल अर्थहीन है। इससे सामाजिक विकास में एक अवरोध पैदा हो गया है।

जो व्यक्ति ध्यान करने वाला है, उसमें यह बोध जागना चाहिए - क्या उपयोगी है और क्या अनुपयोगी है? धन का व्यय होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। हम लोग इसमें विश्वास नहीं करते कि धन से धर्म होता है। हमारा सिद्धान्त ही नहीं है। प्रश्न है - उपयोगिता और दुरुपयोगिता का। धन का जो खर्च होता है, वह उपयोगी काम में होता है अथवा दुरुपयोग में होता है। साज-सज्जा, सजावट - यह सारा दुरुपयोग है। एक बड़ा भोज किया, दस हजार आदमियों को भोज करा दिया। लगता नहीं कि उसका कोई उपयोग है। उपयोग वह है, जो समाज के लिए काम आये। चिकित्सा और शिक्षा के क्षेत्र में धन व्यय होता है तो व्यक्ति को लगता है कि यह उपयोगिता का काम है।

ध्यान करने वाले व्यक्ति में स्वार्थ की भावना प्रबल नहीं बन पाएगी। उसमें स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ - तीनों संतुलित हो जाते हैं। उसमें यह विवेक होता है कि इतना स्वार्थ साधना है, इतना परार्थ साधना है - दूसरे के लिए कुछ करना है और इतना परमार्थ करना है। स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ तीनों का संतुलन रहेगा तो सामाजिक सम्बन्ध कभी बिगड़ नहीं पाएंगे।

सम्बन्ध शुद्धि

ध्यान का पाँचवा परिणाम है - सम्बन्धों की शुद्धि। समाज में जितने सम्बन्ध हैं, वे बिल्कुल स्वस्थ बनें, यह अपेक्षित है। समाज का मतलब क्या है? सम्बन्धों का नाम ही समाज है। पिता-पुत्र, भाई-भाई, मालिक-कर्मचारी - ये जो सम्बन्ध हैं, इन सम्बन्धों की व्याख्या ही तो समाज है। वैसे हर आदमी अलग-अलग है, किन्तु सब परस्पर सम्बन्धों से जुड़ गये और एक समाज बन गया। सम्बन्ध मुक्त कोई नहीं है, सब सम्बन्धों से जुड़े हुए हैं। पिता हिन्दुस्तान में बैठा है और पुत्र कनाडा, अमेरिका या रूस में बैठा है। क्षेत्रीय दूरी बहुत है, पर बीच में सम्बन्ध का सूत्र जुड़ा हुआ है। पुत्र मानता है - मेरा पिता वहाँ है और पिता मानता है - मेरा पुत्र वहाँ है। दोनों के बीच स्नेह के सम्बन्ध का धागा जुड़ा हुआ है, वह टूटता नहीं है। सम्बन्धों की यह एक व्यूह रचना है और इसका नाम है समाज। सम्बन्धों की शुद्धि ध्यान का सहज प्रतिफल है।

आज सम्बन्धों की बड़ी समस्या है। सम्बन्ध शुद्ध नहीं रहे। इसका कारण है - स्वार्थ और भेदनीति। ये सम्बन्धों को बिगाड़ देते हैं। दो भाई हैं। एक-दूसरे का स्वार्थ अलग-अलग है। मैंने सैकड़ों परिवारों में देखा है कि एक भाई ज्यादा काम करता है, दूसरा कम करता है। एक को काम मिला, दूसरे को नहीं मिला। जिसकी कमाई ज्यादा है, वह अलग से अपना घर बसा लेता है। कुछ वर्षों के बाद इतना तनाव होता है कि घर में ही अलग चूल्हे नहीं जलते, दिमाग में भी अलग चूल्हे जलने लग जाते हैं। भाई-भाई में परस्पर इतना वैमनस्य होता है कि दुश्मनों के बीच भी उतना नहीं होता। वे एक-दूसरे को सहन नहीं कर सकते। थोड़ी-सी बात होती है और टकराव हो जाता है, सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं।

ध्यान करने वाले व्यक्ति में स्वार्थ की भावना प्रबल नहीं बन पाएगी। उसमें स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ - तीनों संतुलित हो जाते हैं। उसमें यह विवेक होता है कि इतना स्वार्थ साधना है, इतना परार्थ साधना है - दूसरे के लिए कुछ करना है और इतना परमार्थ करना है। स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ तीनों का संतुलन रहेगा तो सामाजिक सम्बन्ध कभी बिगड़ नहीं पाएंगे। सम्बन्ध तब बिगड़ते हैं, जब परार्थ और परमार्थ की भावना बिल्कुल सो जाती है। जब केवल स्वार्थ की भावना जागृत होती है, तब सम्बन्धों में बिखराव आ जाता है। आज ऐसा लगता है कि स्वार्थ की भावना को अतिरिक्त महत्व दे दिया गया, इसीलिए अनैतिकता और अप्रामाणिकता बढ़ी है।

जब स्वार्थ की चेतना प्रबल बन जाती है, तब एक ही कार्य के लिए न जाने कितने अधिकारियों की नियुक्ति होती है किन्तु

फिर भी कार्य ठीक से संचालित नहीं हो पाता। जब तक स्वार्थ की चेतना नहीं बदलेगी, स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ - इनका संतुलन नहीं होगा, तब तक समस्या का समाधान नहीं होगा। ध्यान करने वाले व्यक्ति का सम्बन्धों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण बनेगा, वह सम्बन्ध को स्वार्थ की दृष्टि से अस्वस्थ नहीं बनाएगा, प्रत्येक सम्बन्ध को शालीनता से देखेगा, परार्थ और परमार्थ की चेतना के आधार पर भी देखेगा। जहाँ परार्थ और परमार्थ का गुरुत्वाकर्षण है, वहाँ सब ग्रह अपने-अपने स्थान पर चलेंगे। पूरा समाज इस एक गुरुत्वाकर्षण से बंधा रहेगा तो वह अस्त-व्यस्त नहीं होगा। ध्यान करने वाले व्यक्ति सम्बन्ध शुद्धि का विकास करें, यह आवश्यक है।

भाव शुद्धि, विचार शुद्धि, चर्या शुद्धि, अर्थ शुद्धि और सम्बन्ध शुद्धि - ये पाँच ध्यान के फल हैं। भाव शुद्धि और विचार शुद्धि विकसित होगी तो व्यवहार जगत में ये तीन शुद्धियां विकसित होंगी - चर्या की शुद्धि, आर्थिक शुद्धि और सम्बन्ध शुद्धि। इन पाँच शुद्धियों के समुद्र का नाम है - ध्यान। इन पाँच फलों में से एक भी फल न मिले तो मानना चाहिए कि ध्यान का लेश भी मुझमें नहीं आया है। अगर इनका विकास हो तो मानना चाहिए कि मैंने ध्यान की साधना की है, ध्यान को समझा है, ध्यान को जीवन में उतरा है। ये शुद्धियां विकसित नहीं हैं तो मानना चाहिए कि आप ध्यान की दहलीज तक नहीं पहुँचे हैं, दरवाजा खुला नहीं है, बंद ही पड़ा है। ध्यान तक पहुँचने के लिए पुनः चाबी को घुमाना होगा। यह कसौटी आपके सामने प्रस्तुत है।

आप स्वयं अपने आपको देखें कि भीतर में कितना परिवर्तन आया है और व्यवहार में कितना परिवर्तन आया है। परिवर्तन दोनों ओर से आता है। अगर आप यह सोचें कि भीतर में बहुत परिवर्तन आ गया, बड़ी शान्ति रहती है, ध्यान करता हूँ तब ऐसा लगता है जैसे कोई अमृत पी लिया है, किन्तु यदि बाहर में विष ही विष घोल रहे हैं तो ध्यान की सार्थकता संदिग्ध है। भीतर में अमृत है तो बाहर में भी अमृत आना चाहिए। हम ध्यान को भी धोखा न बनाएं, विडंबना न बनाएं। जैसा आजकल हो रहा है कि बस ध्यान करो फिर कोई चिन्ता नहीं है, चाहे नशा करो, शराब पियो, मुक्त यौनाचार करो, जश्न मनाओ, गलत साधनों का प्रयोग करो, तुम्हारा सब कुछ ठीक हो जाएगा। यह कैसी विडंबना है?

हम ध्यान को बिल्कुल पवित्र रखें, इस धोखे में कभी न जाएं। जो इस धोखे में चले हैं, उन्होंने ध्यान को भी कलंकित किया है और धर्म को भी एक विडंबना की स्थिति में पहुँचा दिया है। हम बहुत पवित्रता के साथ यह अनुभव करें कि ध्यान की क्या मर्यादा है? ध्यान का क्या प्रतिफल है? इस दृष्टि से भीतर और बाहर - दोनों के प्रति जागरुकता बढ़े। इस उभयमुखी जागरुकता में ही जीवन व्यवहार की पवित्रता का रहस्य छिपा है। ■■■

तुलसी उवाच

आत्मनिर्भरता

वर्षों तक गुरु के पावन सान्निध्य में रहकर शिष्य ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। अब वह अपने घर जाना चाहता था। रास्ता उसके लिए अज्ञात था। उसने गुरु से अनुरोध किया- "गुरुदेव ! आपको कष्ट न हो तो मेरा पथ-दर्शन करें, अन्यथा मैं कहीं भटक जाऊँगा।" गुरु ने शिष्य के हाथ में दीपक दिया और आगे हो गये। गुरुकुल के द्वार तक वे चलते रहे।

उसके बाद शिष्य से कहा- "अब आगे मैं नहीं चलूँगा, तुम अपना मार्ग स्वयं खोजो। उस खोज में कहीं भटक भी जाओ तो घबराओ मत। एक दिन तुम अपनी मंजिल को पा लोगे।"

शिष्य ने गुरु के चरणों में झुककर प्रणाम किया और आगे बढ़ने के लिए उद्यत हुआ, उसी समय गुरु ने फूँक देकर दीपक बुझा दिया। शिष्य विस्मित हो गया। एक क्षण रुककर वह बोला- "गुरुदेव! आप मेरे साथ यह कैसा मजाक कर रहे हैं? न आप साथ चलते हैं और न आगे का पथ-दर्शन देते हैं। अपना पथ मैं स्वयं देखूं, इसके लिए जो दीपक मेरे साथ था, उसे भी आपने बुझा दिया। मैं अब क्या करूं?"

गुरु मुस्कुराते हुए बोले- "शिष्य! डरो मत, मैं तुम्हें आत्मनिर्भर देखना चाहता हूँ। यह जो दीपक तुम्हारे पास था, तुम्हारा अपना जलाया हुआ नहीं था। तुम स्वयं पुरुषार्थ करो, स्वयं प्रकाश पाओ, स्वयं दीपक जलाओ और उसे हाथ में लेकर अपना मार्ग तय करो।"

■ आचार्य महाश्रमण ■

संयम से क्या मिलेगा?

संयम शब्द धार्मिक साहित्य का एक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण शब्द है। संयम की साधना करने वाला व्यक्ति शुद्ध ज्ञान करे किन्तु अपनी चेतना को भोग से बचाने का प्रयास करे। संयम एक ऐसा तत्त्व है जो आन्तरिक समस्याओं का समाधान है तो बाह्य समस्याओं का भी समाधान है। इसलिए हम संयम की साधना करें, यह हमारे लिए श्रेयस्कर है।

प्रश्न किया गया – संजमेणं भंते! जीवे किं जणयइ? भन्ते! संयम से जीव क्या प्राप्त करता है? उत्तर दिया गया – संजमेणं अणण्हयत्तं जणयइ। संयम से जीव अनाश्रव की स्थिति का निर्माण करता है।

संयम शब्द धार्मिक साहित्य का एक प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण शब्द है। संस्कृत व्याकरण के अनुसार सम् उपसर्ग पूर्वक यमुं - उपरमे धातु से संयम शब्द निष्पन्न होता है। सम्यक्तया विरति करना संयम है। प्रश्न हो सकता है कि विरति किससे करें? विरति उन चीजों से करें जो हमारी आत्मा को मलिन बनाने वाली हैं। विरति उन कार्यों से करें, उन आकर्षणों से करें, जो हमारे स्वभाव को विभाव में ले जाने वाले होते हैं।

यह जगत द्वन्द्वात्मक है। इसमें दो ही तत्त्व हैं – एक चेतन और दूसरा अचेतन। प्राणी चेतन है, चेतनावान है। चेतन के सिवाय दुनिया में जो कुछ भी है, वह सब अचेतन है। जैन दर्शन के अनुसार अचेतन जगत अमूर्त भी है और मूर्त भी है। चेतन अमूर्त ही होता है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय और काल, ये चार अचेतन तत्त्व अमूर्त हैं। पुद्गल तत्त्व अचेतन है किन्तु वह मूर्त है। मूर्त होने का मतलब यह नहीं कि आँखों से देखा जा सकेगा। मूर्त भी दो प्रकार के होते हैं – एक वह मूर्त जो दृष्टि का गोचर बनता है और एक वह मूर्त जो आँखों से नहीं देखा जा सकता। एक परमाणु मूर्त है। उसमें स्पर्श है, रस है, गंध है, वर्ण है, परन्तु फिर भी उसे स्थूल नेत्रों से नहीं देखा जा सकता। अनन्त परमाणु मिलने से स्कन्ध बन जाता है।

हमारे सामने मूर्त दुनिया है, पदार्थ हैं। इन पदार्थों के प्रति हमारा आकर्षण भी होता है और विकर्षण भी होता है। हमारी पाँच ज्ञानेन्द्रियां हैं। इन इन्द्रियों का अपना-अपना एक-एक विषय है। स्पर्शनेन्द्रिय का विषय है- स्पर्श। रसनेन्द्रिय का विषय है रस। घ्राणेन्द्रिय का विषय है गन्ध। चक्षुरिन्द्रिय का विषय है रूप। श्रोत्रेन्द्रिय का विषय है शब्द। हमारी ज्ञानेन्द्रियां इन विषयों को ग्रहण करती हैं। इन इन्द्रियों के दो कार्य हैं – पहला कार्य है शुद्ध ज्ञान करना यानी स्पर्श, रस, गंध, रूप और शब्द कैसा है, यह जानना। दूसरा कार्य है भोग करना। इन इन्द्रियों के द्वारा विषयों का भोग भी किया जाता है। जैसे प्रशंसा भरे शब्दों को सुनने से मन में आह्लाद का भाव आ गया तो समझना चाहिए श्रोत्रेन्द्रिय का भोग हो गया। इसी प्रकार रूप, गंध, रस और स्पर्श का भी भोग किया जा सकता है।

संयम की साधना करने वाला व्यक्ति शुद्ध ज्ञान करे किन्तु अपनी चेतना को भोग से बचाने का प्रयास करे। जब मन के साथ

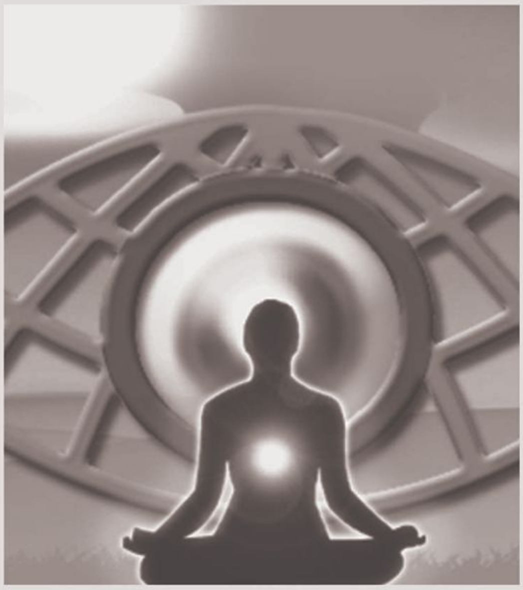

मन वंधन का कारण भी वनता है और मोक्ष का कारण भी वनता है। जो मन विषयों में आसक्त रहता है, वह वंधन की ओर ले जाता है और जो मन विषयासक्ति से मुक्त रहता है, वह मुक्ति की ओर ले जाने वाला होता है। आसक्ति से असंयम का पोषण होता है तो अनासक्ति से संयम की साधना होती है।

राग-द्वेष का भाव जुड़ जाता है तब मलिनता आ जाती है। श्रीमद्भगवद्गीता में सुन्दर कहा गया है –

रागद्वेषवियुक्तैस्तु, विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा, प्रसादमधिगच्छति।।

विषयों का ग्रहण तो किया जा सकता है किन्तु राग-द्वेष मुक्त इन्द्रियों से विषयों को ग्रहण करने का प्रयास करे। ज्ञाता-द्रष्टा भाव से विषयों का ग्रहण करे। उनके साथ राग-द्वेष का भाव न जुड़े। हम व्यवहार की दुनिया में जीवनयापन कर रहे हैं, विषयों की दुनिया में जी रहे हैं। हमारे कान शब्दों को न सुनें, यह कठिन है। हमारी आँखें रूप को न देखें, यह असंभव है। शेष इन्द्रियों के द्वारा भी अपने-अपने विषयों का ग्रहण न हो, यह मुश्किल है। इसलिए मध्यम मार्ग और उचित मार्ग यह बताया गया है –

ण सक्का ण सोउं सद्दा सोयविसयमागता।
रागदोसा उ जे तत्थ ते भिक्खू परिवज्जए।

पूज्य गुरुदेव तुलसी 'अध्यात्म पदावली' में इसका अनुवाद करते हुए लिखते हैं –

शक्य नहीं है शब्द न सुनना, खुले श्रोत्र के हैं जब द्वार।
शक्य यही है हो न शब्द में, द्वेष राग का अनुसंचार।।

साधक के मन में राग-द्वेष का भाव न आये, विषयों के प्रति आसक्ति का भाव न आये। साधक शुद्ध ज्ञान करे अथवा उचित रूप में भोग भी करे, परन्तु आसक्त न बने। एक साधक भोजन करता है किन्तु वह भी शरीर को चलाने के लिए करता है। दसवेआलियं में कहा गया है –

अहो! जिणेहिं असावज्जा, वित्ती साहूण देसिया।
मोक्खसाहणहेउस्स, साहुदेहस्स धारणा।।

तीर्थंकरों ने साधु को निरवद्य वृत्ति का निर्देश दिया है। उन्होंने साधु को भोजन करने की आज्ञा दी है, क्योंकि यह शरीर मोक्ष की साधना का हेतु बनता है, इसलिए शरीर को टिकाये रखना होगा और शरीर को टिकाये रखने के लिए उसे भोजन भी देना होगा। नौकर से काम करवाना है तो उसे वेतन भी देना होगा। यह शरीर भी हमारा कर्मचारी है, हमारा सहयोगी है। हमारी संयम की साधना में सहयोग करता है। साधक शरीर को चलाने के लिए भोजन को ग्रहण करे। जब-जब साधक विषयासक्त बनता है, तब-तब वह साधना से दूर हो जाता है।

संस्कृत साहित्य में मन के लिए कहा गया है – मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः। मन बंधन का कारण भी बनता है और मोक्ष का कारण भी बनता है। जो मन विषयों में आसक्त रहता है, वह बंधन की ओर ले जाता है और जो मन विषयासक्ति से मुक्त रहता है, वह मुक्ति की ओर ले जाने वाला होता है। आसक्ति से असंयम का पोषण होता है तो अनासक्ति से संयम की साधना होती है। शास्त्रकार ने कहा कि संयम से अनाश्रव की स्थिति का निर्माण होता है। जहाँ-जहाँ असंयम होता है, वहां अवश्यमेव आश्रव होता है। जितना-जितना संयम का विकास होता है, उतना-उतना अनाश्रव की स्थिति का निर्माण होता है और संवर की साधना का विकास होता है।

एक साधक के सामने संयम ही मुख्य तत्त्व होता है। उसका खाना भी संयम युक्त हो, उसका चलना भी संयम युक्त हो, उसका बोलना, देखना आदि हर क्रियाकलाप संयम युक्त हो। हमारे भीतर एक संघर्ष चलता है। भिन्न-भिन्न वृत्तियों के संस्कार उभरते रहते हैं। कभी मन में गुस्सा आ जाता है तो कभी अहंकार का भाव देखने को मिलता है। कभी लोभ का भाव तो कभी कामोत्तेजना का भाव उभर जाता है। उन भावों को परास्त करने का उपाय भी हमारे पास होना चाहिए। अन्यथा वे भाव हमें परास्त कर सकते हैं। तात्त्विक भाषा में इसे औदयिक भाव और क्षायोपशमिक भाव का संघर्ष कहा जाता है।

कभी-कभी औदयिक भाव के संस्कार इतने प्रबल होते हैं कि वे हमारे स्वभाव को भी पछाड़ देते हैं और कभी-कभी क्षयोपशम का भाव इतना प्रबल बन जाता है कि औदयिक भाव का संस्कार परास्त हो जाता है। कभी जीव का स्वरूप इतना बलवान बन जाता है कि कर्म-संस्कार परास्त हो जाते हैं और कभी कर्म-संस्कार इतना बलवान बन जाता है कि हमारा स्वभाव कुछ दब जाता है। संस्कृत साहित्य में कहा गया है-

हमारे जीवन में उपादान और निमित्त का बड़ा योगदान रहता है। इनमें उपादान बलवान होता है किन्तु कभी-कभी निमित्त भी अपना चमत्कार दिखा सकता है। इसलिए सामान्य साधक के लिए यही कल्याणकारी है कि वह अपने उपादान को ठीक बनाने की साधना करता रहे और निमित्तों से यथासंभव बचने का प्रयास करे।

यौवनं धनसंपत्तिः प्रभुत्वमविवेकता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्।।

चार चीजें बतायी गयी हैं – यौवन, धन-सम्पत्ति, सत्ता और अविवेक। श्लोककार ने कहा कि इनमें से एक-एक चीज भी विकृत करने वाली है, वहाँ यदि चारों का योग हो जाये तो फिर कहना ही क्या? किन्तु मेरा मंतव्य है कि यौवन भी विकृत नहीं करता, धन-सम्पत्ति भी विकृत नहीं करती और सत्ता भी विकृत नहीं करती, अगर एक अविवेक साथ में न रहे। यौवन, धन और सत्ता की अवस्था में उन्माद आ सकता है। परन्तु साथ में विवेक हो, संयम हो तो उन्माद को शान्त किया जा सकता है और विवेक युक्त यौवन आदि भी बड़ा काम का होता है।

हमारे जीवन में उपादान और निमित्त का बड़ा योगदान रहता है। इनमें उपादान बलवान होता है किन्तु कभी-कभी निमित्त भी अपना चमत्कार दिखा सकता है। इसलिए सामान्य साधक के लिए यही कल्याणकारी है कि वह अपने उपादान को ठीक बनाने की साधना करता रहे और निमित्तों से यथासंभव बचने का प्रयास करे। हमारे पूर्वाचार्यों ने, मनीषियों ने साधु संस्था के लिए कुछ नियम बनाये। उनमें से अनेक नियम तो मात्र निमित्तों से बचने के लिए हैं। उदाहरण के लिए जैसे साधु संस्था के लिए एक नियम बनाया गया कि अकेला साधु अकेली महिला से बात न करे। हालाँकि एक महान साधक चाहे एकान्त में महिला से बात करे, कौन-सी दिक्कत है। परन्तु मनीषियों ने सोचा, सबकी साधना, सबका उपादान इतना मजबूत नहीं होता। इसलिए यह नियम बनाया गया। ऐसे कुछ नियम साधक को पतन से बचाने वाले होते हैं। इसलिए साधक संयम की साधना करे। वह निमित्तों से यथासंभव बचने का और उपादान को ठीक रखने का अभ्यास करे।

आर्षवाणी में बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न किया गया कि संयम से क्या प्राप्त होता है? तात्विक भाषा में कहा गया कि ज्यों-ज्यों व्रत, अप्रमाद आदि की साधना बढ़ती है, त्यों-त्यों आश्रव का निरोध होता है, कर्म आगमन का पथ अवरुद्ध होता है। संयम एक ऐसा तत्त्व है जो आन्तरिक समस्याओं का समाधान है तो बाह्य समस्याओं का भी समाधान है। इसलिए हम संयम की साधना करें, यह हमारे लिए श्रेयस्कर है। ■■■

लघुकथा

सवाल का जवाब

■ गोविन्द भारद्वाज - अजमेर ■

स्टेशन से बाहर खड़े ऑटो रिक्शा, हाथ रिक्शा और ई-रिक्शा वाले चिल्ला रहे थे - 'कहाँ चलना है बाबूजी...'। मैं सूटकेस लेकर भीड़ से बाहर निकला। अचानक मेरी नजर एक लड़की पर पड़ी। वह ई-रिक्शा लेकर चुपचाप खड़ी थी। मैंने पूछा, "शास्त्रीनगर चलोगी?" "क्यों नहीं बाबूजी।" उसने जवाब दिया। मैंने पूछा,"किराया?" "सिर्फ तीस रुपये।" मैं रिक्शे में बैठ गया। उसने सरपट रिक्शा दौड़ा दी। "बुरा न मानो तो एक बात पूछूं?" मैंने हिम्मत करके कहा। "पूछो बाबूजी...इसमें बुरा मानने वाली क्या बात है!" वह बोली।

"तुम इस छोटी-सी उम्र में ई-रिक्शा क्यों चलाने लगी?"

"परिवार के लिए।"

"घर में और कोई नहीं है?"

"सब हैं, छोटे बहन-भाई और माँ।"

"और पिताजी...?"

"वे नहीं रहे..छः महीने पहले ही..।"

"तो तुम और कोई काम कर लेती..रिक्शा ही क्यों चलाने का निर्णय लिया?" मैंने उसकी बात काटते हुए पूछा। "लीजिए बाबूजी... शास्त्रीनगर आ गया।" उसने रिक्शा रोकते हुए कहा। मैंने किराया देते हुए पूछा,"मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया तुमने अभी तक?" "बाबूजी, मेरे पिताजी यही ई रिक्शा चलाते थे..।"

"तो क्या हुआ..काम बदल भी तो सकती थी।" मैंने फिर पूछा।

इस पर लम्बी साँस लेते हुए उसने मुझसे ही पूछा, "अगर मेरे पिताजी सरकारी नौकरी करते तो क्या होता..?" "वेरी सिम्पल...तुम्हें उनकी जगह सरकारी नौकरी मिल जाती..।" मैंने बड़े विश्वास के साथ कहा। यह सुनकर वह बड़े जोर से हँसी। "क्यों मैंने कुछ गलत कह दिया?" मैंने हकलाते हुए पूछा। "बाबूजी, सरकारी नौकरी भी तो पिताजी की जगह ही मिलती...लेकिन वे रिक्शा चलाते थे, इसलिए उनकी जगह मुझे रिक्शा मिल गया।" इतना कहकर वह चली गयी। मैं निरुत्तर-सा खड़ा रह गया। मैं भी अपने पिताजी की जगह सरकारी नौकरी में लगा था।

■ मुनि सुखलाल ■

करुणा का दीप जलाएं

सामाजिक जीवन में मनुष्य एक-दूसरे के साथ बंधा हुआ है। वह यदि दूसरे पर करुणा करता है तो स्वयं अपने पर ही करुणा करता है। यदि वह करुणा करता है तो करुणा उस पर लौटकर आती है। यदि वह गुस्सा करता है तो उस पर गुस्सा लौटकर आता है। इसीलिए यह उपकार नहीं, अपितु अपना कर्त्तव्य है।

यों तो हर एक प्राणी जीता है, पर मनुष्य के जीवन की एक विशेषता है। वह विशेषता है करुणा भाव। यद्यपि कभी-कभी पशुओं में भी करुणा के उत्कृष्ट उदाहरण देखने को मिलते हैं, पर वे अपवादस्वरूप हैं। आदमी में करुणा का होना जरूरी है। यदि उसमें करुणा नहीं है तो उसमें इंसानियत की अपेक्षा पशुत्व का विकास ही अधिक है।

एक पशु सबसे पहले अपना पेट भरना चाहेगा। यदि उसके सामने चारा रखा जाये तो भूख होने पर वह बिना कुछ सोचे-विचारे चारे पर टूट पड़ेगा। उसके सामने भले ही उसकी संतान भूखी खड़ी हो, लेकिन पशु उसकी ओर ध्यान नहीं दे सकता। वह तो सबसे पहले अपना ही पेट भरेगा। जब तक अपना पेट नहीं भरेगा, तब तक वह खाता ही जाएगा।

वहीं मनुष्य में यह स्थिति नहीं है। मनुष्य अपना पेट तो भरता है, पर उसके साथ-साथ वह अपने परिवार, समाज और राष्ट्र को भी देखता है। मनुष्यता के उच्चतम विकास की स्थिति में तो स्थूल प्राणी ही नहीं, अपितु सूक्ष्म प्राणी भी उसकी करुणा के पात्र बन जाते हैं। हालाँकि ऐसी स्थिति सब लोगों को नहीं प्राप्त हो सकती। यह तो उन्हीं को प्राप्त हो सकती है जो जीवन-मुक्त बन जाते हैं। जो मनुष्य जीवन-मुक्त नहीं बनते हैं, उनके मन में भी परिवार, समाज और राष्ट्र के प्रति करुणा कमोवेश मात्रा में रहती ही है। करुणा का यह विकास दूसरे के भले के लिए नहीं है, अपितु स्वयं अपने ही भले के लिए है।

सामाजिक जीवन में मनुष्य एक-दूसरे के साथ बंधा हुआ है। वह यदि दूसरे पर करुणा करता है तो स्वयं अपने पर ही करुणा करता है। उसकी करुणा उस पर स्वयं पर ही लौटकर आती है। यदि वह गुस्सा करता है तो उस पर गुस्सा लौटकर आता है। इसीलिए यह उपकार नहीं, अपितु अपना कर्त्तव्य है।

ऊर्ध्वमुखी चिंतन

जब-जब मनुष्य की इस करुणा भावना में कमी आती है तो कोई विशिष्ट पुरुष उसकी वृत्तियों को जगाने का प्रयास करते हैं। वे उसे सही मार्ग दिखाकर उस पर चलने का आग्रह करते हैं। अणुव्रत मनुष्य की इसी ऊर्ध्वगामी चेतना के विकास का एक प्रयास है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब भारत में स्वार्थ का भाव बढ़ने लगा, आदमी अपने स्वार्थ के लिए दूसरों की ओर से आँखें बंद करने लगा तो आचार्य तुलसी ने देश को बताया कि आदमी अकेला नहीं है, वह पशु नहीं है। उसके साथ उसका परिवार तो

किसी प्रयत्न का मूल्य उसकी व्यापकता में नहीं, अपितु गुणवत्ता में ही है। अणुव्रत ने इसी को अपना लक्ष्य बनाया। यह नहीं कहा जा सकता कि अणुव्रत से बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया, पर अणुव्रत के प्रयत्न की दिशा शुभ थी। वह लगातार राष्ट्रपति भवन से लेकर गरीब की झोपड़ी तक अपनी आवाज पहुँचाता रहा है।

जुड़ा हुआ है ही, पर समाज और देश को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। पर-दुःख कातरता की इस भावना ने ही स्वतंत्रता की कामना को जन्म दिया था।

भारत के बड़े-बड़े लोगों ने देश के कोटि-कोटि लोगों की दुर्दशा देखकर जी-जान से प्रयत्न कर भारत को स्वतंत्र करवाया था। हजारों-हजारों लोगों ने उसके लिए अपने प्राणों की भी आहुति दे दी थी, पर यह दुर्भाग्य की ही बात है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद करुणा का वह निर्मल स्रोत सूख गया। बड़े-बड़े लोग राष्ट्र और समाज की ओर से आँखें मूँदकर अपने परिवार की हित-चिंता में निमग्न हो गये। उनका लक्ष्य यही रह गया कि हम तो आराम से जीएं ही, हमारी पीढ़ियां भी आराम से जीएं। भले ही उसके लिए कितने ही गलत काम क्यों न करने पड़ें। इसी भाव से राजनीति में भ्रष्टता आयी। इसी भाव से व्यापार में भ्रष्टता आयी और इसी भाव से हर एक क्षेत्र में भ्रष्टता व्याप गयी।

उस अवस्था में देश की मानवता को जगाने के लिए अणुव्रत आंदोलन ने एक नन्हा-सा प्रयत्न शुरू किया। वास्तव में किसी प्रयत्न का मूल्य उसकी व्यापकता में नहीं, अपितु गुणवत्ता में ही है। अणुव्रत ने इसी बात को अपना लक्ष्य बनाया। यह नहीं कहा जा सकता कि अणुव्रत से बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया, पर यह तो कहा ही जा सकता है कि अणुव्रत के प्रयत्न की दिशा शुभ थी। वह लगातार राष्ट्रपति भवन से लेकर गरीब की झोपड़ी तक अपनी आवाज पहुँचाता रहा है। लगभग 700 जीवनदानी साधु-संत तथा हजारों कार्यकर्ता इस संदेश को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। करुणा ही उन्हें प्रेरित कर रही है।

व्यापक कार्यक्रम

अणुव्रत किसी को यह नहीं कहता है कि वह अपना धंधा छोड़ दे। वह तो कहता है कि यदि आप राजनीति में हैं तो चुनाव के लिए भ्रष्ट तरीकों का उपयोग मत कीजिए, जनसेवा के नाम पर घर भरने की कोशिश मत कीजिए। यदि आप राजकर्मचारी हैं तो अपने कर्त्तव्यों का दुरुपयोग मत कीजिए। यदि आप मजदूर हैं तो दुर्व्यसनों में फँसकर अपनी शक्ति का अपव्यय मत कीजिए। यदि आप विद्यार्थी हैं तो गलत तरीकों से परीक्षा में उत्तीर्ण होने की कोशिश मत कीजिए। इस प्रकार अणुव्रत के पास हर एक वर्ग के लोगों के लिए एक आचार संहिता है जिसके आधार पर वह मनुष्य को अपनी मनुष्यता के प्रति सजग होने की प्रेरणा देता है।

हर क्षेत्र के लोगों में अणुव्रत का प्रवेश होता रहा है। व्यापारियों, विद्यार्थियों, राजकर्मचारियों, मजदूरों आदि में अणुव्रत का काम चल रहा है। वास्तव में यह काम किसी एक व्यक्ति का नहीं है, अपितु सभी का है। इसलिए करुणा की भावना से प्रेरित होकर सभी लोग इसमें भाग लें, यह अपेक्षित है। यह सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग है। ■■■

तुलसी उवाच

उचित नहीं यह उपेक्षावृत्ति

एक समय था, जब अपराधी को सामाजिक स्वीकृति नहीं थी। उस पर अंगुलि-निर्देश होता था। उसे दुराचारी, अत्याचारी, हिंसक और गुनहगार माना जाता था। समाज के उपेक्षापूर्ण और अनादरपूर्ण दृष्टिकोण से अपराध करने वाला भी शर्म महसूस करता था। उसे प्रतीत होता था कि वह किसी को मुँह दिखाने योग्य नहीं रहा है। वर्तमान की बदली हुई परिस्थितियों में पहला विकास हुआ है अंगुलि-निर्देश की कमी। व्यक्ति गलत आचरण कर रहा है तो मुझे क्या करना है। इस उपेक्षात्मक वृत्ति ने समाज का बहुत अहित किया है।

रोकटोक न होने से अपराधी को प्रश्रय दिया जा रहा है। अपराध का समाजीकरण या राजनीतिकरण हो रहा है। यह एक खतरनाक खेल है। इसमें सम्मिलित होने वाले किसी आत्मघाती दस्ते से कम नहीं हैं।

■ मुनि कोमल कुमार "उमरी" ■

विचार-क्रांति का दर्शन है अणुव्रत

मानवता के निर्माण में अणुव्रत के संस्कार बहुत आवश्यक हैं। भेद रेखा लक्ष्य को बांट देती है, किंतु अणुव्रत एक शाश्वत तत्त्व है जो भेद रेखाओं को परस्पर मिलाती है। नकारात्मक सोच में भी यदि हम अपने मन को पूर्णतया शांत रखेंगे तो देखेंगे कि इस नकारात्मक सोच ने हमें जीवन जीने की कला सिखायी है। व्यर्थ की भागदौड़ के बजाय संयमित रहना एवं सीमित साधनों में संतुष्ट रहना ही अणुव्रत है।

अणुव्रत विचार-क्रांति का दर्शन है। अणुव्रत के जरिये स्वयं का कल्याण करते हुए समग्र समाज में एक नयी ऊर्जा का संचार किया जा सकता है। व्यक्ति-व्यक्ति की उन्नति हो सकती है।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ प्रवचन में अनेक बार कहा करते थे, "पहले ज्ञान और फिर आचार।" अपना दृष्टिकोण बदलो, दुनिया बदल जाएगी। सकारात्मक सोच विपरीत परिस्थितियों में भी हमारा दृष्टिकोण बदलकर हमें शांत और सहज रख सकती है। नकारात्मक सोच के बीच एक पल भी यदि अपने मन की बात करने को मिल जाये तो वह अमृत की बूँदों के समान प्रतीत होती है। सकारात्मक सोच से ही इन बूँदों को सहेजा जा सकता है। सकारात्मक सोच शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए उत्प्रेरक का कार्य करती है। हालाँकि अनुकूल परिस्थितियों में सकारात्मक सोच रखना आसान है, परंतु विपरीत परिस्थितियों में सकारात्मक सोच रखना ही जीवन को नये रास्ते पर बांधना है और अणुव्रत यही सिखाता है।

मानवता के निर्माण में अणुव्रत के संस्कार बहुत आवश्यक हैं। भेद रेखा लक्ष्य को बांट देती है, किंतु अणुव्रत एक शाश्वत तत्त्व है जो भेद रेखाओं को परस्पर मिलाती है। नकारात्मक सोच में भी यदि हम अपने मन को पूर्णतया शांत रखेंगे तो देखेंगे कि इस नकारात्मक सोच ने हमें जीवन जीने की कला सिखायी है। व्यर्थ की भागदौड़ के बजाय संयमित रहना एवं सीमित साधनों में संतुष्ट रहना ही अणुव्रत है।

अणुव्रत परिवार में आपसी रिश्तों में मिठास भरकर एक-दूसरे की परवाह एवं सहयोग करना सिखाता है। अणुव्रत का मूल मंत्र है - संयम ही जीवन है। संयम के बिना आत्मानुशासन जीवंत नहीं बन सकता और आत्मानुशासन के बिना जीवन सही दिशा में अग्रसर नहीं हो सकता। ■■■

▪ गिरीश पंकज ▪

राष्ट्रबोध ही एकमात्र लक्ष्य हो

अपना राष्ट्र अपनी आत्मा का हिस्सा बना रहे। ऐसे संस्कार तभी आएंगे जब हम बच्चों के हृदय में बचपन से ही राष्ट्रबोध जगाएं। यह देश मेरा है। इसी के लिए जीना-मरना है। राष्ट्र की मैं संतान हूँ और इसके लिए मेरा कर्त्तव्य है। स्कूल में ऐसी शिक्षा मिले, घर में भी वैसा परिवेश मिले।

राष्ट्रबोध, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीयता, देशभक्ति, राष्ट्रीय अस्मिता ये ऐसे महान शब्द हैं, जिनको आत्मसात करके कोई भी राष्ट्र शिखर पर खड़ा रह सकता है। महान कवि गयाप्रसाद शुक्ल स्नेही की पंक्तियाँ हैं-

"जो भरा नहीं है भावों से,
जिसमें बहती रसधार नहीं।
वह जीव नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।"

गुलामी से मुक्ति की लम्बी लड़ाई हमने इन्हीं शब्दों को आत्मसात करके लड़ी थी और स्वतंत्रता के सूर्य का वरण किया, पर आज हमारी हालत किसी से छिपी नहीं है। अब धीरे-धीरे 'राष्ट्रबोध' कम हुआ है, या लगभग खत्म-सा हो गया है। यह गम्भीर चिंता की बात है।

जब देश से प्यार न होगा, अनुराग न होगा, स्नेह न होगा, तब हम राष्ट्रविरोधी बातें करके अपने को प्रगतिशील साबित करने की कोशिश करेंगे। जब तक हम अपने देश को अपना नहीं समझेंगे, इस मिट्टी से अपना गहरा नाता नहीं मानेंगे, तब तक देशप्रेम विकसित नहीं होगा। राष्ट्र के प्रति हमारा बोध तभी विकसित होगा, जब हम इस धरती को अपनी माँ समझेंगे। राष्ट्र से हमारा रिश्ता भौतिक न होकर भावनात्मक होना चाहिए। कहा गया है, 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।' स्वर्ग से सुंदर वो धरती है जिस पर हमने जन्म लिया है, इसलिए वह हमारी माँ भी है। हम लोगों ने तो जीवन दायिनी गंगा को भी माँ कहा। गाय को भी माता के गौरवमय पद पर प्रतिष्ठित किया क्योंकि उसका दूध पीकर हम बड़े होते हैं और आजीवन ही उसका दूध पीते रहते हैं। हमने प्रकृति से रिश्ता कायम किया, नदी-पर्वतों को पूजा। इसीलिए हम पूरी दुनिया में अलग राष्ट्र हैं, इसीलिए हम विश्वगुरु कहलाते रहे क्योंकि हमारी सोच सबसे अलग रही।

स्वामी विवेकानंद ने मद्रास में जो अपना अंतिम व्याख्यान दिया था, वह भारत के भविष्य को लेकर ही था। इसमें वे कहते हैं, ''यह जननी मातृभूमि ही मानो तुम्हारी आराध्या देवी बन जाये। इस आधी शताब्दी के लिए अपने मस्तिष्क से अन्यान्य देवी-देवताओं को हटाने में भी कुछ हानि नहीं है। अपना सारा ध्यान इसी एक ईश्वर पर लगाओ, देश को जगाओ, इसी में उस परब्रह्म परमात्मा को देखो।' क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल का बलिदान कौन भूल सकता है? उनके मन में अपनी मातृभूमि के लिए अद्भुत प्रेम था। उनकी अमर रचना है -

जब तक हम अपने देश को अपना नहीं समझेंगे, इस मिट्टी से अपना गहरा नाता नहीं मानेंगे, तब तक देशप्रेम विकसित नहीं होगा। राष्ट्र के प्रति हमारा बोध तभी विकसित होगा, जब हम इस धरती को अपनी माँ समझेंगे। राष्ट्र से हमारा रिश्ता भौतिक न होकर भावनात्मक होना चाहिए।

"ऐ मातृभूमि तेरी जय हो, सदा विजय हो
प्रत्येक भक्त तेरा, सुख-शांति-कांतिमय हो
अज्ञान की निशा में, दुःख से भरी दिशा में
संसार के हृदय में तेरी प्रभा उदय हो
तेरा प्रकोप सारे जग का महाप्रलय हो
तेरी प्रसन्नता ही आनंद का विषय हो।
वह भक्ति दे कि 'बिस्मिल' सुख में तुझे न भूले
वह शक्ति दे कि दुःख में कायर न यह हृदय हो।"

मगर मातृभूमि की जय का घोष लगाने वाली पीढ़ी अब नजर नहीं आती। अगर यही रफ्तार रही तो वह दिन दूर नहीं जब देश संकट में पड़ सकता है। घर को आग घर के चिरागों से ही लगती रही है। अब ऐसे नालायक चिराग बढ़ रहे हैं, इनको फौरन बुझाना पड़ेगा और ऐसे चिरागों को प्रोत्साहित करना होगा जो राष्ट्र में व्याप्त हर तरह के तिमिरों को पीकर प्रकाश की गंगा प्रवाहित कर सकें।

दरअसल राष्ट्र को लेकर हमारे देश में वह चेतना मुखरित ही न हो सकी, जो होनी चाहिए। आजादी के ठीक बाद हमारी पाठ्य-पुस्तकों में देशभक्ति के पाठ शामिल रहते थे। देश के लिए मर-मिटने वालों की सत्य कथाएं हुआ करती थीं। हमारे समग्र अध्ययन का केंद्र ही राष्ट्रभक्ति थी, पर जैसे-जैसे हम 'ग्लोबल' बनते या बनाये जाते गये, वैसे-वैसे देश और देशभक्ति के पाठ लुप्त होते चले गये। ऐसे में बच्चों के मन में राष्ट्रबोध जगे तो जगे कैसे? जब बच्चा बचपन से ही राष्ट्र के बारे में सोचेगा, समझेगा, तभी तो उसके अंतस में राष्ट्र के प्रति अनुराग कायम रहेगा। अपनी अस्मिता को तिलांजलि देकर हमने अपनी पीढ़ी को जड़ से काट दिया। उनके दिमाग में साम्प्रदायिकता भर दी और इस सनातन राष्ट्र को हाल ही में जन्मे राष्ट्र की श्रेणी में रखकर व्यवहार करना शुरू कर दिया। तभी तो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त को लिखना पड़ा -

''हम कौन थे, क्या हो गये, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी।''

गुलामी के दौर में लोग देशभक्त हुआ करते थे, देश के लिए मर-मिटने पर आमादा रहते थे। हमारे शहीदों ने यही कहा था कि हम भले ही मर जाएं, मगर हर बार इसी देश में हमारा जन्म हो। महान देशभक्त क्रांतिकारी भगतसिंह के उस पत्र को हम याद करें जिसमें वे शुरुआत करते हैं 'वन्दे मातरम्' से और समापन करते हैं 'भारत माता की जय' से। आचार्य विनोबा भावे भी 'जय जगत' की बात करते थे। जगत की जय हो, पर वे कभी भी देश से विमुख होने की बात नहीं करते थे।

किसी भी राष्ट्र की ताकत उसके देशभक्त नागरिक ही होते हैं। अगर देशभक्तों ने बलिदान न किया होता तो क्या भारत स्वतंत्र हो सकता था? राष्ट्रबोध का भाव ही था जिसने चेतना जगायी। उस वक्त की युवा पीढ़ी ने अपने भविष्य को दाँव पर लगाकर देश को आजाद कराने का संकल्प लिया था। अनेक शहीद भी हुए, पर आज कहाँ गया वह राष्ट्रबोध?

माना कि समूची दुनिया हमारा घर है। हम कहीं भी जाकर काम कर सकते हैं, पर हम अपने देश को तो न भूलें। विदेश में रहकर हम देश के लिए क्या कर सकते हैं, इस पर निरंतर विचार करना चाहिए। भारत में चल रही किसी अच्छी सामाजिक गतिविधि में अपनी भागीदारी निभानी चाहिए। अपना राष्ट्र अपनी आत्मा का हिस्सा बना रहे। ऐसे संस्कार तभी आएंगे जब हम बच्चों के हृदय में बचपन से ही राष्ट्रबोध जगाएं। यह देश मेरा है। इसी के लिए जीना-मरना है। इसी की उन्नति के लिए मेरा जीवन है। राष्ट्र की मैं संतान हूँ और इसके लिए मेरा कर्त्तव्य है। स्कूल में ऐसी शिक्षा मिले, घर में भी वैसा परिवेश मिले। समाज में राष्ट्रवादी लोग वातावरण बनाएं, तब कहीं एक महान राष्ट्र का निर्माण हो सकेगा।

रायपुर निवासी लेखक साहित्य अकादेमी के पूर्व सदस्य तथा सम्प्रति छत्तीसगढ़ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अध्यक्ष हैं। विभिन्न विधाओं पर इनकी लगभग सौ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

कदमों के निशां

आचार्य तुलसी ने कहा था, अणुव्रत चरित्र निर्माण का आंदोलन है। अणुव्रत पुरस्कार की स्थापना के पीछे उद्देश्य है उन लोगों का आदर जो चरित्र निर्माण के लिए कृत संकल्प हैं।

अणुव्रत के आदर्शों के प्रति जिनके मन में गहरी निष्ठा है। ऐसी विभूतियों की प्रतिष्ठा से समाज में नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था बढ़ेगी।

आचार्य महाप्रज्ञ का कहना था, "सत्य की खोज करना बड़ी बात है और उससे भी बड़ी बात है सत्य को क्रियान्वित करना। अणुव्रत पुरस्कार सत्य को क्रियान्वित करने वालों को मिलता है। अतः मैं कह सकता हूँ कि यह सबसे बड़ा पुरस्कार है।"

आचार्य महाश्रमण कहते हैं, ''भारत के नागरिकों में नैतिकता के प्रति आस्था पुष्ट बने, अणुव्रत इसी दिशा में कार्यशील है। अणुव्रत पुरस्कार नैतिक मूल्यों के महत्व को प्रतिपादित करने वाला अभिक्रम है।''

वर्ष 1981 में अणुव्रत पुरस्कार की शुरुआत की गयी। तब से 28 विभूतियों को इस पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। अणुव्रत पुरस्कार के अंतर्गत प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिह्न और एक लाख इक्यावन हजार रुपये की राशि प्रदान की जाती है। अणुव्रत पुरस्कार प्राप्त करने वालों की जीवन गाथा से परिचित होना मानवीय मूल्यों से साक्षात करना है। आने वाली पीढ़ियां इनके जीवन से प्रेरणा लेकर स्वस्थ समाज की संरचना की दिशा में कदम बढ़ाएं, इसी उद्देश्य से अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित विशिष्ट व्यक्तियों का परिचय यहां क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित व्यक्तित्व

लालकृष्ण आडवाणी
समाज में नयी चेतना का किया सूत्रपात

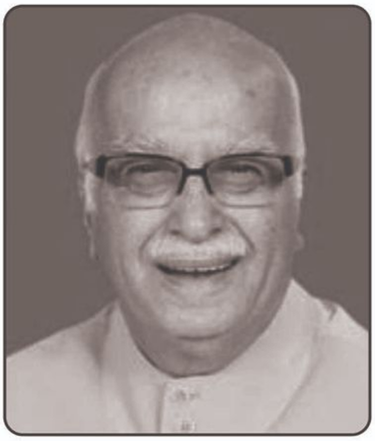

श्री लालकृष्ण आडवाणी का जन्म 8 नवम्बर 1927 को अविभाजित भारत के कराची शहर में हुआ था। आपकी माताजी का नाम श्रीमती ज्ञानी देवी और पिताजी का नाम श्री किशनचंद आडवाणी था। लालकृष्ण ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा सेंट पैट्रिक हाई स्कूल, कराची से पूरी की और फिर गवर्नमेंट कॉलेज हैदराबाद, सिंध में दाखिला लिया। आडवाणी ने बचपन से ही अनुशासन को जीवन का आधार बनाया।

देश के विभाजन के दौरान श्री लालकृष्ण आडवाणी का परिवार कराची से आकर बंबई में बस गया। आडवाणी ने बंबई विश्वविद्यालय के राजकीय विधि महाविद्यालय से कानून में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने सन् 1965 में कमला आडवाणी को अपनी अर्धांगिनी बनाया।

श्री आडवाणी सन् 1974 में भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष नियुक्त हुए। आपातकाल के पश्चात् सन् 1977 में प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई की जनता पार्टी सरकार में सूचना एवं प्रसारण मंत्री का दायित्व निभाया। सन् 1980 में भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष निर्वाचित हुए। आपने श्री अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में गृहमंत्री व उप प्रधानमंत्री पद के दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह किया।

"सतत जागरुकता एवं नैतिक निष्ठा से ही व्यक्ति अपने जीवन में विकास के पथ पर अग्रसर होता है। वह नैतिकता, प्रामाणिकता और चारित्रिक उच्चता की साधना के माध्यम से ही सफलता के उच्चतम सोपान पर पहुँच पाता है। छोटे-छोटे व्रतों के सतत अभ्यास से व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। समाज के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह करने के लिए आवश्यक है कि व्यक्ति अच्छा मनुष्य बने और अपने उत्तरदायित्व का ईमानदारी से पालन करे।" इन सिद्धांतों पर अमल करते हुए श्री आडवाणी ने अपना जीवन जीवंतता के साथ जीया एवं समाज में नयी चेतना का सूत्रपात किया। अपनी कुशाग्रता एवं रचनात्मकता से समाज को नये आयाम दिये और अपनी कर्मजा शक्ति से लोगों को नयी दिशा दिखायी।

आपकी सेवा भावना, विश्वसनीयता व कार्यकौशल की झलक आपके द्वारा किये गये कार्यों में भी झलकती है। एक अच्छे सांसद के रूप में श्री आडवाणी अपनी भूमिका के लिए सराहे गये और पुरस्कृत भी किये गये। 2015 में आपको भारत के दूसरे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

आचार्य श्री तुलसी व आचार्य श्री महाप्रज्ञ से आपका सतत संवाद व सम्पर्क रहा। उनसे आपने अपने जीवन में समय-समय पर प्रेरणा प्राप्त की। अणुव्रत के दर्शन से आप सदैव प्रभावित रहे। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में 5 नवम्बर 2014 को आयोजित कार्यक्रम में श्री लालकृष्ण आडवाणी को 'अणुव्रत पुरस्कार' प्रदान किया गया।

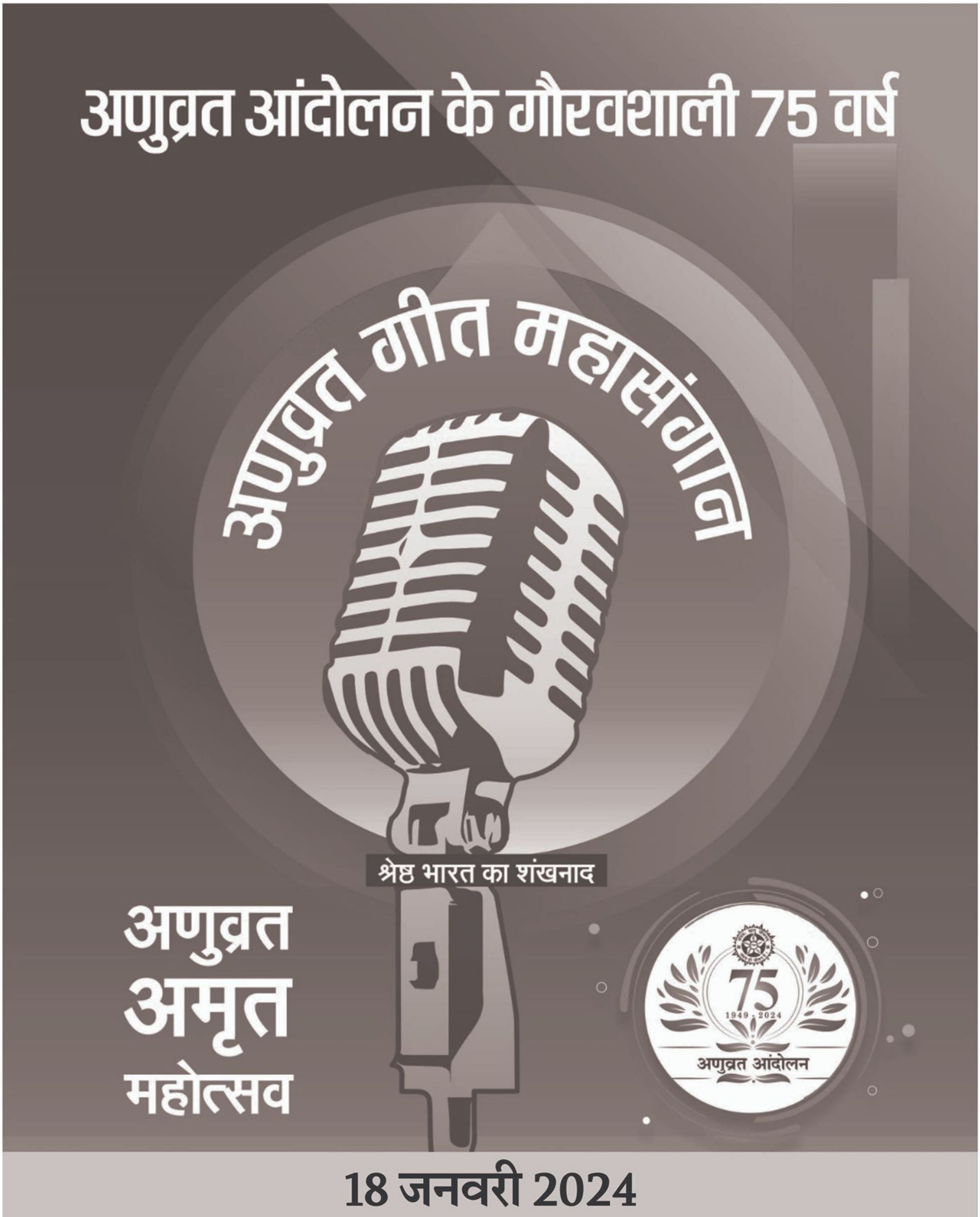
अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष
अणुव्रत गीत महासंगान
श्रेष्ठ भारत का शंखनाद
अणुव्रत
अमृत
महोत्सव
75
1949 - 2024
अणुव्रत आंदोलन
18 जनवरी 2024
एक दिन एक समय लाखों स्वर एक साथ
अणुविभा
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

■ संचय जैन ■

अणुव्रत गीत एक अनुशीलन

"अणुव्रत गीत" आचार्य तुलसी द्वारा रचित एक विशिष्ट गीत है। इस गीत में उन्होंने अणुव्रत के दर्शन को बहुत ही खूबसूरती के साथ पिरोया है। पिछले कई दशकों से यह गीत लाखों लोगों के जीवन का हिस्सा बना हुआ है। वे प्रतिदिन इसे गाते हैं और अणुव्रत-दर्शन को अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करते हैं।

आचार्य तुलसी एक महान जननायक थे। उनके प्रवचन जितने प्रभावी होते थे, उतने ही उनके लिखे और गाये गीत जनता के दिल को छूने वाले होते थे। उनके गीतों में क्रान्ति के बीज होते थे। सामाजिक चेतना को झकझोरने में इन गीतों की बड़ी भूमिका रही। जब वे गीत गाते थे, तो स्वयं उस गीत में डूब जाते थे और मंत्रमुग्ध श्रोता भी भाव प्रवाह में बहते चले जाते थे।

"अणुव्रत गीत" आचार्य तुलसी द्वारा रचित एक विशिष्ट गीत है। इस गीत में उन्होंने अणुव्रत के दर्शन को बहुत ही खूबसूरती के साथ पिरोया है। पिछले कई दशकों से यह गीत लाखों लोगों के जीवन का हिस्सा बना हुआ है। वे प्रतिदिन इसे गाते हैं और अणुव्रत-दर्शन को अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करते हैं।

किसी गीत को गाना तभी अर्थपूर्ण होता है जब उसे गाते हुए हम उसके भावों के साथ स्वयं को जोड़ सकें। शब्दों से आगे बढ़कर उनमें छिपे भावार्थ को आत्मसात कर सकें। अणुव्रत गीत में गजब की प्रभावशीलता है। इस गीत की प्रत्येक पंक्ति को उसके निहितार्थ में डूब कर प्रतिदिन गाया जाये, तो यह गीत एक प्रार्थना का रूप ले लेता है, जिसे अपना कर व्यक्ति जीवन में सकारात्मक परिवर्तन को घटित होते हुए देख सकता है।

अणुव्रत-दर्शन व्यक्ति की उदात्त चेतना के ऊर्ध्वारोहण का राजमार्ग है। स्वयं को पहचान कर स्व-कल्याण की इबारत लिखने का एक सटीक माध्यम है। आइए, अणुव्रत गीत में अभिव्यक्त भावना को इसकी पूर्णता में समझने का प्रयास करते हैं।

संयममय जीवन हो।।
नैतिकता की सुर-सरिता में जन-जन मन पावन हो।
संयममय जीवन हो।।

अणुव्रत का मानना है कि संयम ही जीवन है। यह अणुव्रत आन्दोलन का उद्घोष भी है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि असंयम हमें मृत्यु की ओर ले जाता है। असंयम समस्याओं का कारण है तो संयम समाधान है। जीवन की इसी सच्चाई से परिचित कराती है अणुव्रत गीत की पहली पंक्ति - संयममय जीवन हो। यदि हमारा जीवन संयम से परिपूर्ण बन जाये, यदि संयम हमारे स्वभाव का अभिन्न अंग बन जाये तो एक सुखी और शांतिपूर्ण जीवन हमें सहज ही प्राप्त हो सकेगा। हमें इस बात के लिए निरन्तर जागरूक रहने की जरूरत है कि हम संयम का उपयोग अपने दैनंदिन जीवन में कहां-कहां कर सकते हैं। दूसरी पंक्ति है - नैतिकता की सुर-सरिता में जन-जन मन पावन

हो। अस्तु, संयम और नैतिकता का बहुत करीबी सम्बन्ध है। जीवन में संयम है तो नैतिकता स्वतः सम्भव हो जाएगी। यदि संयम नहीं है तो हम नैतिकता की आशा नहीं कर सकते। असंयम अनैतिकता को जन्म देता है। इस अन्तर्सम्बन्ध को हम अपने आसपास, समाज में, व्यवसाय में, परिवार में... हर जगह बहुत ही स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। और, जब हम अपने जीवन में इसे देखना प्रारम्भ करेंगे, अनुभव करना प्रारम्भ करेंगे, तब अणुव्रत के मूल सूत्र को और संयम के महत्व को हम बखूबी समझ पाएंगे।

हम यह भी अनुभव करेंगे कि जिस व्यक्ति ने संयम और नैतिकता को अपने जीवन में अपनाया है, वह उन लोगों से अधिक सुखी है जिनके पास अपार दौलत व भौतिक सुविधाएं हैं लेकिन संयम और नैतिकता का नितांत अभाव है। आचार्य तुलसी ने इस अन्तर्सम्बन्ध के महत्व को समझाते हुए यह कामना की है कि हर इंसान का जीवन संयममय बने और कल-कल बहती नैतिकता की नदी में डुबकी लगाकर जन-जन का मन पवित्र बन जाये।

अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा
वर्ण, जाति या सम्प्रदाय से मुक्त धर्म की भाषा
छोटे-छोटे संकल्पों से मानस-परिवर्तन हो
संयममय जीवन हो।।

अणुव्रत गीत के प्रथम पद्य में आचार्य तुलसी ने कुछ शब्दों में ही अणुव्रत दर्शन की बहुत सुन्दर परिभाषा दी है। अणुव्रत क्या है? - अपने से अपना अनुशासन। व्यक्ति का यदि अपने आचार और विचार पर नियंत्रण है तो उसे कोई ताकत बुराई के रास्ते पर नहीं ले जा सकती। स्व-अनुशासन व्यक्ति के समक्ष आने वाले करणीय और अकरणीय के विरोधाभास को समाप्त कर उसे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की ताकत देता है।

यह एक विडम्बना है कि बचपन से ही अनुशासन की बात बड़े जोर-शोर से की जाती है। घर में और स्कूल में बच्चों को अनुशासन में रखने के लिए नये-नये तरीके अपनाये जाते हैं। लेकिन स्व-अनुशासन के अभाव में बच्चों को अनुशासित करने के ये प्रयास उल्टा प्रभाव डालते देखे गये हैं। अणुव्रत छोटे-छोटे संकल्पों के माध्यम से स्व-नियंत्रण की शक्ति हमें देता है और इसीलिए अणुव्रत मात्र एक दर्शन नहीं है, मात्र एक विचार अथवा सिद्धांत नहीं है बल्कि एक जीवनशैली है। अणुव्रत का महत्व तभी है जब व्यक्ति इसे अपने जीवन में अपनाये।

अणुव्रत जिस भाषा में बात करता है, वह भाषा किसी भी वर्ण, जाति, सम्प्रदाय आदि से मुक्त एक मानव-धर्म की भाषा है। किसी भी देश का नागरिक हो, किसी भी धर्म को मानने वाला अथवा किसी भी धर्म को न मानने वाला, किसी भी लिंग या समुदाय का व्यक्ति हो, अणुव्रत हर किसी को स्वीकार्य हो सकता है क्योंकि यह संकीर्णता में बंधा नहीं है, इसमें व्यापकता है, सार्वभौमिकता है। इसीलिए अणुव्रत में व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं से लेकर वैश्विक समस्याओं तक का समाधान निहित है।

अणुव्रत गीत में गजब की प्रभावशीलता है। इस गीत की प्रत्येक पंक्ति को उसके निहितार्थ में डूब कर प्रतिदिन गाया जाये, तो यह गीत एक प्रार्थना का रूप ले लेता है, जिसे अपना कर व्यक्ति जीवन में सकारात्मक परिवर्तन को घटित होते हुए देख सकता है।

अणुव्रत अर्थात् छोटे-छोटे संकल्प। ये संकल्प व्यक्ति स्वयं अपनी इच्छा से स्वीकार करता है और इसीलिए ये व्यक्ति के मानस को बदलने की बड़ी ताकत रखते हैं। आधुनिक शोधों से यह सिद्ध हुआ है कि व्यक्ति को जीवन में बदलाव लाना हो तो वह आदतों में छोटे-छोटे बदलाव से ही संभव होता है।

मैत्री-भाव हमारा सबसे प्रतिदिन बढ़ता जाये
समता, सह-अस्तित्व, समन्वय-नीति सफलता पाये
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित मात्र शुद्ध साधन हो
संयममय जीवन हो।।

अणुव्रत गीत के दूसरे पद्य में आचार्य तुलसी ने सामाजिक समरसता और प्रामाणिकता के विषय में अपनी बात कही है। व्यक्ति जहां अपने आचरण से, व्यवहार से, अपने स्वभाव से समाज को प्रभावित करता है, वहीं समाज की संरचना और स्वरूप से वह प्रभावित हुए बिना भी नहीं रह सकता। आदर्श व्यक्ति और आदर्श समाज एक-दूसरे के पूरक होते हैं। हमारा व्यवहार सबके साथ मैत्रीपूर्ण हो, यह सूत्र है एक शांतिमय व्यक्तित्व का और शांतिमय विश्व का। जन-जन में मैत्रीभाव बढ़े, इस हेतु आवश्यक है व्यक्ति समता, सह-अस्तित्व और समन्वय के सिद्धांतों को समझे व जीवन में अपनाये। इन सिद्धांतों को अपने जीवन की नीति बना ले।

यदि हमारा जीवन संयम से परिपूर्ण बन जाये, यदि संयम हमारे स्वभाव का अभिन्न अंग बन जाये तो एक सुखी और शांतिपूर्ण जीवन हमें सहज ही प्राप्त हो सकेगा। हमें इस बात के लिए निरन्तर जागरूक रहने की जरूरत है कि हम संयम का उपयोग अपने दैनंदिन जीवन में कहां-कहां कर सकते हैं।

समता को हम दो रूपों में समझ सकते हैं। पहला - समता भाव, हम हर परिस्थिति में सम रहें। सुख और दुःख, प्रशंसा और आलोचना, सफलता और विफलता जैसी विपरीत परिस्थितियों में भी हम संतुलित बने रहें। दूसरा - हम जाति, रंग आदि के आधार पर इंसान-इंसान के बीच भेद न करें, सब के साथ समान व्यवहार करें। समता की यह भावना सह-अस्तित्व की भावना को सम्पुष्ट करती है। सह-अस्तित्व की यह भावना इंसानों से आगे बढ़कर हमें प्रकृति का आदर करना भी सिखाती है तथा पर्यावरण संरक्षण और पारिस्थितिकी संतुलन में मददगार बनती है।

इस पद्य में आचार्य तुलसी ने शुद्ध साध्य के लिए शुद्ध साधन अर्थात् शुद्ध माध्यम की आवश्यकता को मुखरित किया है। कभी-कभी व्यक्ति एक पवित्र लक्ष्य को पाने के लिए अपवित्र तरीकों के उपयोग को भी उचित मान लेता है। यह सोच व्यक्तिगत और सामाजिक स्तर पर विकृतियों को जन्म देती है। इस तर्क के बहाने व्यक्ति अपने भ्रष्ट आचरण को अच्छे लक्ष्य के आवरण में छुपाने का प्रयास करता है। आचार्य तुलसी ने स्पष्ट रूप से कहा कि केवल शुद्ध साधन अर्थात् नैतिक तरीकों से ही पवित्र लक्ष्यों को हासिल करने का प्रयास करना चाहिए। व्यक्तिगत जीवन में यह सूत्र व्यक्ति को प्रामाणिक जीवन जीने की ओर अभिप्रेरित करता है और अनैतिक तरीके अपनाने से बचाता है।

विद्यार्थी या शिक्षक हो मजदूर और व्यापारी
नर हो नारी बने नीतिमय जीवनचर्या सारी
कथनी-करनी की समानता में गतिशील चरण हो
संयममय जीवन हो।।

अणुव्रत गीत के तीसरे पद्य में आचार्य तुलसी जन-जन से नैतिक जीवनचर्या अपनाने का आह्वान करते हैं। हर व्यक्ति, भले वह विद्यार्थी हो, शिक्षक हो, मजदूर हो, व्यापारी हो या अन्य किसी भी क्षेत्र से जुड़ा व्यक्ति हो, महिला हो या पुरुष हो, सभी संकल्पित हों कि वे कभी अनैतिक आचरण नहीं करेंगे। समाज में जब अधिसंख्य व्यक्ति ईमानदारी का जीवन जीते हैं तो बेईमानी का जीवन जीने वाले लोग हतोत्साहित होते हैं। उनके लिए अनैतिक आचरण के अवसर सीमित हो जाते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि धर्म, राजनीति, शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार, उद्योग, साहित्य, कला - हर क्षेत्र में नैतिक व्यक्तियों को सम्मान दिया जाये और अनैतिक व्यक्तियों को सम्मान देने से बचा जाये।

व्यक्ति यदि यह प्रयास करे कि उसकी कथनी और करनी में अन्तर न रहे, वह जो कहे, आचरण भी उसके अनुरूप हो तथा जो वह करे वही बोले, तो वह नैतिक आचरण की ओर सहज आगे बढ़ सकेगा। अणुव्रत को अपनाने वाले व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि वह कथनी-करनी की समानता की ओर निरंतर प्रयासरत रहे। जिस व्यक्ति की कथनी और करनी में अन्तर होता है, वह दूसरों की नजरों में तो गिरता ही है, स्वयं अपनी नजरों में भी कभी सम्मान नहीं पा सकता है। सबसे अधिक नकारात्मक असर होता है उसके अपने परिवारजनों और उसके बच्चों पर।

प्रभु बनकर के ही हम प्रभु की पूजा कर सकते हैं
प्रामाणिक बनकर ही संकट सागर तर सकते हैं
शौर्य-वीर्य-बलवती अहिंसा ही जीवन-दर्शन हो
संयममय जीवन हो।।

इस पद्य में आचार्य तुलसी बहुत ही मार्मिक संदेश देते हैं। प्रभु बनकर के ही हम प्रभु की पूजा कर सकते हैं - इस पंक्ति में आचार्य श्री कहते हैं कि प्रभु की पूजा करने के लिए हमें स्वयं प्रभु बनना पड़ेगा। अर्थात् स्वयं पवित्र और प्रामाणिक बनकर ही हम पूजा के योग्य बन सकते हैं। हम भले किसी को भी अपना भगवान मानें, प्रभु मानें, आराध्य मानें, यदि हमारे भीतर अनैतिकता है तो हमारी पूजा व्यर्थ सिद्ध होगी। प्रामाणिकता को अपना कर ही हम संकटों से भरे जीवन सागर को पार कर सकते हैं। तभी भगवान भी हमारी प्रार्थना को स्वीकार करेंगे। आचार्य तुलसी इस धारणा को अस्वीकार करते हैं कि व्यक्ति अपने जीवन में गलत आचरण करता रहे, लेकिन भगवान का नाम लेकर या धार्मिक क्रियाकाण्ड करके वह पाप से मुक्त हो सकता है।

इस पद्य में आचार्य तुलसी अहिंसा का परिचय शौर्य, वीर्य और बलवती अहिंसा के रूप में देते हैं। यह उस विचारधारा को करारा जवाब है जहां हिंसा को बहादुरी का पर्याय माना जाता है। हिंसक विचार और हिंसक प्रवृत्ति कभी जीवन का दर्शन नहीं हो सकते। ये जहां व्यक्ति के भीतर की शांति को नष्ट करते हैं, वहीं समाज और दुनिया की शांति को भी भंग करते हैं। आज दुनिया में जो तनाव है, अशांति है - परिवार में, धर्म, संप्रदाय और जातियों के बीच, राष्ट्रों के बीच - इनके मूल में हिंसा के बीज ही हैं। हमें यह समझना है कि हिंसा कायरता है और अहिंसा शौर्य, तभी हम शांति का जीवन जी सकेंगे। दुनिया के सभी देशों का साझा मंच संयुक्त राष्ट्र संघ भी इस यथार्थ को स्वीकार कर चुका है कि अहिंसा ही विश्व शांति का मूल आधार है।

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा
'तुलसी' अणुव्रत-सिंहनाद सारे जग में प्रसरेगा
मानवीय आचार-संहिता में अर्पित तन-मन हो
संयममय जीवन हो।।

अणुव्रत गीत का यह अन्तिम पद्य अणुव्रत दर्शन की इस अवधारणा को प्रतिबिम्बित करता है कि बदलाव की शुरुआत व्यक्ति को स्वयं से करनी होगी, तभी समाज, राष्ट्र और विश्व में

अणुव्रत गीत

रचनाकार : आचार्य तुलसी

संयममय जीवन हो।
नैतिकता की सुर-सरिता में जन-जन मन पावन हो।
संयममय जीवन हो।।

अपने से अपना अनुशासन, अणुव्रत की परिभाषा।
वर्ण, जाति या सम्प्रदाय से, मुक्त धर्म की भाषा।
छोटे-छोटे संकल्पों से मानस-परिवर्तन हो।
संयममय जीवन हो।।1।।

मैत्री-भाव हमारा सबसे, प्रतिदिन बढ़ता जाए।
समता, सह-अस्तित्व, समन्वय-नीति सफलता पाए।
शुद्ध साध्य के लिए नियोजित मात्र शुद्ध साधन हो ।
संयममय जीवन हो ।।2।।

विद्यार्थी या शिक्षक हो, मजदूर और व्यापारी।
नर हो नारी बने नीतिमय, जीवनचर्या सारी।
कथनी-करनी की समानता में गतिशील चरण हो ।
संयममय जीवन हो ।।3।।

प्रभु बनकर के ही हम, प्रभु की पूजा कर सकते हैं।
प्रामाणिक बनकर ही, संकट सागर तर सकते हैं।
शौर्य-वीर्य-बलवती अहिंसा ही जीवन-दर्शन हो।
संयममय जीवन हो ।।4।।

सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा।
'तुलसी' अणुव्रत-सिंहनाद, सारे जग में प्रसरेगा।
मानवीय आचार-संहिता में अर्पित तन-मन हो।
संयममय जीवन हो ।।5।।

इच्छित परिवर्तन घटित हो सकेगा। सबसे पहले व्यक्ति को स्वयं के भीतर झांकना होगा। समाधान वहीं मिलेगा, बाहर नहीं। जिन समस्याओं से मानव जाति रूबरू हो रही है, वे मूलतः मानवजनित समस्याएं हैं। व्यक्ति जो समस्या का मूल कारण है, वही समस्या का समाधान भी है। इसलिए व्यक्ति-सुधार अणुव्रत आन्दोलन का मुख्य ध्येय है। व्यवस्था में परिवर्तन व्यक्ति-सुधार में सहयोगी बन सकता है लेकिन व्यक्ति -सुधार के बिना कोई भी व्यवस्था स्थायी समाधान नहीं बन सकती।

आचार्य तुलसी इस पद्य में यह विश्वास भी व्यक्त करते हैं कि एक दिन अणुव्रत का सिंहनाद पूरे विश्व में अनुगूंजित होगा। आचार्य तुलसी ने लगभग 5 दशकों तक हजारों किलोमीटर की पदयात्राएँ कर हर जाति-धर्म के अनुयायियों तक अणुव्रत की बात पहुँचायी। राष्ट्रपति भवन से लेकर गरीब की झोपड़ी तक वे पहुँचे। लाखों-लाखों लोग उनकी बात से प्रभावित हुए और अपनी जीवन-यात्रा को सद्मार्ग की ओर मोड़ा। इसका एक लम्बा इतिहास है।

आचार्य तुलसी के सपने को साकार करने की दिशा में आज अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण संलग्न हैं। प्रत्येक अणुव्रत कार्यकर्ता का यह दायित्व है कि वह स्वयं के जीवन को अणुव्रतमय बनाते हुए पूर्ण समर्पण भाव से यह प्रयास करे कि जन-जन अणुव्रत की मानवीय आचार संहिता के प्रति तन और मन से समर्पित हो। आचार्य तुलसी चाहते थे कि हर व्यक्ति का जीवन संयममय हो। हमें इस दिशा में निरंतर आगे बढ़ते जाना है। ■■■

डॉ. लोकेन्द्र सिंह कोट

सहिष्णुता : आज की महती आवश्यकता

उच्च स्तर पर सहिष्णुता यानी आपसी सौहार्द रहेगा, तभी निचले स्तर पर भी सहिष्णुता बनी रहेगी। विचारों की कट्टरता और आपसी वैमनस्यता ने निचले स्तर तक सहिष्णुता को खंडित किया है। दूसरों से सहिष्णुता का आह्वान करने से पूर्व यह देखना आवश्यक है कि क्या स्वयं के पास वही सहिष्णुता है।

सहिष्णुता का अर्थ है दूसरों की राय और विश्वासों के प्रति सम्मान, जो स्वयं की राय और विश्वास से भिन्न हो सकते हैं। यह बिना किसी शत्रुता या पूर्वाग्रह के दूसरों की अलग-अलग पृष्ठभूमि की सराहना है। सहिष्णुता मौलिक स्वतंत्रता और लोगों द्वारा प्राप्त सार्वभौमिक मानवाधिकारों की नींव है। एक वृक्ष के लिए जड़ या एक मकान के लिए नींव की जितनी आवश्यकता होती है, उतना ही महत्व सहिष्णुता का प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में है। समाज की नींव भी सहिष्णुता की जड़ों पर ही टिकी होती है और ऐसे ही आधारों पर टिकी होती है व्यक्तिगत और सामाजिक समरसता।

लोकतंत्र का भी आधार सहिष्णुता ही है। जहाँ प्रत्येक विचारधारा का सम्मान और सुनने का विवेक नहीं होता है, वहाँ अराजकता लाजिमी है। आज लोकतंत्र को देखें तो यह ऐसी सीढ़ी पर खड़ा है, जहाँ कोई किसी की नहीं सुनता है। हर एक की 'अपनी ढपली अपना राग' वाली स्थिति है। प्रत्येक दल की अपनी विचारधारा होती है और लोकतंत्र में जनता उसी के आधार पर जनप्रतिनिधि चुनती है। जनता अपना काम कर देती है, परंतु यह जनप्रतिनिधियों के ऊपर निर्भर करता है कि वे एक-दूसरे की विचारधारा का सम्मान कर आगे बढ़ें। लेकिन अक्सर यह देखा जाता है कि सत्ता की अंधी दौड़ में वे एक-दूसरे की विचारधारा तो दूर, एक-दूसरे का सम्मान भी भूलते जा रहे हैं।

उच्च स्तर पर सहिष्णुता यानी आपसी सौहार्द रहेगा, तभी निचले स्तर पर भी सहिष्णुता बनी रहेगी। विचारों की कट्टरता और आपसी वैमनस्यता ने निचले स्तर तक सहिष्णुता को खंडित किया है, इसके आधार को छिन्न-भिन्न किया है। जब नींव ही दगा दे जाये तो फिर ऊँचे महलों के ख्वाब अधूरे ही रहते हैं। दूसरों से सहिष्णुता का आह्वान करने से पूर्व यह देखना आवश्यक है कि क्या स्वयं के पास वही सहिष्णुता है।

एक-दूसरे के प्रति 'हेट लेंग्वेज' का उपयोग, किसी भी बात पर तैश में आ जाना और स्वार्थवश एक विचारधारा को छोड़कर दूसरी विचारधारा में बगैर शर्म के प्रवेश कर जाना और लोगों की भावनाओं के साथ खेलना ही तो आजकल की राजनीति सिखा रही है। फिर सहिष्णुता के मायने समझना और दूसरों को समझाना बेमानी-सा ही लगता है।

किसी भी राजनीतिक दल में आज सहिष्णुता नहीं बची है तो फिर दूसरों को असहिष्णु कहने का अधिकार भी नहीं है, जबकि सबसे ज्यादा इस शब्द का इस्तेमाल राजनीतिक दल ही करते हैं।

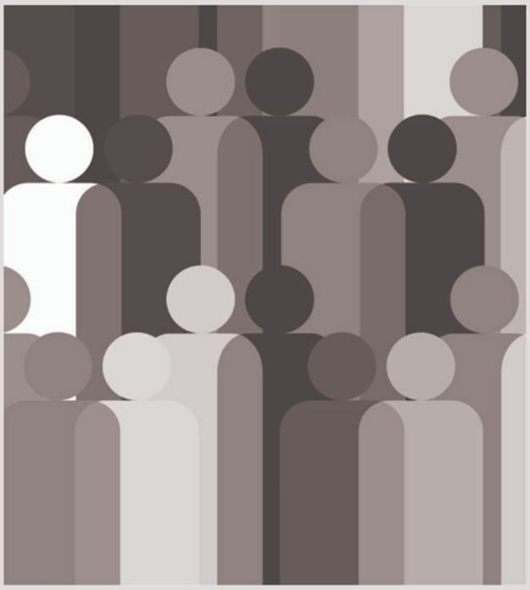

सहिष्णुता को अक्सर तटस्थता और संवादहीनता में बाँधा जाता है लेकिन यह भी एक विकृति है कि एक बहुत बड़ा वर्ग सामान्यतः इन्हीं दो भावों में संलिप्त रहता है। इससे भी सहिष्णुता को स्थान नहीं मिल पा रहा है। चुप रहकर या तटस्थ रहकर हम समस्याओं से भाग नहीं सकते।

लोकतंत्र में विरोध भी इसलिए होता है क्योंकि एक तो विरोध करना ही धर्म हो गया है। दूसरा, सामने वाला जो भी कहे, उसका विरोध ही लोकतंत्र हो गया है। ऐसे में सहिष्णुता सिर्फ कागजी होती है और ऐसा लोकतंत्र दिशा नहीं दिखाएगा, दिशाहीन ही होगा। इस दिशाहीनता का परिणाम आम जनता को ही भोगना होता है। विविधताओं के चलते अलग-अलग प्रकार की सहिष्णुता ही समाज और देश को बचा सकती है।

सहिष्णुता को अक्सर तटस्थता और संवादहीनता में बाँधा जाता है लेकिन यह भी एक विकृति है कि एक बहुत बड़ा वर्ग सामान्यतः इन्हीं दो भावों में संलिप्त रहता है। इससे भी सहिष्णुता को स्थान नहीं मिल पा रहा है। चुप रहकर या तटस्थ रहकर हम समस्याओं से भाग नहीं सकते। हमें आगे बढ़कर अपनी हिस्सेदारी निभानी होगी, तभी सहिष्णुता सार्थक होकर हमारे जीवन का हिस्सा बन पाएगी। सहिष्णुता के सहारे ही हम जीवन में श्रेष्ठ और न्यायोचित विकास की ओर बढ़ सकते हैं।

बड़नगर निवासी लेखक शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय, रतलाम में अध्यापन के साथ ही साहित्य सृजन में संलग्न हैं। इनकी कई कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।

मुझे बताओ मित्र?

डॉ. कैलाश सुमन - मुरैना

भाग्य भरोसे पीढ़ी अपने सुख की करे तलाश।
मुझे बताओ मित्र? फिर मैं कैसे कहूँ 'विकास'।।

जहाँ आज भी लाज ढक रहे,पत्तों से वनवासी।
जंगल ही जिनका होता है,मथुरा, काबा, काशी।।
जहाँ भूख में अब भी खाते वे जंगल का घास।
मुझे बताओ मित्र? फिर मैं कैसे कहूँ 'विकास'।।

जहाँ भूख से व्याकुल दिखती, जनता की लाचारी।
जहाँ सियारों की करते हों, नाहर रायशुमारी।।
जहाँ मूढ़ का हुक्का भरती प्रज्ञा बनकर दास।
मुझे बताओ मित्र? फिर मैं कैसे कहूँ 'विकास'।।

शूली पर हिंदी को टाँगा, अंग्रेजी मन भाई।
दफना दिये सवैया पौना, अद्धा पौआ ढाई।।
घुट-घुटकर मर रहे जहाँ पर श्लेष यमक अनुप्रास।
मुझे बताओ मित्र? फिर मैं कैसे कहूँ 'विकास'।।

पीर जमी है दरवाजे पर, सुख ने किया पलायन।
जहाँ सुदामा के घर करती, भूख हर समय गायन।।
जहाँ आज भी ओस चाटकर युवा बुझाएं प्यास।
मुझे बताओ मित्र? फिर मैं कैसे कहूँ 'विकास'।।

H. M. DESARDA

An Alternative Lifestyle for Nonviolent World Order

The vicious grip of greed, and profit motive have trampled basic moral and ethical considerations. Indeed, it has turned society into a monstrous mall, where the scenario of 'shop till you drop' rules the roost. The supra consumer society, propelled by automation, automobile and high-tech, robotics etc. is telling heavily upon human health, happiness and harmony with nature.

The increase in global consumption in recent decades is unprecedented in human history. The multi-fold increase, geographically as well as across the income strata, is most skewed. Indeed, there is a new breed of consumerist culture as reflected in automation, gadgetry and all that goes by the name of modernity, progress and development. This led to tremendous throughput of material and energy resources. The pattern of urbanisation and industrialisation pursued in the West and which the ruling elite in the Third World are aping is highly resource-squandering.

Both in terms of source as well as sink the limits are over-stepped. In view of its adverse impact on and implications for human health and happiness this trend is not at all desirable. Not only has it alienated human beings from Nature but it has also led to a deep divide between fellow human beings and to discord between different groups, communities and societies. The process of mass production is such that it has destroyed the sense of creativity and community. All in all, there is excessive over-use of resources and tremendous waste.

The arrogance to control and conquer Nature for trivial creature comforts and senseless consumerism has done great harm to the web of life and link between all living creatures. Indisputably, the misapplication and misuse of science and technology is really a serious issue.

The growth-mania and craze for unbridled consumption has threatened the security of the planet and people. The ecological toll of the undifferentiated and undirected growth has become most burdensome. The rate at which the

The arrogance to control and conquer nature for trivial creature comforts and senseless consumerism has done great harm to the web of life and link between all living creatures. Indisputably, the misapplication and misuse of science and technology is really a serious issue.

resources are declining and ecological degradation is taking place is most alarming. Availability not only of the non-renewable resources - like minerals and fossil-fuels - but even the renewable resources are depleting both in quality and quantity. Indeed, the way in which the precious life-support system is jeopardised has compelled all thinking people to reflect on the resource-squandering lifestyles adopted in the 'developed' industrial societies and by the elite in newly industrialising or developing countries. In sum, it is not at all equitable and sustainable.

The root cause of the present ecological threat is the path and pattern of industrialisation and dominant model of development that is pursued as the desirable development ideology the world over. The emphasis on globalisation has abated and accentuated this mad race for growth.

The visionaries, philosophers, and saints all over the world have warned us about the dangers of excessive obsession with materialism which harms nature and is antithetical to the welfare of a large majority of human beings. Mahatma Gandhi foresaw this crisis and warned the world in his seminal essay 'Hind Swaraj' (Indian Home Rule) in 1909, when the world was under the euphoria of technological advent. It was the most apt and accurate critique of the industrial society, which was on anvil as a dominant development ideology then. In unequivocal terms he called it Satanic Civilization. In the past century the world has witnessed the manifestation of Satan. The creed and greed of consumerism has pushed the world to the brink of disaster. 'The Limits to Growth' proposition which was debunked as a doomsday forecast is now reluctantly accepted as a reality. Gandhi was neither a professional economist nor ecologist but he had the insight to see the crisis. He pleaded for reducing the wants voluntarily. In this new millennium his proposition – 'The Earth has enough for everyone's needs but not for anybody's greed' should be the guiding motto to usher in a sustainable, humane and enlightened global social order.

The current growth trajectory and the treadmill of production squarely depend on the market, particularly the consumers. So long as there is demand, albeit artificially propelled by all kinds of advertisement, we cannot bring about a decisive change in this. In fact, it is not a case of consumer choice but a choice-paralysis! The cardinal principle of consumer sovereignty is ruthlessly flouted by the powerful industrial and business lobby. The vicious grip of greed, and profit motive have trampled basic moral and ethical considerations. Indeed, it has turned society into a monstrous mall, where the scenario of 'shop till you drop' rules the roost. The supra consumer society, propelled by automation, automobile and high-tech, robotics etc. is telling heavily upon human health, happiness and harmony with nature.

It is very gratifying that people in the developed industrial countries are fast realising the cost and consequences of consumerist trap and striving to adopt simple lifestyles. In the transition to sustainable development the place and importance of industrial transformation is most crucial and strategic. The consumers can and should play a pivotal role in this.

In fact, it is high time to launch a global consumer movement as a countervailing movement to promote equitable and sustainable development. In this the life and message of Gandhi can show us the pathway both as a practical guide and philosophy of greater common good. The moral is : Let us live simply so that others may simply live!

The author is Professor of Economics and former Member, State Planning Board, Maharashtra State Government. He is an exponent of Gandhian thoughts.

प्रेरक प्रसंग

गौरवं प्राप्यते दानात्

एक बार गुरु गोरखनाथ ने सोचा कि उन्हें साधना के द्वारा जो फल प्राप्त हुआ है, क्यों न उसे किसी योग्य व्यक्ति को दान में दे दिया जाये। जब वे वाराणसी पहुँचे, तो उन्हें एक संन्यासी दिखायी दिया, जो अपने दंड को गंगा में प्रवाहित कर रहा था। गोरखनाथ ने उससे कहा, "महात्मन्, मैं आप जैसे त्यागी पुरुष की ही तलाश कर रहा था। मैंने अपनी साधना के द्वारा जो सिद्धियाँ प्राप्त की हैं, वे मुझे अपने पथ से विमुख न करें, इसलिए मेरी इच्छा है कि मैं उन्हें आपको अर्पित करूँ। कृपया मेरी इस भेंट को स्वीकार करें।"

संन्यासी ने अपनी अंजलि सामने की और कहा, "मैं आपकी भेंट स्वीकार कर रहा हूँ।" और फिर उन्होंने अंजलि को नदी के प्रवाह में झोंक दिया। यह देख गोरखनाथ गद्गद होकर बोले, "महात्मन! आप सचमुच महान हैं। जो दान में प्राप्त अलभ्य वस्तु को भी जल में अर्पण करे, उससे बढ़कर त्यागी और गौरवशाली कौन हो सकता है?"

क्या सीखा हमने?

सुकीर्ति भटनागर - पटियाला

मस्त पवन से क्या सीखा है? क्या सीखा फूलों से?
दूर क्षितिज से क्या सीखा है? क्या सीखा कूलों से?

बादल से क्या सीखा हमने? क्या सीखा पानी से?
धरती से ना सीखा कुछ भी, ना संतों की वाणी से।।

रैन-दिवस नित ही समझाते, जन्म-मरण का भेद।
पर कब माना परिवर्तन को, रहा घिरा निर्वेद।।

सूरज, चाँद, सितारे सारे, ज्योति कलश छलकाते।
आते-जाते पल चुपके से, कितना कुछ कह जाते।।

पर क्या सीखा उनसे हमने? क्या गुण है अपनाया?
मन की घोर कलुषिता कारण, अंधकार ही पाया।।

क्या सीखा जीवों से हमने? उनको सदा सताया।
वनस्पति, पेड़ों को हमने, कष्ट सदा पहुँचाया।।

त्याग, अहिंसा, समता सारी, कैसे कहो भुला दी।
कुविचारों की खोल पिटारी, वसुधा पर फैला दी।।

पुष्प बेल में काँटे ढूंढ़े, मानस जलधि सुनामी।
धरती का अंतस ऊसर है, समयचक्र अधोगामी।।

दिशा-दिशा में इस सृष्टि के, छिपा तत्त्व जीवन का।
शुभ आशीष झरे कण-कण से, नेह सूत्र बंधन का।।

पर हमने तो अहंकारवश, निज पहचान भुला दी।
क्या हैं, क्या होना था हमको, यही बात बिसरा दी।।

स्नेह का बंधन

■ रंगनाथ द्विवेदी ■

"यह सारी हड़बड़ाहट, बेकरारी और उफनती हुई खुशी मेरी उस राखी के चार साल के इंतजार का है जिसे मैं अपने भैया की कलाई पर बांध नहीं पायी। सच! जब आज मेरे भैया मुझे अपने कलेजे से लगाएंगे तो मुझे पिता का वह वात्सल्य भी मिल जाएगा जो पापा और मम्मी के गुजर जाने के बाद भैया ने दिया।"

सुजाता आज जबसे सोकर उठी थी, तभी से बहुत खुश थी। ...और होती भी क्यों नहीं, आखिर आज पूरे चार साल बाद वह अपने भैया देव की कलाई पर राखी बांधने वाली थी। इसी खुशी में वह घर के सारे काम जल्दी-जल्दी निपटा रही थी। उसकी व्यस्तता देखकर उसके पति आकाश ने छेड़ते हुए कहा, "आज तो मेरी डार्लिंग के पैर ही जमीन पर नहीं पड़ रहे हैं, इतनी बेकरारी तो तुम्हारे अंदर कभी मैंने अपने लिए भी नहीं देखी...देखता भी कैसे? कहाँ भाई, कहाँ मैं?"

यह सुनकर सुजाता का गला भर आया और वह रुआंसी हो गयी। खुद को थोड़ी देर तक संयत कर लेने के बाद अपने पति से बोली, "नहीं जी, ऐसी कोई बात नहीं है। हर रिश्ते का अपना एक प्यार होता है और कोई भी औरत उस प्यार को अपनी आखिरी सांस तक जीती है। आप तो जानते ही हैं कि मेरा भाई एक फौजी है। वह देश के अनगिनत भाइयों और उनकी बहनों की सलामती के लिए अपने कंधे पर बंदूक टांगे देश की सरहद पर जीरो डिग्री सेल्सियस से भी कम तापमान पर खड़ा रहता है, जबकि यहाँ खुद उसकी

बहन की राखी अपने भैया के आने का इंतजार करती रहती है। इसके बावजूद किसी फौजी की बहन केवल इसलिए नहीं रोती कि कहीं उसके रोने से देश की सरहद की हिफाजत में खड़े भाई के हाथ लापरवाह न हो जाएं और इस लापरवाही में कोई दुश्मन हमारे देश की सरहद को लांघ न जाये। आज मेरा वही फौजी भाई पूरे चार साल बाद अपनी कलाई पर राखी बंधवाने के लिए अपनी छोटी बहन के घर आ रहा है। ऐसा नहीं कि मेरे भाई को बीच में छुट्टियां नहीं मिलीं, लेकिन उसे सारी छुट्टियां तब मिलीं जब भाई-बहन के प्यार का पर्व रक्षाबंधन बीत जाया करता था।"

यह सब कहते हुए सुजाता का दिल भर आया। अपनी भावनाओं पर काबू रखते हुए उसने कहना जारी रखा, "यह सारी हड़बड़ाहट, बेकरारी और उफनती हुई खुशी आज केवल मेरी उस राखी के चार साल के इंतजार का है जिसे मैं अपने भैया की कलाई पर बांध नहीं पायी। आज उस सारे दर्द और पीड़ा को मैं भूल जाऊँगी। सच! जब आज मेरे भैया मुझे अपने कलेजे से लगाएंगे तो इस बहन को पिता का वह वात्सल्य भी मिल जाएगा जो मेरे पापा और मम्मी के गुजर जाने के बाद मुझे मेरे भैया ने दिया।"

यह कहते-कहते सुजाता अपने बचपन की यादों में खो गयी- "बचपन में ही मम्मी-पापा के गुजर जाने के बाद मैं इतनी छोटी थी कि कभी इस रिश्ते को समझ ही नहीं पायी। जब तक थोड़ी-बहुत समझने लायक हुई, तब तक मेरे भैया और भाभी ने मुझे इतना प्यार दे दिया कि मैं बहन के साथ उनकी बेटी भी हो गयी। उन्होंने न सिर्फ मुझे पाला-पोसा, पढ़ाया, लिखाया बल्कि मेरी शादी भी किसी पिता और माँ की तरह की। आप नहीं

"जब तक थोड़ी-बहुत समझने लायक हुई, तब तक मेरे भैया और भाभी ने मुझे इतना प्यार दे दिया कि मैं बहन के साथ उनकी बेटी भी हो गयी। उन दोनों ने केवल यह सोचकर किसी बच्चे को जन्म नहीं दिया कि कहीं अपने बच्चे की वजह से उनके मन में मेरे पालने-पोसने को लेकर कोई खोट न आ जाये। ऐसे भाई को मैं एक जन्म तो क्या, अपने हर जन्म में राखी बांधना चाहूँगी।"

जानते...आपको केवल यह पता है कि मेरी भाभी कभी माँ नहीं बन सकती, मगर हकीकत में ऐसा कुछ भी नहीं है। उन दोनों ने केवल यह सोचकर किसी बच्चे को जन्म नहीं दिया कि कहीं अपने बच्चे की वजह से उनके मन में मेरे पालने-पोसने को लेकर कोई खोट न आ जाये। ऐसे भाई को मैं एक जन्म तो क्या, अपने हर जन्म में राखी बांधना चाहूँगी।"

सुजाता की अपने भैया के प्रति सम्मान और कृतज्ञता के भाव में पगी बातें सुनकर आकाश की आँखों में नमी उतर आयी और वह बोला, "मुझे माफ कर दो सुजाता, मैं तो केवल मजाक कर रहा था। मेरी मंशा तुम्हारा दिल दुखाने की नहीं थी।" अपने और आकाश के आँसू पोंछते हुए सुजाता मुस्कुराते हुए बोली,

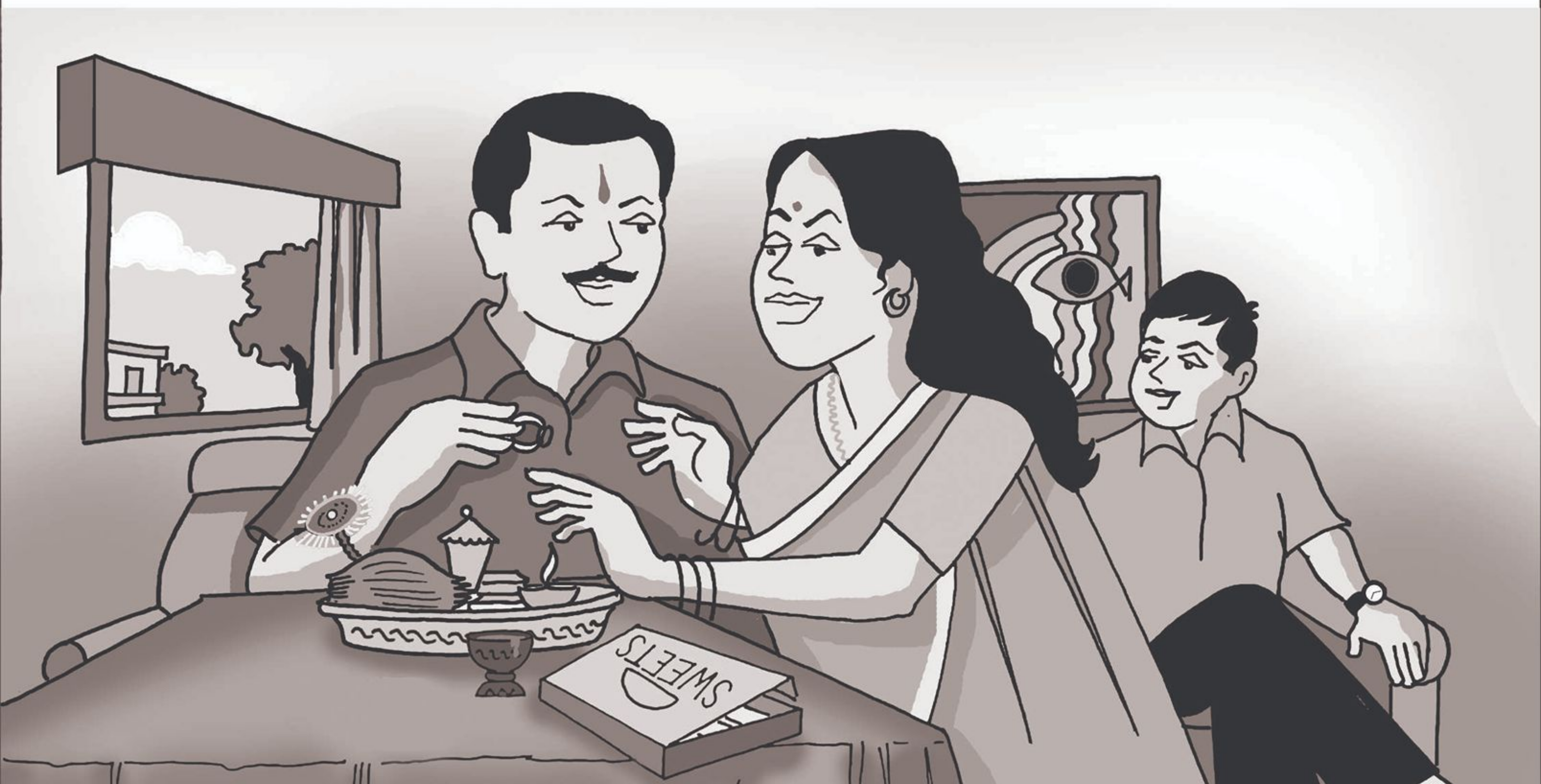

"क्या मैं अपने पति को जानती भी नहीं कि वे कैसे हैं? अब बस करिए! जरा मैं भाभी से फोन करके पूछ लूं कि भैया घर से निकले कि नहीं?" इतना कहकर सुजाता ने अपनी भाभी श्रेया को फोन किया तो उसने कहा- "अरे ननद रानी! थोड़ा इंतजार नहीं कर सकती?"

"क्या हुआ भाभी?"

"अरे इतने दिनों के बाद तो तुम्हारे भैया छुट्टी पर घर आये हैं तो थोड़ा मेरा भी तो हक बनता है। वैसे भी घर से बाहर निकलते समय पत्नी का दायित्व है कि वह अपने पति का मुँह मीठा कराये।" फिर खिलखिला कर हँसते हुए कहा, "लो ! तुम्हारे भैया भी आ गये। अब तुम फोन काटो, मैं उन्हें गेट तक छोड़ आऊं।"

"ठीक है भाभी।" कहकर सुजाता ने फोन काट दिया और पति से बोली, "अब मैं नहाने जा रही हूँ क्योंकि भैया भी घर से निकल चुके हैं।" स्नान करने के बाद सुजाता फटाफट तैयार हो गयी कि डोर बेल बज उठी। सुजाता ने पति से कहा, "जरा जाकर देखिए... शायद भैया आ गये। तब तक मैं राखी की थाली लेकर आती हूँ।" जितनी देर में उसके भैया और उसके पति बात करते हुए अंदर आये, उतनी देर में सुजाता राखी वाली थाली लेकर कमरे में आ गयी। उसने भैया के सिर पर प्यार से तौलिया रखा और माथे पर अक्षत-रोली का मंगल टीका कर थाली में रखे हुए दीपक को जलाकर उसने अपने बड़े भैया की लम्बी उम्र के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और उनकी कलाई में राखी बांध दी। इसके बाद सुजाता ने भैया को जैसे ही मिठाई खिलानी चाही, भैया ने सुजाता के हाथों से मिठाई लेकर दो टुकड़े कर दिये और एक टुकड़ा उन्होंने बहन के मुँह में प्यार से डाल दिया। भैया का यह प्यार देखकर सुजाता के आँसू छलक पड़े और उसने भैया के हाथ से मिठाई का दूसरा टुकड़ा लेकर उसे बड़े प्यार से भैया को खिला दिया। उसके भैया ने स्नेह से सुजाता के आँसू पोंछते हुए कहा, "पगली! तू मेरी जान है। तेरी आँखों में आँसू नहीं बल्कि तेरे होठों पर मुस्कान तेरे भैया को अच्छी लगती है।"

फिर भैया ने जेब में हाथ डालकर सोने की अंगूठी निकाली और सुजाता की अंगुली में पहनाते हुए कहा, "जिस तरह तेरी यह राखी मेरी कलाई पर नहीं बल्कि मेरे दिल में बंधी रहती है, ठीक वैसे ही तुम इस अंगूठी को अपनी अंगुली में पहने हुए रहोगी तो हमेशा तुम्हें अपने भैया के अपने पास होने का एहसास होता रहेगा।"

"ओ भैया!" इतना कहकर सुजाता अपने भैया के सीने से लिपट गयी।

✍ मियापुर (जौनपुर) निवासी लेखक विद्यालयी शिक्षा में विशेष शिक्षक के रूप में काम करते हुए साहित्य सृजन में संलग्न हैं। इनकी रचनाएं विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

सफलता के प्रतिमान

■ नरेंद्र सिंह 'नीहार' - नयी दिल्ली ■

हर व्यक्ति अपने जीवन में सफल होना चाहता है। पद, प्रतिष्ठा, पैसा, गाड़ी-बंगला, ऐशो-आराम को लोग सफलता के सूचक मान बैठे हैं। वहीं, बहुत-से लोग इन सबसे दूर अपने जीवन को सही मायने में सफल और सार्थक बना रहे हैं। सफलता की कसौटी में भौतिक प्रगति के साथ-साथ मानवीय पहलू और पर्यावरण संरक्षण को भी शामिल करना होगा।

उत्तम स्वास्थ्य एवं सम्यक् विचार - सफल होने के लिए आवश्यक है कि आप शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक रूप से मजबूत हों। आपके विचार आपके आचरण में दिखते हों। आप हँसमुख और सदाचारी हों। लोग आपसे मिलकर खुशी का अनुभव करते हों। आप पर भरोसा करते हों और आत्मीयता के भाव से आपके साथ जुड़े हों।

पारिवारिक एवं सामाजिक सम्बन्ध - आप अपने परिवार के सदस्यों के साथ कितने प्रेम और सद्भाव से रहते हैं और उनकी कितनी चिंता करते हैं? अपने बुजुर्गों का कितना खयाल रखते हैं? अपने रिश्ते-नातेदारों से की कुछ सहायता कर पाते हैं? ये सभी सफलता के महत्वपूर्ण मानदण्ड हैं। इनकी अनदेखी नहीं होनी चाहिए।

सामाजिक सरोकार - व्यक्ति की सफलता में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से समाज का हाथ होता है। ऐसे में आप अपने समाज की बेहतरी के लिए क्या कुछ योगदान कर रहे हैं, यह भी सफलता की कसौटी है।

पर्यावरणीय जागरुकता - आप घर तथा बाहर स्वच्छता का कितना खयाल रखते हैं? पशु-पक्षियों और अन्य प्राणियों के प्रति दया भाव और संवेदनशीलता है या नहीं? जल संरक्षण में और पौधरोपण में रुचि रखते हैं क्या? ये छोटी-छोटी बातें व्यक्ति को समग्र रूप में सफल बनाती हैं।

अपने कर्त्तव्यों के प्रति लगन और बढ़ती स्वीकार्यता ही सफल होने का मूल मंत्र है। आपके होने से घर-परिवार और समाज में क्या बेहतर हो रहा है, यही आपकी सफलता की सबसे बड़ी निशानी है।

युग प्रधान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी एवं धवल सेना का मुंबई पधारने पर हार्दिक अभिनंदन.. अभिवंदन

ज्वेलर्स शॉप इंश्योरेंस

लाईफ इंश्योरेंस

कैशलेस मेडीक्लेम

इंश्योरेंस टिप्स

हमारे विशेषज्ञों द्वारा
अपनी पुरानी ज्वैलर्स ब्लॉक पॉलिसी
या मेडिक्लेम पॉलिसी की जाँच करवाएँ और
अनुकूल नियमों और शर्तों के साथ
मुफ्त कोटेशन प्राप्त करें ।

नो रुम कैटगरी वाली
कैशलेस मेडिक्लेम पॉलिसी लें
और इसे केवल 2600/- की
मामूली राशि से सुपर टॉप अप
पॉलिसी के साथ जोड़ें

अपने पुराने जीवन बीमा पॉलिसी
नंबर के साथ शेयर करें,
हम एक परिवार पोर्टफोलियों प्रदान करेंगे
और उसी के अनुसार बेहतरीन योजना
की सलाह देंगे ।

यदि किसी इंश्योरेंस कंपनी ने आपके
मौजूदा क्लेम को खारिज कर दिया है
और आपको किसी सहायता या सलाह
की आवश्यकता होती है, तो हम
मदद के लिए तैयार है ।

Legacy of 39 Years

25000 HAPPY CUSTOMERS INDIA & ABROAD

11000 Claims Solved

300 National & International Awards

वर्ष 2020-21 में हमने 50+ करोड़ की वैल्यु के क्लेम सैटल किए है जिसमे पॉलीसी है ज्वैलर्स ब्लॉक, लाईफ इन्शुरेन्स, मेडीक्लेम, फायर एवं बर्गलरी.

Ganpat Dagliya
Gold Medalist
T.O.T - U.S.A

NICE™
INSURANCE LANDMARK
One Stop Insurance Solution in India !

हम देश विदेश में सभी ग्राहको को ऑनलाईन सुविधा द्वारा सेवा देते है.

Chirag Dagliya
M.B.A & Harvard Cert.
T.O.T - U.S.A

Contact Details :
A 801/802/803, Shreepati Aradhana, 8th Floor, Dr. A.Merchant Road Kabutar Khana, Near Kalbadevi,
Marine Lines (East) Mumbai- 400002 • Email : info@niceinsure.com | www.niceinsure.com | Inter Com : 5050
LIC Department : 7045850013 | 7045850014 • Jewellers Department : 7045850015 | 9167860661 | 7045850013
Mediclaim Department : 7045850016 | 7047850017 | 9167860665 | 7045850013 • Motor Department : 9167860661
Claim Support Team : 7045850012 | 9167860663 • Landline : 022 - 46090022 | 46090023 | 46090024 | 40062222

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

द्वारा प्रदत्त किये जाने वाले अणुव्रत आंदोलन के
विभिन्न पुरस्कारों–सम्मानों हेतु **वर्ष 2023** के लिए

नामांकन आमंत्रित

अणुव्रत पुरस्कार

नैतिकता और चारित्रिक उन्नयन का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने वाले एवं इस दिशा में उत्कृष्ट योगदान देने वाले विशिष्ट व्यक्तियों या संस्थाओं को अणुव्रत पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है। पुरस्कार स्वरूप 1.51 लाख रुपये का चैक, प्रशस्ति–पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किये जाते हैं।

अणुव्रत अहिंसा अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार

अणुव्रत के मूल्यों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने में अनुकरणीय भूमिका निभाने वाले विशिष्ट व्यक्तियों को 'अणुव्रत अहिंसा अंतरराष्ट्रीय शांति पुरस्कार' से सम्मानित किया जाता है। पुरस्कार स्वरूप 1 लाख रुपये का चैक, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किये जाते हैं।

अणुव्रत गौरव सम्मान

अणुव्रत आंदोलन के प्रति गत 20 से अधिक वर्षों से संलग्न ऐसे समर्पित अणुव्रत कार्यकर्ताओं को 'अणुव्रत गौरव' सम्मान प्रदान किया जाता है जिनकी आयु 50 वर्ष से अधिक हो एवं जिनका स्वयं का जीवन अणुव्रत जीवनशैली का उल्लेखनीय उदाहरण हो। सम्मान स्वरूप प्रशस्ति–पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किये जाते हैं।

जीवन विज्ञान पुरस्कार

जीवन विज्ञान को अधिक से अधिक विद्यालयों और विद्यार्थियों तक पहुँचाने में 20 से अधिक वर्षों से संलग्न ऐसे समर्पित कार्यकर्ताओं या प्रशिक्षकों को प्रतिवर्ष जीवन विज्ञान पुरस्कार प्रदान किया जाता है जिनकी आयु 50 वर्ष से अधिक हो। पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किये जाते हैं।

अणुव्रत लेखक पुरस्कार

अणुव्रत दर्शन के अनुरूप उत्कृष्ट, नैतिक एवं आदर्श लेखन के लिए विशिष्ट लेखक, कवि, पत्रकार अथवा साहित्यकार को 'अणुव्रत लेखक पुरस्कार' प्रदान किया जाता है। पुरस्कार स्वरूप 51 हजार रुपये का चैक, प्रशस्ति–पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किये जाते हैं।

❊ उपरोक्त पुरस्कारों के लिए नामांकन निर्धारित प्रपत्र में सम्पूर्ण जानकारी के साथ आमंत्रित हैं।

❊ नामांकन पत्र अणुविभा की वेबसाइट https://anuvibha.org/anuvibha-awards/लिंक पर उपलब्ध है।

❊ सभी संलग्नक के साथ नामांकन प्रपत्र संस्था मुख्यालय **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, चिल्ड्रन'स पीस पैलेस, राजसमंद–313326** पर **30 सितम्बर**, 2023 तक व्यक्तिशः, कोरियर या डाक द्वारा पहुँच जाने चाहिए। चयन समिति द्वारा लिया गया निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।

गौरवशाली
अतीत के झरोखे से...

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष स्वर्णिम इतिहास के असंख्य पन्नों से परिपूर्ण हैं। अणुव्रत अमृत महोत्सव के इस ऐतिहासिक प्रसंग पर इन्हीं में से कुछ पन्ने हम सुधी पाठकों के लिए यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, इस आशा और विश्वास के साथ कि ये संस्मरण हम सब को अणुव्रत-पथ पर कदम दर कदम आगे बढ़ते रहने को प्रेरित करेंगे।

इन संस्मरणों की आधारभूमि है आचार्य तुलसी के जीवनवृत्त पर आधारित एवं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा द्वारा सम्पादित महाग्रंथ "मेरा जीवन : मेरा दर्शन"।

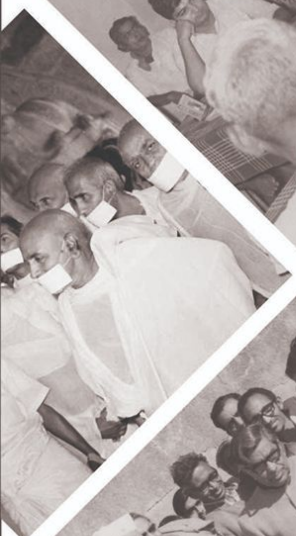

75

1949 - 2024

अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत अमृत महोत्सव

शराबबंदी हेतु आमरण अनशन

सर्वोदयी लोगों ने राजस्थान सरकार से अनुरोध किया कि वह राजस्थान में पूर्ण शराबबंदी की घोषणा करे। राजस्थान सरकार ने इस अनुरोध को स्वीकार नहीं किया। फलतः राजस्थान के प्रमुख सर्वोदयी कार्यकर्ता गोकुलभाई भट्ट ने आमरण अनशन की घोषणा कर दी। सर्वोदयी लोग और नेता आन्दोलन में सक्रिय हो गये। राजस्थान प्रान्तीय अणुव्रत समिति ने भी निर्णय लिया कि सरकार की शराबबंदी नीति की शिथिलता के विरोध में आन्दोलन चलाया जाये। समिति के अध्यक्ष मनोहरजी कोठारी इस विषय में काफी सक्रिय रहे। समिति के मंत्री मोहनलाल जैन ने लाडनूं आकर आचार्य श्री तुलसी के दर्शन किये, योजना की जानकारी दी और बताया कि राजस्थान प्रान्तीय अणुव्रत समिति ने शराबबंदी के पक्ष में हस्ताक्षर अभियान चालू किया है। उन्होंने सभा में विशेष वक्तव्य भी दिया तथा शराबबंदी और अपने मिशन के बारे में अच्छा प्रकाश डाला। आचार्यश्री ने कहा- "मोहनजी बड़े चरित्रवान और नैतिक व्यक्ति हैं और अनेक प्रकार की कठिनाइयों को झेलकर भी अणुव्रत के काम में लगे हुए हैं। यहाँ से कल जयपुर जा रहे हैं। वहाँ पहुँचकर शराबबंदी कार्यक्रम को आगे बढ़ाने की बात सोच रहे हैं।"

आचार्य तुलसी का अहिंसात्मक प्रतिरोध

आचार्य श्री तुलसी ने नशे की बढ़ती प्रवृत्ति और सरकार की शिथिलता का स्वयं अहिंसात्मक प्रतिरोध करने का निर्णय लिया और 26 मई 1972 को पूर्व घोषणा के अनुसार उन्होंने उपवास किया। अनेक साधु-साध्वियों ने भी उपवास किये। देशभर में हजारों-हजारों उपवास हुए। लाडनूं में इस प्रसंग में ठाट-बाट के साथ एक प्रभात जागरिका निकाली गयी। शहर में शराब की दुकानें बंद रहीं। शहर का वातावरण अच्छा रहा। यहां से साठ सत्याग्रहियों को लेकर एक बस जयपुर गयी। यह काम प्रान्तीय अणुव्रत समिति की प्रेरणा से हुआ। उसके द्वारा उठाया गया यह प्रथम क्रान्तिकारी कदम था। इससे लोगों को सोचने का मौका मिला। जयपुर में भी अच्छी हलचल रही। मद्यनिषेध कार्यक्रम का यह चिन्तन वास्तव में सामयिक था। आचार्य श्री तुलसी के उपवास के बावजूद दिन में श्रम अधिक रहा। दूसरे ही दिन जयपुर से बनवारी बेदी के साथ गोकुलभाई भट्ट के द्वारा प्रेषित एक पत्र आचार्य श्री तुलसी को प्राप्त हुआ जो इस प्रकार था -

अनशन का ग्यारहवां दिन!

जयपुर

26.5.1972

पूज्य महाराजजी! तुलसी महाराजजी!

आपकी कृपा से अच्छा हूँ।

आप जो प्रेरणा दे रहे हैं, उससे सबका उत्साह बढ़ता है। आज का यहाँ का कार्यक्रम अच्छा रहा। भाई बनवारीजी आपश्री से सब कथा सुनाएंगे। अहिंसात्मक प्रतिवाद का यह एक नैतिक और सामाजिक आन्दोलन है, जिसमें आप जैसे अग्रसर हुए हैं। यह काम भारत में होगा ही। कृपा रखें।

सबका वन्दन।

भवदीय

गोकुलभाई भट्ट

27 मई को मध्याह्न में कैंप कार्यालय के प्रबंधक कमलेश चतुर्वेदी एक तार लेकर आये। तार गोकुलभाई भट्ट ने जयपुर से भेजा था। उसमें उन्होंने लिखा- "आचार्यश्री के आशीर्वाद से कार्यक्रम संपन्न हुआ। प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के अनुरोध और आश्वासन पर आज अनशन समाप्त करूँगा। सहयोग के लिए अत्यंत आभारी हूँ।" प्रान्तीय अणुव्रत समिति ने भी इस साहसिक कदम के लिए आचार्य श्री तुलसी को अनेक बधाइयां दीं। कार्यकर्ताओं की प्रसन्नता चरम पर थी कि आचार्य श्री तुलसी ने कल उपवास किया और कल ही काम सफल हो गया।

" आचार्य श्री तुलसी ने नशे की बढ़ती प्रवृत्ति और सरकार की शिथिलता का स्वयं अहिंसात्मक प्रतिरोध करने का निर्णय लिया और 26 मई 1972 को पूर्व घोषणा के अनुसार उन्होंने उपवास किया। अनेक साधु-साध्वियों ने भी उपवास किये। देशभर में हजारों-हजारों उपवास हुए। "

अनशन सम्पन्न

जयपुर में गोकुलभाई भट्ट का ग्यारह दिनों का अनशन सैकड़ों सर्वोदयी और अणुव्रती कार्यकर्ताओं के मध्य राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री बरकतउल्ला खां के हाथों संपन्न हुआ। मुख्यमंत्री ने सब कार्यकर्ताओं को यह विश्वास दिलाया कि राजस्थान में नशाबंदी कार्यक्रम को कड़ाई से लागू किया जाएगा। उस अवसर पर राजस्थान के वित्तमंत्री चन्दनमल बैद, सर्वोदयी नेता सिद्धराज ढड्ढा, राजस्थान के पूर्व विधायक मनोहरसिंह मेहता, उत्तर भारत के प्रसिद्ध सर्वोदयी कार्यकर्ता किरण भाई, अखिल भारतीय नशाबंदी परिषद् की अध्यक्ष डॉ. सुशीला नायर, राजस्थान समग्र सेवा संघ के अध्यक्ष रामवल्लभ आदि अनेक व्यक्तियों ने विचार व्यक्त किये और अणुव्रती कार्यकर्ताओं के सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया। अखिल भारतीय अणुव्रत समिति ने सुझाव दिया कि नशाबंदी कार्यक्रम को अखिल भारतीय स्तर पर आगे बढ़ाने के लिए अणुव्रती और सर्वोदयी कार्यकर्ताओं का एक अखिल भारतीय सम्मेलन आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य में बुलाया जाये। इस सम्मेलन में भावी कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जाये।

गोकुलभाई भट्ट ने अपना अनशन समाप्त करने से पहले आचार्य श्री तुलसी के सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया। अणुव्रती सत्याग्रही भाई-बहनों को अपने साथ ही अनशन समाप्त करने का अनुरोध किया और कहा कि आचार्यश्री और अणुव्रत समाज की तपस्या ने नशाबंदी आन्दोलन को यह नया रूप दिया है। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि इन्दिराजी के विश्वास पर वे आमरण अनशन समाप्त कर रहे हैं, किंतु उनका कार्य समाप्त नहीं हुआ है। इस कार्यक्रम को तब तक चलाये रखना है, जब तक समाज से इस बुराई का अन्त न हो जाये। अणुव्रत के प्रथम सत्याग्रही थे मिश्रीमल सुराणा और उनकी धर्मपत्नी विजया बहन। उनके साथ अन्य अनेक अणुव्रती अनशन में संभागी थे।

> अखिल भारतीय अणुव्रत समिति ने सुझाव दिया कि नशाबंदी कार्यक्रम को अखिल भारतीय स्तर पर आगे बढ़ाने के लिए अणुव्रती और सर्वोदयी कार्यकर्ताओं का एक अखिल भारतीय सम्मेलन आचार्य श्री तुलसी के सान्निध्य में बुलाया जाये। इस सम्मेलन में भावी कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जाये।

सत्याग्रही दल

उक्त कार्यक्रम को सफल बनाने में अखिल भारतीय अणुव्रत समिति के मंत्री देवेन्द्र कर्णावट, संयुक्त मंत्री निर्मल सुराणा, राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के मंत्री मोहनलाल जैन आदि का चिन्तन और श्रम उल्लेखनीय रहा। इधर प्रादेशिक अणुव्रत समिति के नशाबंदी अभियान को गति प्रदान कर दी। उसके तत्त्वावधान में अणुव्रती सत्याग्रही भाई-बहनों का एक दल बीकानेर पहुँचा। उस दल के सदस्यों ने वहाँ मोहनजी के नेतृत्व में मद्य निषेध कार्यक्रम को प्रभावी बनाने में अच्छी सफलता प्राप्त की। दल में सम्भागी भाई-बहन थे - 1. हुलासीदेवी भुतोड़िया 2. माणकदेवी चोरड़िया 3. विजयलक्ष्मी चोरड़िया 4. सुन्दर भंसाली 5. संगीता जैन 6. मोहनलाल जैन 7. डॉ. धर्मचन्द भंसाली 8. मालचन्द बोथरा।

28 मई को आचार्य श्री तुलसी के प्रवचन के समय जयपुर से समागत सत्याग्रही भाई-बहनों का कार्यक्रम रहा। आने वाले सभी लोग काफी खुश थे। उन्होंने बताया कि जयपुर में अणुव्रत तथा आचार्य श्री तुलसी के उपवास की अच्छी चर्चा रही। भविष्य का रास्ता खुला। युवकों का हौसला बढ़ा। मद्यनिषेध का कार्यक्रम अब भी चालू रहना चाहिए, इस चिन्तन में प्राय: सभी व्यक्ति एकमत थे। 30 मई को नशाबंदी आन्दोलन के कार्यकर्ता किरणभाई व अग्रवालजी लाडनूं आये। उन्होंने आचार्यश्री के कार्यों का अभिनन्दन किया, उनके प्रति आभार व्यक्त किया तथा श्री गोकुलभाई भट्ट की ओर से बधाई दी।

व्यसनों के त्याग का अभियान

आचार्य श्री तुलसी कालू में छह दिन रहे। वहां उत्साह का जो वातावरण देखा, आश्चर्यजनक था। पंडाल बहुत बड़ा था। लगभग पाँच हजार लोगों के बैठने की क्षमता वाला पंडाल जितना विशाल था, उतना ही भव्य और सादा था। जनता की उपस्थिति

तीनों ही समय संतोषजनक ही नहीं, अतिरिक्त होती थी। प्रवचन सुनने के लिए किसी कौम विशेष के लोग नहीं, सभी नागरिक आते थे। केवल जैन ही नहीं, जनसाधारण आन्तरिक श्रद्धा के साथ उपस्थित होते थे। त्याग की त्रिवेणी प्रवाहित हो गयी। जुए और शराब का सामूहिक परित्याग हुआ। तम्बाकू, भांग, गांजा, जर्दा आदि नशीली वस्तुओं का प्रायः लोगों ने त्याग कर लिया। युवकों और युवतियों ने विशेष त्याग किये। किशोर और किशोरियां भी पीछे नहीं रहीं। पन्द्रह-सोलह प्रौढ़ व्यक्तियों ने यावज्जीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार किया। लूणकरणसर क्षेत्र जुए के व्यसन से संत्रस्त था तो कालू क्षेत्र मद्यपान में अग्रणी था। अच्छे-अच्छे पदों पर कार्यरत व्यक्ति भी शराब के चंगुल में फंसे हुए थे। आचार्य श्री तुलसी को इस बात की जानकारी मिली। उन्होंने प्रवचन में तथा व्यक्तिशः मद्यपान के दुष्परिणामों की चर्चा की।

भारतीय संस्कार निर्माण समिति नशाबंदी के क्षेत्र में व्यापक कार्य कर रही थी। उसके साथ कार्यकर्ताओं और संसाधनों की अच्छी व्यवस्था थी। कालू में समिति के मंत्री मोहनलाल जैन भी सदलबल पहुँच गये। उनकी ओर से काफी प्रयत्न किया गया। बहुत अच्छा वातावरण बना। फलतः कालू के सभी वर्गों के मद्यपान करने वाले लोग आचार्यश्री के पास आये। उन्होंने मनोबल जुटाकर भविष्य में कभी शराब न पीने का संकल्प लिया।

> भारतीय संस्कार निर्माण समिति नशाबंदी के क्षेत्र में व्यापक कार्य कर रही थी। उसके साथ कार्यकर्ताओं और संसाधनों की अच्छी व्यवस्था थी। कालू में समिति के मंत्री मोहनलाल जैन भी सदलबल पहुँच गये। कालू के लोगों ने नमनोबल जुटाकर आचार्यश्री के समक्ष भविष्य में कभी शराब न पीने का संकल्प लिया।

शराबबंदी और सत्याग्रह के संबंध में आचार्य श्री तुलसी की राजस्थान के तत्कालीन वित्तमंत्री चन्दनमल बैद के साथ खुलकर चर्चा हुई। दोनों के विचार एक जैसे रहे। हरिजनों के संस्कार-निर्माण की बात को उन्होंने बहुत पसंद किया। कुछ समय से आचार्य श्री तुलसी के साथ पुलिस की व्यवस्था थी। आचार्य श्री ने उनसे कहा- "हमारे साथ पुलिस क्यों रहती है? मेरा चिन्तन है कि वह नहीं रहनी चाहिए।" बैदजी ने इस विचार के साथ भी अपनी सहमति प्रकट की। कुछ दिन बाद सुबह-सुबह साढ़े पाँच बजे चंदनमलजी पुनः आये। संस्कार निर्माण समिति के मोहनजी जैन उनके साथ थे। आचार्यश्री ने दोनों से फिर बात की। मोहनजी बोले- "मद्यनिषेध के प्रचारार्थ सरकार की ओर से औरों को लाखों रुपये दिये जाते हैं। अणुव्रत भी यही काम करता है। इसे क्यों नहीं दिये जाते?" बैदजी ने कहा- "ऐसी कोई बात नहीं है। मद्यनिषेध तथा दलित वर्ग के संस्कार-निर्माण एवं शिक्षा आदि के लिए हमारी ओर से पूरा सहयोग दिया जाएगा। मोहनजी कभी जयपुर आ जाएँ। वहाँ विस्तार से बात कर लेंगे।" इस चर्चा का अच्छा प्रभाव रहा और राजस्थान सरकार इन कामों के लिए समिति को सहयोग करने लगी।

बरड़ासर बना अणुव्रत ग्राम

सरदारशहर के निकटवर्ती गाँव बरड़ासर से लगभग पचास व्यक्ति आचार्य श्री तुलसी के पास आये। आचार्यश्री ने उन्हें अणुव्रत की बात विस्तार से बतायी। कुछ अणुव्रती कार्यकर्ता वहाँ पहुँचे। उन्होंने ग्राम के प्रमुख लोगों के सामने 'अणुव्रत-ग्राम' की योजना प्रस्तुत की। उसके बारे में खुलकर चर्चा हुई। गाँववासी अणुव्रती बने। उन्होंने प्रसन्नता के साथ अपने ग्राम को 'अणुव्रत-ग्राम' के रूप में ढालने का संकल्प व्यक्त किया। कुछ ही दिनों बाद बरड़ासर के अनेक व्यक्ति महावीर जयंती के कार्यक्रम में सम्मिलित हुए और उनके प्रतिनिधि श्री जसाराम ने अपने गाँव को 'अणुव्रत ग्राम' के रूप में घोषित किया।

उक्त सन्दर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा- "महावीर जयंती के पावन प्रसंग में हमें 'अणुव्रत-ग्राम' की भेंट मिली है। यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है। जिस ग्राम के पचहत्तर प्रतिशत व्यक्ति अणुव्रत को स्वीकार कर लेते हैं, उस ग्राम को 'अणुव्रत-ग्राम' कहा जा सकता है। 'अणुव्रत-ग्राम' की योजना मुझे बहुत उपयोगी लग रही है। बरड़ासर में इसकी क्रियान्विति का शुभारम्भ हुआ है। मैं चाहता हूँ कि इस योजना को गति मिले और गाँव के गाँव इस रूप में विकसित हों।" गाँव से समागत लोगों के विशेष अनुरोध पर आचार्यश्री ने बरड़ासर गाँव का स्पर्श करना स्वीकार कर लिया। इस ग्राम को 'अणुव्रत-ग्राम' बनाने में मोहनलाल जैन (सरदारशहर) का उल्लेखनीय योगदान रहा।

तंबाकू से छुटकारा

20 मई 1973 को आचार्य श्री तुलसी नांगली पहुंचे। तीन सौ पचास की आबादी वाले छोटे-से गाँव में लगभग उतने ही यात्री आ गये। फिर भी उनकी आवास-व्यवस्था में कोई कठिनाई नहीं हुई क्योंकि गाँववासियों ने अपने मकान और झोंपड़े पूरी प्रसन्नता के साथ आगंतुक लोगों के लिए खोल दिये। सादुलपुर निवासी केशरीचंद-जयसुखलाल सेठिया की एक धर्मशाला भी वहाँ थी। प्रवास में सब प्रकार की सुविधाएं रहीं। स्थानीय लोगों ने सत्संग में पूरा रस लिया। ग्रामपंचायत के सरपंच श्री भंवरसिंह ने आचार्य श्री तुलसी के रात्रिकालीन प्रवचन के बाद तंबाकू का परित्याग कर दिया। वे पिछले तीस वर्षों से तंबाकू पी रहे थे। अन्य अनेक लोगों ने शराब, मांस, बीड़ी, सिगरेट आदि का सेवन न करने का संकल्प स्वीकार किया। रात्रि में ग्यारह बजे तक कार्यक्रम चलता रहा।

दूसरे दिन आचार्य श्री तुलसी एक व्यवस्थित जुलूस के साथ सादुलपुर पहुँचे। उत्साहपूर्ण वातावरण में स्वागत का कार्यक्रम संपन्न हुआ। शाब्दिक या औपचारिक स्वागत के साथ त्यागमय उपहार भी मिला। चन्दनमल पारख पचास वर्षों से प्रतिदिन लगभग पचास सिगरेट पीते थे। उस दिन अणुव्रत आचार संहिता में व्यसन मुक्ति की बात सुन उनके मन में तीव्र हलचल होने लगी। उन्होंने अपने पॉकेट से सिगरेट का पैकेट निकालकर फेंक दिया और सदा-सदा के लिए सिगरेट का त्याग कर दिया।

“आचार्य श्री तुलसी एक व्यवस्थित जुलूस के साथ सादुलपुर पहुँचे। स्वागत के साथ त्यागमय उपहार भी मिला। चन्दनमल पारख पचास वर्षों से प्रतिदिन लगभग पचास सिगरेट पीते थे। उस दिन अणुव्रत आचार संहिता में व्यसन मुक्ति की बात सुन उनके मन में तीव्र हलचल होने लगी। उन्होंने सदा-सदा के लिए सिगरेट का त्याग कर दिया।”

संस्कार निर्माण शिविर

22 मई को 'संस्कार निर्माण शिविर' का प्रारम्भ हुआ। इस शिविर में बीकानेर तथा चूरू जिले के लगभग नब्बे हरिजन कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। बीकानेर जिले से उदासर के कार्यकर्ता बहुत अच्छी संख्या में आये। यह आशंका थी कि मई के दूसरे-तीसरे सप्ताह में वर्षा होने के बाद खेतीबाड़ी करने वाले लोग खेती में संलग्न हो जाएंगे तो शायद शिविर में कम लोग आ पाएंगे, किन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ। आने वाले लोग ठीक समय पर आ गये। तीस-पैंतीस क्षेत्रों से वहाँ समागत व्यक्तियों में स्नातक, स्नातकोत्तर, साहित्यकार, वकील, शिक्षक, गायक, वक्ता आदि प्रबुद्ध व्यक्ति भी अच्छी संख्या में थे। भारतीय संस्कार निर्माण मंत्री मोहनलाल जैन ने कलकत्ता से आकर शिविर-संयोजक का दायित्व सम्भाला। मास्टर रेवतसिंह भाटी सरदारशहर से आ गये। कुल मिलाकर शिविर की व्यवस्था अच्छी हो गयी। सादुलपुर के लोगों ने विशेष रुचि के साथ इस काम को हाथ में लिया।

उद्घाटन सत्र में शिविर के संयोजक मोहनजी ने कहा- "आज सादुलपुर में एक नया इतिहास लिखा जा रहा है। वर्तमान में इस कार्यक्रम का मूल्यांकन कोई करे या नहीं, पर इसका भविष्य उज्ज्वल है। आज मनुष्य-मनुष्य के बीच वर्गभेद की जो दीवार खड़ी हो गयी है, उसे तोड़ने का उपक्रम है यह शिविर। इससे हमको एक नयी दिशा मिलेगी, ऐसा विश्वास है।" संस्कार निर्माण समिति के अध्यक्ष डॉ. गोविंदलाल गोयल इस शिविर की आयोजना से भावविभोर होकर बोले- "धर्म और जाति के नाम पर दुनिया में क्या-क्या हुआ है, यह बताने की अपेक्षा नहीं है। ढाई हजार वर्ष पूर्व भगवान महावीर ने करुणा का शंखनाद किया और मानवता की आवाज उठायी। उनके बाद फिर समाज के मूल्य बदले और मानवता के साथ भयानक खिलवाड़ किया गया। मनुष्य जाति के एक वर्ग को पशु से भी तुच्छ समझा जाने लगा। महात्मा गांधी ने अपने युग में दलित वर्ग के उत्थान हेतु काफी काम किया। किंतु उनकी मृत्यु के बाद हमारी आवाज बंद हो गयी। अब हमें पुनः जगाने के लिए आचार्य श्री तुलसी ने जो अभियान चलाया है, वह हमारे भाग्योदय का प्रतीक है। बरड़ासर के बाद आज सादुलपुर में जो कुछ हो रहा है, वह एक दिन स्वर्णिम पृष्ठों में लिखा जाएगा।"

शिविर पद्धति है सर्वोत्तम

संस्कार निर्माण शिविर के शिविरार्थी बंधुओं को संबोधित करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा, " जिस शिविर की चर्चा महीनों से हो रही थी, उसका शुभारंभ आज हो रहा है। संस्कार निर्माण के लिए शिविर पद्धति ही सर्वोत्तम है। शिविर के माध्यम से विचारों को सुगमता पूर्वक आचरण में लाया जा सकता है। हमारे साधुओं और कार्यकर्ताओं ने एक कार्यक्रम तैयार किया। मैंने इसके लिए स्वीकृति दे दी। इस शिविर को लेकर तरह-तरह की प्रतिक्रियाएं हमारे पास आती रहीं, पर हमने कोई चिंता नहीं की। जिस काम के लिए हमने निर्णय कर लिया उसके बारे में चिंता क्यों करे? विचार स्वातंत्र्य का युग है। हर व्यक्ति अपनी-अपनी दृष्टि से सोच सकता है। हम भी अपनी दृष्टि से सोचते हैं। इसलिए हमें प्रतिक्रिया की चिंता किये बिना चिन्तनपूर्वक और विवेकपूर्वक अपना काम करते रहना है।"

दलित वर्ग के प्रति समाज की उपेक्षा को उजागर करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने अपने प्रवचन में कहा-"हरिजन भाई आपसे रुपया नहीं माँगते, मकान नहीं माँगते, रोटी नहीं माँगते। वे तो आपसे केवल प्रेम माँगते हैं, विश्वास माँगते हैं। आपकी तरह वे भी अच्छे मनुष्य की तरह जीना चाहते हैं। फिर आप उनका अनादर क्यों करते हैं? उन्हें अस्पृश्य, अछूत आदि क्यों कहते हैं? हरिजनों में अनेक कमजोरियां हो सकती हैं। मैं पूछना चाहता हूँ कि कमजोरियां किसमें नहीं होतीं? हरिजनों की कमजोरियों के लिए दूसरा कोई जिम्मेदार नहीं है। वे लोग ही जिम्मेदार हैं, जिन्होंने उनकी उपेक्षा की। उन्हें अस्पृश्य और अछूत कहकर समाज से अलग कर दिया या ठुकरा दिया। मैं आज इसी आशा और विश्वास के साथ इस शिविर का उद्घाटन कर रहा हूँ कि शिविरार्थी बंधुओं में अच्छे संस्कारों का निर्माण होगा।" शिविर सात दिनों का था, पर पाँच दिनों में ही सात दिन का काम हो गया। शिविरार्थियों ने बहुत अच्छे संस्कारों का अर्जन किया। उनका दिल पूरा-पूरा भर गया। एक प्रकार से उन्हें नया जीवन मिल गया।

> संस्कार निर्माण शिविर के शिविरार्थी बंधुओं को संबोधित करते हुए आचार्य श्री तुलसी ने कहा, "संस्कार निर्माण के लिए शिविर पद्धति ही सर्वोत्तम है। शिविर के माध्यम से विचारों को सुगमता पूर्वक आचरण में लाया जा सकता है। मैं आज इसी आशा और विश्वास के साथ इस शिविर का उद्‌घाटन कर रहा हूँ कि शिविरार्थी बंधुओं में अच्छे संस्कारों का निर्माण होगा।"

संकल्प-चतुष्टयी

26 मई को शिविर की संपन्नता से पहले एक हरिजन सम्मेलन हुआ। उसमें उल्लेखनीय उपस्थिति रही। समापन कार्यक्रम में विद्वान शिविरार्थी बंधुओं ने विचित्र भाव व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि 25 करोड़ लोगों को अब दबाकर नहीं रखा जा सकता। यह समाज अब क्रांति के किनारे खड़ा है। उन्होंने यह भी बताया कि डॉ. अंबेडकर ने बौद्ध धर्म स्वीकार किया, इसका कारण भी समाज की हठधर्मिता रही है। उनके प्रति विषमतापूर्ण व्यवहार करने वालों के प्रति उनका रोष भी व्यक्त हुआ। इस स्थिति के बावजूद शिविर के प्रशिक्षण से उन्हें बहुत संतोष हुआ। लगभग सभी शिविरार्थी जीवनदानी कार्यकर्ता के रूप में काम करने के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने इस काम के प्रति अत्यधिक निष्ठा व्यक्त की। शिविरार्थियों के लिए चार नियम निर्धारित किये गये -

- मद्यपान का परित्याग करना
- प्रतिदिन मंगलधुन लगाना
- संवत्सरी को उपवास करना
- समय-समय पर सत्संग करना

जो व्यक्ति उक्त नियमों को स्वीकार करेंगे, वे संस्कारी कहलाएंगे। ऐसे हजारों व्यक्तियों को तैयार करना है। वे भगवान महावीर के चरणों में भेंटस्वरूप समर्पित होंगे। उनके समर्पण का दिन होगा भगवान महावीर की पच्चीस सौवीं निर्वाण तिथि। इस दृष्टि से संस्कार निर्माण समिति को व्यवस्थित तरीके से काम करना था। कार्य की रूपरेखा तैयार की गयी। संस्कार निर्माण शिविर की सफल आयोजना के बाद ऐसा प्रतीत हुआ कि दलित वर्ग के उद्धार का एक नया रास्ता खुल गया है। उत्तमचंद सेठिया, प्रभुदयाल डाबड़ीवाल, ओमप्रकाश जिंदल आदि अनेक व्यक्तियों ने शिविरार्थियों की चर्या और प्रशिक्षण का उपक्रम देखा। सब लोग बहुत प्रभावित हुए। वे अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर इस दिशा में काम करेंगे, उन्होंने ऐसी भावना व्यक्त की।

ऊँचाई तक पहुँच चुकी है 'अणुव्रत' पत्रिका

एक सर्कुलर लेटर प्राप्त हुआ, जिसमें आपने 'अणुव्रत' पत्रिका के लिए लिखने वाले लेखकों से अणुव्रत लेखक मंच से जुड़ने का आह्वान किया है। निश्चित रूप से बतौर लेखक और पाठक मेरा 'अणुव्रत' पत्रिका से जुड़ाव बहुत पुराना है। 'अणुव्रत' पत्रिका ने परिवर्तन के कई पड़ाव पार किये हैं। आज 'अणुव्रत' पत्रिका साज-सज्जा, कलेवर एवं अन्य सभी दृष्टियों से अच्छी ऊँचाई तक पहुँच चुकी है। हर संपादक की तथा अणुव्रत संगठन की टीमों ने अपना पूरा-पूरा प्रयास किया, जिसकी फलश्रुति आज देखी दी जा सकती है।

अणुव्रत अमृत महोत्सव के तहत संस्था की स्वयं की नवीन प्रदत्त बस 'अणुव्रत वाहिनी' एवं उसके साथ चल रहे अणुव्रत के कार्यकर्ताओं के समाचार पढ़े। मुझे लगा कि गुरुदेव की इससे पहले की सुदीर्घ यात्रा में जो कमी रही, उसकी पूर्ति आप कर रहे हैं। यही सही माध्यम है जिससे आचार्य प्रवर की यात्रा का कई गुना लाभ मिल सकता है। कोई नहीं जागा, आप जागे हैं, बधाई। इस क्रम को निरंतर पूरे वर्ष तक जारी रखें।

- पदमचंद पटावरी, राजसमंद

अणुव्रत का दर्शन देता है ताकत

अणुव्रत पत्रिका का जनवरी अंक यूं तो बहुत पहले ही मिल गया था लेकिन व्यस्तताओं के कारण देर से पढ़ पायी। अन्य अंक की तरह यह अंक भी काफी ज्ञानप्रद है। इसमें साहित्य के साथ-साथ कई गंभीर आलेख भी हैं जिनसे काफी जानकारी मिलती है। इस अंक में यह भी जिक्र है कि एक ओर देश आजादी के 75 साल पूरे होने पर अमृत महोत्सव मना रहा है, वहीं अणुव्रत आंदोलन अपने 75वें वर्ष में अणुव्रत अमृत महोत्सव के माध्यम से आजादी के असली अर्थ को पुनर्स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।

अणुव्रत का दर्शन नागरिक को उसकी अपनी ताकत देता है, उसे भीतर से मजबूत बनाता है। एक मजबूत नागरिक ही देश की धुरी होता है। इसे संयोग कहें या नियति, जब आजाद भारत के लिए संविधान बनाने की प्रक्रिया चल रही थी, उसी समय आचार्य तुलसी के मन में स्वतंत्र भारत के नागरिकों के लिए एक आचार संहिता का विचार आकार ले रहा था। जिस साल संविधान सभा ने देश के संविधान का प्रारूप स्वीकार किया, उसी वर्ष आचार्य तुलसी ने राजस्थान में अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत की आचार संहिता एक आदर्श नागरिक निर्माण की व्यावहारिक प्रयोगशाला है। हर अंक को संग्रहणीय अंक के रूप में संजोने लायक बनाने के लिए अणुव्रत पत्रिका की पूरी टीम को हार्दिक बधाई।

-सिनीवाली, गाजियाबाद

संग्रहणीय और मननीय अंक

"अणुव्रत" का जून अंक अणुव्रत चेतना के प्रखर व्याख्याकार सर्वश्री आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ और आचार्य महाश्रमण के मंगल उपदेश व गहन चिन्तन से युक्त अभिव्यंजना की मंजूषा से भरा हुआ है। "संकल्पों की मशाल" जहां नये स्वप्न देखने की चेतना के जागरण और बदलते परिवेश में युग चेतना के नये रूपों को हमारे समक्ष रखने का उपक्रम है। वहीं "व्रत का आधार" आलेख में आचार्य महाप्रज्ञ आत्मिक उत्थान के साथ सामाजिक उत्थान का संदेश देते हुए व्रतों के द्वारा मनुष्य जीवन को संवृत्त यानी ढंकने का संदेश देते हैं और कहते हैं कि जिसका जीवन संवृत्त है, उस पर बाहरी प्रभाव नहीं होता है। व्रत का आधार यही है। स्वाध्याय की प्रासंगिकता को रेखांकित करने वाला आचार्य श्री महाश्रमण का शुभाशीष "स्वाध्याय से क्या मिलेगा" अत्यधिक हृदयंगम करने वाला रहा। "अणुव्रत"की सामग्री को ग्रहण करने की क्षमता विकसित करने की स्थिति, परिस्थिति और शर्त को संपादकीय में बड़े स्पष्ट शब्दों में समझाया गया है। विद्वान संपादक का मानना है कि व्यावहारिक संप्रयोगों से जुड़कर ही जीवन में अहिंसा, सत्य, नैतिकता, न्याय की उपयोगिता बनती है।

डॉ. नरेन्द्र शर्मा "कुसुम", रमेश चंद्र शर्मा और सिद्धार्थ शर्मा के आलेख भी हृदयंगम करने योग्य हैं। डॉ. पूनम गुजरानी और मनोज जैन मधुर की कविताएं दिल को छूने वाली हैं। सुधा आदेश की कहानी 'लाखों की लॉटरी' पारिवारिक सम्बन्धों के यथार्थ से अवगत कराने के साथ ही व्यावहारिक धरातल पर सामाजिक

सरोकार को रूपायित करती है। Sheila Fling का आलेख The Psychology of Peace एक नितान्त नये विषयगत अनुभव से मुझे भिगो गया। इसे निरंतर समझने की कोशिश कर रहा हूँ। कुल मिलाकर यह अंक संग्रहणीय और मननीय है।

-डॉ. राकेश तैलंग, कांकरोली

नैतिक चेतना का संदेश देने वाला अंक

"अणुव्रत" का जून अंक पीडीएफ के रूप में प्राप्त हुआ, बहुत-बहुत धन्यवाद। आचार्य श्री तुलसी का आलेख "संकल्पों की मशाल" बहुत ही ज्ञानवर्धक है। अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष में अणुव्रत यात्रा के दौरान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जन-जन को सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश देने के साथ ही उन्हें संकल्पित भी करा रहे हैं। आज अगर स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण करना है तो सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संकल्प हमें लेना ही होगा। डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' का आलेख "सत्य और अहिंसा का यथार्थ" अत्यंत सारगर्भित लगा। उन्होंने बड़े ही पते की बात कही है कि हिंसा का मतलब केवल किसी को मारना नहीं है, अपितु हिंसा कार्मिक, वाचिक और मानसिक भी हो सकती है। नैतिक चेतना का संदेश देने वाला यह अंक पठनीय और संग्रहणीय है। श्रेष्ठ प्रस्तुति के लिए संपूर्ण संपादकीय टीम को बधाई और ढेर सारी शुभकामनाएं।

-ताराचंद मकसाने, नवी मुम्बई

अणुव्रत : एक आदर्श शिक्षक

आज के दौर में व्हाट्सएप पर साहित्य के नाम पर जो कुछ परोसा जा रहा है और जनता-जनार्दन के मन-मस्तिष्क में गंदगी जमा हो रही है, ऐसे समय में 'अणुव्रत' पत्रिका एक आदर्श शिक्षक व मार्गदर्शक बनकर युवा पीढ़ी को आदर्श संस्कारों की सीख देकर उनका जीवन संवारने का नेक कार्य कर रही है। इसके लिए संपूर्ण संपादक मंडल धन्यवाद व साधुवाद का पात्र है।

जो कार्य शिक्षण संस्थान में होना चाहिए, वह कार्य वे मोटी फीस लेकर भी नहीं कर रहे हैं और 'अणुव्रत' पत्रिका एक आदर्श शिक्षक बनकर वह कार्य कर रही है। यह पत्रिका युवा पीढ़ी को एक नयी दशा, नयी दिशा व आदर्श संस्कार देकर उन्हें चरित्रवान बनाने का कार्य कर रही है, जो वंदनीय एवं सराहनीय है।

-सुनील कुमार माथुर, जोधपुर

प्रत्येक घर में होनी चाहिए 'अणुव्रत'

आज दिन-ब-दिन मानवीय मूल्यों का क्षरण हो रहा है। ऐसे समय में "अहिंसक नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि" को अपना ध्येय वाक्य मानने वाली अणुव्रत पत्रिका अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जिस संजीदगी से खड़ी है, वह काबिले तारीफ है। बचपन में घर के दालान में बाबा को 'कल्याण' पढ़ते देखता था। कभी-कभार उसके पन्ने मैं भी पलट लिया करता था। पिछले दिनों 'अणुव्रत' पत्रिका का जुलाई अंक पीडीएफ के रूप में मिला। आद्योपांत पढ़ गया। आलेख, कविता, कहानी... एक से बढ़कर एक। ऐसा लगता है जैसे 'अणुव्रत' महज एक पत्रिका नहीं, बल्कि समाज में अहिंसा, सहिष्णुता, वसुधैव कुटुंबकम् की संकल्पना को आकार देने का प्रयास है। 'अणुव्रत' का हर अंक प्रत्येक घर की बुक सेल्फ में होना ही चाहिए।

-नवलेश कुमार, वारिसलीगंज

Sprinkles Water on Decaying Plants

Apropos to the special edition of 'Anuvrat' May-June 2022 I have to say that this edition covers almost all dimensions of human life to be followed. It sometimes touches even unseen fields and draws the attention of the readers concerned. Moreover the editorial of this special edition guides the reader to become more practical in his life, to spare time to talk with oneselves. One must have longing for hearing the inner voice of one's conscience. Article by Kusum Agrawal gently reveals the way to prohibition by observing even slicing fasting and vrat.

S. Bhagyam Sharma's article on silence smoothly penetrates into the mind of a reader. Though keeping mum over issues is not an easy affair yet by regular exercise in this direction, one can bring positive outcome. We can sometimes use silence as a weapon.

Dr. Krishna Kr. Rattu has focused brilliantly on the ongoing issues of intemperance in the field of journalism. Reading articles on different temperaments is proving thought provoking. It inculcates the way of life, the style of life that must be cool and calm. Really this special edition sprinkles water on the decaying plants.

All articles somehow advocate the ideology of peace and tranquility a man needs. Story Panchwin Beti and short story Mere Hisse Me Maa Aayi, attract readers easily. Pictorial presentation by Manoj Trivedi, art and creativity by Ashutosh Roy, Layout by Manish Soni are very very decent and modest. Efforts made by editor/ co editor are praiseworthy sans whom the magazine wouldn't have been in this collectible shape. Altogether this special edition of ANUVRAT is archiving. I do wish for its sustainability till the existence of this universe.

-Rajesh Pathak, Giridih

धर्म उत्कृष्ट मंगल है : आचार्य श्री महाश्रमण

अणुव्रत अनुशास्ता का मुंबई के नंदनवन में हुआ भव्य चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

मुंबई। अणुव्रत अनुशास्ता अणुव्रत यात्रा प्रणेता आचार्य श्री महाश्रमणजी ने चतुर्मास के लिए अपनी धवल सेना के साथ 28 जून को सुबह नंदनवन परिसर में पावन प्रवेश किया।

उपस्थित जनमेदिनी को अमृत रस का पान करवाते हुए आचार्य श्री ने फरमाया कि हमारी दुनिया में मंगल की कामना की जाती है। आदमी विघ्न-बाधाओं से बचने की इच्छा करता है और बचने का प्रयास भी करता है। शुभ मुहूर्त में प्रवेश करते हैं, इसमें भी मंगल की कामना अन्तर्निहित हो सकती है। अनेक कार्यों में मंगल की कामना होती है। आचार्य प्रवर ने कहा, "कुछ पदार्थ भी मंगल के रूप में आसेवित किये जाते हैं। शास्त्रकार ने मंगल के संदर्भ में अत्यन्त महत्वपूर्ण बात बतायी है कि धर्म उत्कृष्ट मंगल है। मेरा भी मंतव्य है कि धर्म से बढ़कर दूसरा कोई मंगल नहीं है। अहिंसा, संयम और तप में धर्म है। सम्पूर्ण आत्मशुद्धिकारक धर्म इसमें आ गया। अहिंसा आदमी के जीवन में है, धर्म का एक आयाम उसके जीवन में आ गया। संयम और तप है तो धर्म का दूसरा-तीसरा आयाम भी जीवन में आ गया। साधु-साध्वियां जो महाव्रती हैं, वे अपने आपमें मंगल हैं। मंगल पाठ सुनना भी महत्वपूर्ण मंगल है। अरहंत, सिद्ध, साधु और

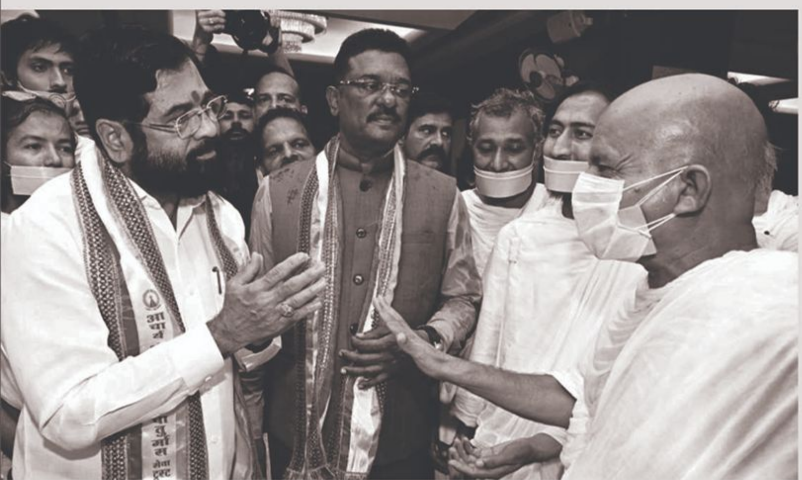

अभिनंदन हेतु श्रीचरणों में पहुँचे मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे भी आचार्य श्री महाश्रमण की सन्निधि में पहुँचे। मुख्यमंत्री ने कहा कि मैं महाराष्ट्र की धरती पर आचार्य महाश्रमणजी का हृदय से स्वागत अभिनंदन करता हूँ। महाराष्ट्र संतों की भूमि, पावन भूमि है। आपके आने से और समृद्ध भी हो जाएगी। आप एक मिशन पर कार्य कर रहे हैं। आपने 55000 किमी की यात्रा की है। हम आपका आशीर्वाद लेने आये हैं। हमने भी ड्रग फ्री मुंबई पर कार्य शुरू किया है। पूज्य प्रवर ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के बारे में समझाते हुए आशीर्वचन फरमाया। व्यवस्था समिति की ओर से मुख्यमंत्री शिन्दे का सम्मान किया गया।

केवली प्रज्ञप्त धर्म मंगल है।" अणुव्रत अनुशास्ता ने कहा, "सन् 2019 के मर्यादा महोत्सव में मैंने मुंबई चतुर्मास हेतु कहा था, उसके अनुसार मुंबई आकर चातुर्मासिक प्रवेश कर लिया। गुरुदेव तुलसी ने सन् 1954 का चतुर्मास एवं सन् 1955 का मर्यादा महोत्सव मुंबई में किया था। सन् 2003 में आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने मुंबई में मर्यादा महोत्सव एवं लंबा प्रवास किया था।"

आचार्य प्रवर ने 'भिक्षु म्हारे प्रगट्याजी भरत खेतर में' गीत के दो पद्यों के सुमधुर संगान के साथ फरमाया कि आचार्य भिक्षु हमारे आद्य प्रवर्तक थे। गुरुदेव तुलसी व आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का बहुत उपकार रहा है। 'कैसी वह कोमल काया रे' एवं 'पूज्यवर महाप्रज्ञ भगवान' गीत के पद्यों का पूज्यवर ने संगान करवाया एवं शासन माता साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी का भी स्मरण किया।

पूज्य प्रवर ने कहा कि हमने डॉ. महावीर मुनि सहित 49 संतों के साथ प्रवेश किया है। साध्वीप्रमुखा विश्रुत विभाजी आदि 125 साध्वियों का प्रवेश हुआ है। सभी का स्वास्थ्य अच्छा रहे, शुभ योग में रहे। यह पाँच महीने का चतुर्मास धर्ममय हो। व्यवस्था समिति के कार्यकर्ताओं में अच्छा उत्साह रहे। मर्यादा महोत्सव भी वृहत्तर मुंबई में ही है। पूर्वाचार्यों का स्मरण करते हुए हमारा चतुर्मास धर्ममय रहे।

बहुश्रुत परिषद् के पूर्व संयोजक मुनि महेन्द्रकुमार का स्मरण करते हुए आचार्य प्रवर ने फरमाया कि मैं उनके साथ के पाँच संतों में उनको देख रहा हूँ। साध्वी प्रमुखाजी के प्रवास स्थल का नाम अनुकम्पा भवन कर दिया, हमारे प्रवास स्थल की पहचान भिक्षु विहार है। आचार्य प्रवर ने पास में साध्वियों के एक भवन का नाम मैत्री भवन तथा साध्वी प्रमुखाजी के प्रवास स्थल के पास स्थित एक अन्य भवन का नाम अहिंसा भवन व समणियों के प्रवास स्थल की पहचान सौहार्द भवन करने की घोषणा की।

साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने फरमाया कि पूज्यवर ने सपना देखा था कि मुझे मुंबई चतुर्मास करना है। संकल्प किया और चरणों को गतिशील बनाते हुए चले, राजस्थान से लगभग 2500 किमी चलकर मुंबई पहुँचे हैं। चारों ओर उत्साह का वातावरण है। महापरिव्राजक की महायात्रा को विश्राम मिल रहा है। भौतिक सुख-सुविधाओं से सुसज्जित महानगरी में महायायावर कल्पवृक्ष बनकर आये हैं। महासूर्य से आलोक प्राप्त करने का प्रयास करें।

आचार्य श्री के स्वागत में श्रद्धासिक्त भावों की अभिव्यक्ति

आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, मुम्बई के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, स्वागताध्यक्ष सुरेन्द्र बोरड़ पटावरी, अणुविभा के न्यासी सुमतिचंद गोठी, अणुव्रत समिति मुम्बई के अध्यक्ष रोशनलाल मेहता सहित अनेक महानुभावों ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त भावों को अभिव्यक्तियां दीं। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार ने किया

अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के बैनर का विमोचन

मुंबई। अणुव्रत अनुशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा नंदनवन में 19 जुलाई को **अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट 2023** के बैनर का विमोचन किया गया। इस अवसर पर अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री भीखमचंद सुराणा, उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, सहमंत्री मनोज सिंघवी, एसीसी के राष्ट्रीय संयोजक एवं संगठन मंत्री राजेश चावत एवं एसीसी के कर्नाटक राज्य प्रभारी लाभेश कांसवा, प्रकाशन प्रभारी देवेंद्र डागलिया, जीवन विज्ञान राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी, सेंट्रल जोन की संगठन मंत्री साधना कोठारी एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। चार चरणों - स्कूल स्तर, जिला स्तर, राज्य स्तर और राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट का मुख्य उद्देश्य नयी पीढ़ी में रचनात्मकता और सकरात्मकता को प्रोत्साहित करना है। नैतिक मूल्यों का विकास तथा अणुव्रत का प्रचार-प्रसार है। इसके तहत 'असली आजादी अपनाओ' विषय पर गीत गायन प्रतियोगिता के अलावा निबंध प्रतियोगिता, काव्य लेखन प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता और चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। इसमें अठारह राज्यों के 500 से अधिक विद्यालयों में एक लाख बच्चों को संभागी बनाये जाने की योजना है।

बच्चों के सर्वांगीण विकास में उपयोगी साबित होगा

Anuvrat Balodaya's

KIDZONE

Fun | Creativity | Learning

आचार्य श्री महाश्रमण के मंगल पाठ से मुंबई में किडजोन का शुभारंभ

मुंबई। आचार्य श्री महाश्रमण के चतुर्मास प्रवास स्थन नंदनवन में 19 जुलाई को अणुव्रत विश्व भारती के अणुव्रत बालोदय किडजोन का आचार्यश्री के मंगल पाठ से शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार किडजोन परिसर का अवलोकन करने के बाद कहा कि आज हम परिवर्तन का दौर देख रहे हैं। इस दौर में व्यक्ति अपने मूल्यों को, अपने विचारों को, अपने भावों को कैसे स्वस्थ रख सके, यह उसके सोच पर निर्भर करता है। उसी सोच का परिणाम अणुव्रत है, उसी सोच का परिणाम प्रेक्षाध्यान है। किडजोन बच्चों के लिए बनाया गया है। यहां आकर बच्चे जरूर कुछ सीखेंगे। किड जोन बच्चों के सर्वांगीण विकास में काफी उपयोगी साबित होगा।

अणुविभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने कहा कि इस बार किडजोन में बच्चों के आकर्षण और उनके ज्ञान में अभिवृद्धि के लिए कई नये आयाम जोड़े गये हैं। इससे पहले प्रायोजक राकेश कठोतिया परिवार ने किडजोन का उद्घाटन किया। अणुविभा की ओर से प्रायोजक राकेश कठोतिया परिवार का स्वागत किया गया। प्रायोजक आरती कठोतिया, अणुविभा के उपाध्यक्ष विनोद कोठारी और किडजोन के संयोजक सुमन चपलोत ने भी विचार रखे।

कार्यक्रम में अणुविभा के उपाध्यक्ष एवं अधिवेशन संयोजक विनोद कोठारी, महामंत्री भीखमचंद सुराणा, सहमंत्री मनोज सिंघवी, संगठन मंत्री राजेश चावत, महाराष्ट्र प्रभारी रमेश धोका, अणुविभा मीडिया सदस्य महावीर बडाला, अणुव्रत समिति मुंबई के अध्यक्ष रोशनलाल मेहता, मंत्री राजेश चौधरी, सहसंयोजक मीना बडाला, उपाध्यक्ष विजय संचेती, चंद्रप्रकाश बोहरा, सहमंत्री प्रियंका सिंघवी, मनोहर कच्छारा, भूपेंद्र बागरेचा, किरण परमार, मुकेश मादरेचा, रौनक डागलिया, सुरेश बाफना, नवरत्न दुग्गड़, मंजू संचेती, विमला कोठारी, रमेश हिंगड़ तथा अन्य पदाधिकारी और कार्यकर्ता उपस्थित थे।

बच्चे समस्या नहीं, समाधान देने वाले बनें : आचार्य महाश्रमण

जीवन विज्ञान चिन्तन संगोष्ठी में 9 राज्यों से जुटे विद्यालय संचालक

■■ संयोजक रमेश पटावरी की रिपोर्ट ■■

मुंबई। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा है कि शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने एवं उनके अज्ञान को दूर कर उन्हें ज्ञानवान एवं चरित्रवान बनाने का महत्वपूर्ण कार्य होता है। वर्तमान में बच्चों को सारी भौतिक सुख-सुविधाओं के साथ प्रचुर मात्रा में उपलब्ध शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने के अवसर पहले की अपेक्षा अधिक सुगमता से मिल रहे हैं। ऐसी स्थिति में उनको लौकिक विद्या के साथ-साथ अध्यात्म की शिक्षा भी मिले तो संतुलन बना रह सकता है। अन्यथा बालक स्वयं के लिए, परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए तनावोत्पादक परिस्थितियां पैदा करने वाला बन सकता है। यदि जीवन विज्ञान और अध्यात्म की शिक्षा के माध्यम से संस्कारों की शिक्षा प्राप्त हो तो बच्चा समस्या पैदा करने वाला नहीं, अपितु समाधान देने वाला बन सकता है। जीवन विज्ञान के विभिन्न प्रयोगों द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास संभव है। आचार्य श्री अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की ओर से चतुर्मास स्थल नंदनवन, मुम्बई में 19 जुलाई को आयोजित जीवन विज्ञान चिन्तन संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे।

आचार्यश्री ने फरमाया कि जीवन विज्ञान का उपक्रम परम पूजनीय अणुव्रत अनुशास्ता अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के समय में प्रारम्भ हुआ था। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी का पथदर्शन, निर्देशन उसमें जुड़ा हुआ रहा और आज जीवन विज्ञान ने भी कुछ यात्रा की है, स्थान परिवर्तन भी किया है। कभी यह जीवन विज्ञान जैन विश्व भारती के तत्त्वावधान में चला करता था और आज अणुव्रत विश्व भारती के तत्त्वावधान में चल रहा है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ से जुड़े हुए जो विद्या संस्थान हैं, भले वे तेरापंथी सभाओं के द्वारा संचालित हों या व्यक्तिगत तेरापंथी समाज के लोगों से जुड़े हुए हों, वहां जीवन विज्ञान पर भी चिन्तन-मंथन हो सकता है। विद्यार्थियों को अच्छी बातें जानने को मिलें और वे अच्छी बातें उनके मन को प्रभावित कर दें तो उनका जीवन व्यवहार भी अच्छा बन सकता है। अच्छे संस्कार भी आ सकते हैं। जीवन विज्ञान की बात तो सबके लिए है।

जैन-अजैन कोई भी हों, ये प्रयोग सब के लिए हैं। उनसे विद्यार्थियों में अच्छे संस्कार आएं, उनका अच्छा व्यवहार रहे, अच्छे संकल्प जागें, उनकी चेतना में संयम जागे, क्रोध पर नियंत्रण कैसे करना? कैसे ज्यादा इच्छाओं को अवांछनीय रूप में नहीं बढ़ाना? वांट (Want) क्या हैं और नीड (Need) कितनी है? आपको पैसा कमाने की इच्छा हो सकती है तो व्यक्तिगत जीवन में वांट कितनी और नीड कितनी? इच्छा, लालसा कितनी और शरीर की अपेक्षा कितनी? अपेक्षा नहीं है तो ज्यादा संग्रह क्यों करना चाहिए? ये बातें अच्छे संस्कार देने वाली हो सकती हैं। आज के उपक्रम में विभिन्न लोग उपस्थित हुए हैं, उनके यहाँ भले प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के रूप में शुरू हो, जो जैसी अनुकूलता हो, वैसे चिन्तन-मंथन किया जा सकता है। जो भी हो सके अच्छा हो, यह मंगलकामना है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ साहित्य में उल्लेखित जीवन विज्ञान संबंधी विभिन्न संस्मरणों के संकलन को पढ़कर सुनाया। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा रचित प्रायः सभी ग्रन्थों में जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं अणुव्रत के संदर्भ में उल्लेख मिलता है। उन्होंने हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात आदि अनेक राज्यों में पूर्व में जीवन विज्ञान की गतिविधियों की जानकारी प्रदान की।

मुख्य मुनिप्रवर मुनिश्री महावीरकुमारजी ने कहा कि अणुव्रत का सैद्धान्तिक पक्ष और प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों का सम्मिलित रूप ही जीवन विज्ञान है। आने वाले समय में भारत के सभी स्कूलों के पुस्तकालय में जीवन विज्ञान की पुस्तकें उपलब्ध हो सकें, ऐसा प्रयास किया जाना चाहिए। साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने जीवन विज्ञान को शिक्षा जगत के लिए अनिवार्य अवदान बताते हुए कहा कि जीवन विज्ञान से आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्ति का निर्माण संभव है। मैंने स्वयं भी जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) से जीवन विज्ञान एवं योग विषय में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है।

द्वितीय सत्र में मुनिश्री योगेशकुमारजी एवं जीवन विज्ञान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमारजी ने कहा कि देशभर के अनेक स्कूलों में जीवन विज्ञान का कार्य चल रहा है और बहुत स्थानों पर इस दिशा में कार्य हो रहा है। अब इसे एक मजबूत संगठनात्मक स्वरूप प्रदान करते हुए एकरूपता से आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर ने आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में निवेदन किया कि जबसे अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी को जीवन विज्ञान प्रकल्प का दायित्व मिला है, तब से पूर्व में रहे जीवन विज्ञान के कार्यकर्तागण और वर्तमान टीम ने मिलकर आपश्री के निर्देशन में जो कार्य किया है, वह हम सबको अभिभूत करने वाला है। इसमें हमारे आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमारजी के साथ अनेक चारित्रात्माओं ने सहयोग प्रदान किया है। मुनिश्री धर्मेशकुमारजी का भी हमें समय-समय पर मार्गदर्शन मिलता है। अविनाश नाहर ने जीवन विज्ञान पाठ्यपुस्तकों के प्रकाशन तथा जीवन विज्ञान संबंधी प्रशिक्षण शिविरों की संक्षिप्त जानकारी दी।

नाहर ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि देशभर में तेरापंथ समाज द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं में जीवन विज्ञान के प्रति उत्सुकता है और वे इसे अपने-अपने विद्यालयों में प्रारम्भ भी करना चाहते हैं परन्तु जानकारी एवं पर्याप्त संसाधनों के अभाव में ऐसा कर पाने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। अब जीवन विज्ञान के प्रकल्प का कार्य देशभर में कार्यरत अणुव्रत समितियों के मजबूत संगठन के माध्यम से प्रारम्भ किया गया है। विगत लगभग दो वर्षों से इस दिशा में काफी प्रगति हुई है। उन्होंने जीवन

विज्ञान के राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी एवं उनकी टीम के श्रम की अनुमोदना करते हुए उत्साहवर्द्धन किया। अणुविभा के महामंत्री भीखम सुराणा ने संगोष्ठी के उद्देश्यों एवं भावी योजनाओं से अवगत करवाया।

संगोष्ठी में शामिल जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय परामर्शक मूलचन्द नाहर, अणुविभा उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, माला कातरेला, संगठन मंत्री (मध्यांचल) साधना कोठारी, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचन्द लूंकड़, श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के पूर्व अध्यक्ष किशनलाल डागलिया, जीवन विज्ञान अकादमी छत्तीसगढ़, मध्य-प्रदेश एवं कर्नाटक के राज्य-संयोजक क्रमशः दानमल पोरवाल, सुरेश कोठारी, ललित आच्छा, तुलसी साधना शिखर समिति राजसमंद के अध्यक्ष अरुण कोठारी, आचार्य श्री महाश्रमण चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, अरविन्द सेठिया, प्यारचन्द मेहता, भीकमचन्द कोठारी 'भ्रमर', अणुव्रत समिति मुम्बई अध्यक्ष रोशनलाल मेहता, मंत्री राजेश चौधरी तथा जीवन विज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत कार्यकर्ताओं से स्कूल, कॉलेजों में जीवन विज्ञान की गतिविधियों को प्रारम्भ करने की दिशा में सकारात्मक सहयोग का आह्वान किया गया।

अणुविभा के जीवन विज्ञान विभाग के राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रभारी राकेश खटेड़ ने पावर प्वाइंट के माध्यम से जीवन विज्ञान का परिचय प्रस्तुत किया। सत्र का सफल संचालन माला कातरेला ने तथा आभार ज्ञापन राष्ट्रीय सह-संयोजक कमल बैंगाणी ने किया। इससे पहले अणुव्रत समिति, मुम्बई के अध्यक्ष रोशनलाल मेहता एवं समिति कार्यकर्ताओं ने अणुव्रत दुपट्टे से सभी संभागियों का स्वागत किया।

संगोष्ठी के वर्धापन सत्र में जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम एवं पाठ्य-पुस्तकों के संदर्भ में जानकारी देने के साथ ही भावी योजना पर भी विचार-विमर्श हुआ। संगोष्ठी में मेगनस ग्लोबल स्कूल, वर्द्धमान (पश्चिम बंगाल) के संचालक राजेश सुराणा ने सर्वप्रथम अणुविभा के जीवन विज्ञान विभाग के साथ अनुबंध पर राष्ट्रीय अध्यक्ष अविनाश नाहर, जीवन विज्ञान के राष्ट्रीय संयोजक रमेश पटावरी के साथ हस्ताक्षर करते हुए अपने विद्यालय के पाठ्यक्रम में जीवन विज्ञान को सम्मिलित करने का दृढ़ संकल्प व्यक्त किया। जतनदेवी डागा हायर सैकेण्डरी स्कूल, रायपुर के संचालक मनीष डागा, अमित बोलिया विद्या निकेतन, गंगापुर के चेयरमैन प्रकाशचन्द बोलिया, संस्कार इंटरनेशनल स्कूल के प्रबन्धक मुकेश मेहता, प्री-स्टार पब्लिक स्कूल, छोटी खाटू के प्राचार्य मोहित शर्मा तथा महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल, भीलवाड़ा के निदेशक मदनलाल टोडरवाल ने भी अनुबंध पर हस्ताक्षर कर जीवन विज्ञान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की।

सत्र का सफल संचालन रमेश पटावरी ने किया। संगोष्ठी में 9 राज्यों के 65 प्रतिभागियों के साथ मुम्बई क्षेत्र के अनेक कार्यकर्तागण शामिल हुए।

अणुव्रत समिति नेतृत्व
2023-25
नव-निर्वाचित अध्यक्ष

लावासरदारगढ़

श्री सत्यदेव शर्मा

अहमदाबाद

श्री प्रकाशचंद धींग

रायपुरिया

श्री प्रकाशचंद कठोतिया

इस्लामपुर

श्रीमती ललिता धारेवा

थांदला

श्री रतनलाल जैन

करवड़

श्री तरुण मण्डोत

बामनिया

श्री महेन्द्र मेहता

धतुरिया बोलासा

श्री दिलीप बरबेटा

दिनहाटा

श्री विनोद कुमार

बल्लारी

श्री एस.बी. पारसमल

:: हार्दिक बधाई ::

नयी पीढ़ी के नव निर्माण को समर्पित राष्ट्रीय बाल मासिक पत्रिका

बच्चों का देश

का

रजत जयंती वर्ष में प्रवेश

अणुविभा के महत्वपूर्ण मासिक प्रकाशन 'बच्चों का देश' राष्ट्रीय बाल पत्रिका ने एक सुदीर्घ सफल यात्रा पूर्ण कर रजत जयंती वर्ष में प्रवेश कर लिया है। **15 अगस्त 1999** को जयपुर, राजस्थान से पत्रिका का प्रवेशांक प्रकाशित हुआ था। अणुविभा के अध्यक्ष अविनाश नाहर ने बताया कि सन 2018 से 'बच्चों का देश' पत्रिका के नियमित प्रकाशन की जिम्मेदारी अणुविभा के कन्धों पर है। उन्होंने बताया कि वर्तमान वर्ष अणुव्रत आंदोलन का भी हीरक जयंती वर्ष है जिसे 'अणुव्रत अमृत महोत्सव' के रूप में देश-विदेश में मनाया जा रहा है।

अणुव्रत आंदोलन के अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण का आशीर्वाद पत्रिका की ताकत है, प्रतिमाह जिनके हाथों में पहुँच कर यह पत्रिका कृतार्थता का अनुभव करती है। अणुव्रत अनुशास्ता का आशीर्वाद अणुव्रत आंदोलन और अणुव्रत कार्यकर्ताओं की गतिशीलता का ऊर्जस्व स्रोत है। अणुव्रत का मानवतावादी दर्शन बिना किसी जाति, धर्म या वर्ग के भेदभाव के जन-जन में नैतिकता, सद्भावना, अहिंसा, नशामुक्ति, पर्यावरण और संयम का सन्देश देता है और संस्कार बचपन में ही सम्पुष्ट इस दिशा में 'बच्चों का देश' रचनात्मक भूमिका निभा रही है।

'बच्चों का देश' से जुड़े नन्हे पाठकों, लेखकों और शुभचिंतकों के देशभर में फैले आत्मीय परिवार को पत्रिका की 25वीं वर्षगाँठ के शुभ अवसर पर हार्दिक बधाइयाँ और शुभकामनाएँ देते हुए पत्रिका के संपादक संचय जैन ने बताया कि बच्चों और अभिभावकों दोनों की पसंदीदा यह पत्रिका अपने मूल सिद्धांतों पर कायम रहते हुए नयी पीढ़ी के जीवन को मानवीय मूल्यों से समृद्ध बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत रही है। उन्होंने बताया कि बच्चों के मनोविज्ञान को समझते हुए उसी अनुरूप सामग्री प्रकाशित करना, उपदेशात्मक भाषा से बचना और सहज-सरल भाषा में बच्चों से संवाद कायम करना, हिंसा, आक्रोश जैसी नकारात्मक भावनाओं को उभारने वाले साहित्य को प्रकाशित न करना, भाषागत शुद्धता को गम्भीरता के साथ सुनिश्चित करना और बालमन के अनुरूप रंग-बिरंगे चित्रों व साज-सज्जा को प्राथमिकता देना जैसे मानदण्ड 'बच्चों 'का देश' पत्रिका को विशिष्ट पहचान देते हैं।

उल्लेखनीय है कि शुरुआत से लेकर लगभग 2 दशकों तक इस पत्रिका ने भागीरथी सेवा प्रन्यास, जयपुर के बैनर तले राष्ट्रीय फलक पर प्रतिष्ठा प्राप्त की और बाल पाठकों के दिल में स्थान बनाया। इसके संरक्षक और अणुविभा के संस्थापक श्री मोहनभाई की रचनात्मक सोच का ही यह परिणाम है कि अणुविभा आज राजसमंद के केंद्र से अनेक बालोपयोगी प्रकल्पों का सफल संचालन कर रही है। 'बच्चों का देश' इनमें अपना प्रमुख स्थान रखती है। इस पत्रिका की गौरवशाली यात्रा में मोहनभाई और उनके परिवार - श्री पंचशील जैन, स्वर्गीय कल्पना जैन और वर्तमान संपादक श्री संचय जैन की सेवाएँ निश्चय ही उल्लेखनीय रही हैं।

'बच्चों का देश' के सफल प्रकाशन में संपादक संचय जैन, सह संपादक प्रकाश तातेड़ और सहयोगी टीम के सदस्य चंद्रशेखर देराश्री व गजेंद्र दाहिमा के साथ-साथ समस्त लेखकगण, चित्रकार व स्तम्भकार के प्रति अणुविभा परिवार अहोभाव व्यक्त करते हुए पत्रिका के शुभ भविष्य की मंगलकामना करता है। देशभर में सक्रिय अणुव्रत समितियां, संयोजक व समस्त अणुव्रत कार्यकर्ता भी पत्रिका के प्रसार में उनके समर्पित सहयोग के लिए साधुवाद के पात्र हैं।

अणुव्रत गौरव धनराज बैद का वर्धापन

अणुव्रत गौरव धनराज बैद ने संयमित जीवनशैली से श्रावक जीवन की प्रतिमाओं की साधना का विरल उदाहरण प्रस्तुत किया है। अणुव्रत महासमिति एवं अणुविभा के अध्यक्ष का दायित्व निभाने वाले धनराज बैद ने ऐतिहासिक तप साधना की और अब पूर्णतः महाव्रती बनने की दिशा में प्रस्थित होकर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के श्रीचरणों में उपस्थित हो गये हैं। विदाई से पूर्व अणुव्रत विश्व भारती के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा ने अणुव्रत पटका पहनाकर श्री बैद का भावभीना वर्धापन किया। प्रशस्ति पत्र का वाचन संगठन मंत्री डॉ. कुसुम लुनिया ने किया। अणुव्रत पत्रिका प्रसार प्रभारी सुरेन्द्र नाहटा, अणुव्रत समिति दिल्ली के अध्यक्ष शान्तिलाल पटावरी, अणुव्रत समिति गाजियाबाद की अध्यक्ष कुसुम सुराणा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष कमल बैंगानी, मंत्री धनपत नाहटा, सहमंत्री ललिता मुकीम, कार्यसमिति सदस्य कमल कल्पना सेठिया आदि ने सामूहिक रूप में प्रशस्ति पत्र भेंट करके वर्धापना व मंगलकामनाएं प्रदान कीं।

जीवन विज्ञान और अणुव्रत का कार्यक्रम

बल्लारी। अणुव्रत समिति की ओर से पार्वती नगर के गवर्नमेंट मॉडल एच. पी. स्कूल में डॉ. मुनिश्री पुलकितकुमार एवं नचिकेता मुनिश्री आदित्य कुमार के सान्निध्य में 24 जून को जीवन विज्ञान और अणुव्रत का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मुख्य अतिथि बल्लारी नगर की पूर्व महापौर एवं समिति की मार्गदर्शक पार्वती इंदुशेखर ने छात्र-छात्राओं को जीवन विज्ञान के माध्यम से सरल जीवन जीने की प्रेरणा दी। उपासिका प्रवक्ता सरोजजी ने कन्नड़ भाषा में अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों की जानकारी एक कहानी के माध्यम से प्रस्तुत की। डॉ. मुनिश्री पुलकित कुमार ने हिन्दी के साथ कन्नड़ भाषा में अध्यापिकाओं एवं छात्र-छात्राओं को अपने जीवन को विज्ञान के साथ कैसे जिया जाये, इसके बारे में समझाया और संकल्प भी करवाये। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति ने कक्षा 6, 7 व 8 के 150 छात्र-छात्राओं को स्कूल बैग वितरित किये। प्रधानाध्यापिका लीमा रोज ने मुनिश्री के चरणों में कृतज्ञता अर्पित की। आभार ज्ञापन समिति की मंत्री प्रवीणा ने किया। कार्यक्रम का संचालन पूर्व

अणुव्रत समिति नेतृत्व 2023-25 नव-निर्वाचित अध्यक्ष

सादुलपुर राजगढ़

श्री श्रवण कोचर

सूरतगढ़

श्री लाजपतराय भाटिया

दिवेर

श्री गणेशराम बुनकर

सारंगी

श्री मनोज बम्बोरी

पालेड़ी उमरकोट

श्री संतोष कटारिया

फॉरबिसगंज

श्रीमती नीलम बोथरा

पाली

श्रीमती सुबुद्धि समदड़िया

जसोल

श्री पारसमल गोलछा

लाडनूं

श्री शुभकरण बैद

धरान

श्रीमती मोनिका दूगड़

:: हार्दिक बधाई ::

अध्यक्ष बसंत कुमार छाजेड़ ने किया।

अणुव्रत समिति की ओर से 30 जून को जैन मार्केट स्थित गवर्नमेंट एच. पी. हिन्दी स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में कक्षा एक से आठ तक के सभी 130 छात्र-छात्राओं को स्कूल बैग वितरित किये गये। समिति अध्यक्ष पारसमल एवं सभा अध्यक्ष कमलचंद ने अणुव्रत दुपट्टा एवं साहित्य प्रदान कर जिला शिक्षा विभाग से पधारे स्कूल के समन्वय अधिकारी लवकुमार और प्रधानाध्यापक के.रघोत्तम राव का सम्मान किया।

"नशा नाश का द्वार है" निबंध प्रतियोगिता का पारितोषिक वितरण

छापर। अणुव्रत समिति की ओर से कालू कल्याण केंद्र के सभागार में 12 जुलाई को पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर शासनश्री मुनि विजय कुमार ने कहा कि न केवल स्वास्थ्य की दृष्टि से, आर्थिक दृष्टि से, चारित्रिक दृष्टि से, पारिवारिक और सामाजिक दृष्टि से नशा व्यक्ति को नाश के द्वार

तक पहुँचा देता है। सभी विद्यार्थियों ने व्यसनमुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि प्रिंसिपल बाल भारती इंटरनेशनल स्कूल मधु शेखावत तथा विशिष्ट अतिथि कमला शर्मा प्रधानाचार्य, जिला उच्च माध्यमिक विद्यालय थे। अणुव्रत समिति की ओर से 5 जुलाई को "नशा नाश का द्वार है" विषय पर आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता में प्रथम राजश्री सोनी, द्वितीय प्रिया सुथार, तृतीय सुष्मिता कालेर व ऋतिका प्रजापत को पुरस्कृत किया गया। अन्य सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया। समिति के संरक्षक प्रदीप सुराणा और अध्यक्ष विनोद नाहटा ने विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।

जीवन विज्ञान कार्यशाला का आयोजन

भिलाई। अणुव्रत समिति एवं पोरवाल चैरिटेबल ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में नेहरू नगर के प्रेक्षा भवन में 27 जून को जीवन विज्ञान कार्यशाला का आयोजन किया गया। समणी डॉ. मानस प्रज्ञा ने छात्र-छात्राओं को आत्मविश्वास, दृढ़ संकल्प और श्रम को आत्मसात कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रेरणा दी। समणी डॉ. ज्योति प्रज्ञा ने अणुव्रत की आचार संहिता पर प्रकाश डाला। बहन

अणुव्रत समिति नेतृत्व 2023-25 नव-निर्वाचित अध्यक्ष

शाहपुरा

श्री विक्रमसिंह शेखावत

वापी

श्रीमती चंदा दूगड़

ग्रेटर सूरत

श्री विमल लोढ़ा

इचलकरणजी

श्री पंकज जोगड़

बीदासर

श्री सम्पतमल बैद

भीलवाड़ा

श्री अभिषेक कोठारी

बगड़ी नगर

श्री राजेन्द्र पोकरणा

कनाना

श्री उत्तम प्रकाश

भिलाई

श्रीमती रश्मि जैन

राजसमंद

श्री अचल धर्मावत

:: हार्दिक बधाई ::

श्रेया ने छात्र-छात्राओं को प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान, बहन शिखा ने प्रेक्षाध्यान एवं भैया अभिजीत ने संकल्प के प्रयोग का अभ्यास कराया। छात्राओं ने संगीतमय योग शृंखला की सामूहिक प्रस्तुति दी। अतिथियों ने अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट के विजेताओं को केन्द्र से प्राप्त प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिह्न वितरित किये।

अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन

बारडोली। अणुव्रत अमृत महोत्सव के तहत अणुव्रत व्याख्यानमाला का आयोजन 2 जुलाई को तेरापंथ भवन में हुआ। इस अवसर पर साध्वीश्री सोमयशा और डॉ. साध्वी सरलयशा ने

स्वस्थ समाज संरचना और अणुव्रत के बारे में जानकारी दी। अणुव्रत समिति और सिखवाल ब्राह्मण समाज द्वारा सत्य, अहिंसा और शांति के अनूप ध्वज से युक्त शोभायात्रा भी निकाली गयी। नगरपालिका प्रमुख फाल्गुनी बेन, अणुविभा की संगठन मंत्री पायल चोरड़िया, अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेश चोरड़िया और उपासिका आशा बेन चोरड़िया ने अणुव्रत का ध्वज लहरा कर रैली का शुभारंभ किया।

यूपी के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य का सम्मान

पुणे। अणुविभा की राज्य प्रभारी पुष्पा कटारिया, अणुव्रत समिति पुणे के अध्यक्ष धर्मेंद्र चोरड़िया और मंत्री हरीश श्रीश्रीमाल ने उत्तर

प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य तथा पुणे भाजपा अध्यक्ष जगदीश मुलिक का अणुव्रत डायरी प्रदान कर व दुपट्टा पहनाकर सम्मान किया। इस अवसर पर पायल धारेवा भी उपस्थित थीं।

अणुव्रत समिति नेतृत्व
2023-25
नव-निर्वाचित अध्यक्ष

बीकानेर

श्री झंवरलाल गोलछा

विराटनगर

श्री श्याम अधिकारी

पीलीबंगा

श्री सुरज प्रकाश डाबला

मोमासर

श्रीमती सुमन बाफना

वड़ोदरा

श्री राजेश मेहता

कल्याणपुरा

श्री मयूर भण्डारी

कालीदेवी

श्री कमल गधैया

कोटा

श्री रवि बुच्चा

मेघनगर

श्री अमित मेहता

बाड़मेर

श्री ओम जोशी

:: हार्दिक बधाई ::

अणुविभा

अणुव्रत आंदोलन की उत्कृष्ट पत्रिकाओं
"अणुव्रत" एवं "बच्चों का देश"
से स्वयं जुड़िए और परिचितों को भी जोड़िए

75 अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत समितियों व अणुव्रत कार्यकर्ताओं के लिए
पत्रिका सदस्यता के निर्धारित लक्ष्य पूर्ण करने पर

विशेष योजना

स्टार परफॉर्मर समिति

महानगर श्रेणी 500 सदस्य
शहर श्रेणी 200 सदस्य
कस्बा श्रेणी 100 सदस्य

15 नवम्बर 2023 तक

स्टार परफॉर्मर कार्यकर्ता

महानगर श्रेणी
एक माह में 30 सदस्य तथा
15 नवम्बर 2023 तक 100 सदस्य

शहर श्रेणी
एक माह में 20 सदस्य तथा
15 नवम्बर 2023 तक 50 सदस्य

कस्बा श्रेणी
एक माह में 10 सदस्य तथा
15 नवम्बर तक 25 सदस्य

❖ **15 नवम्बर 2023** तक का लक्ष्य पूरा करने पर अणुव्रत समिति व कार्यकर्ता को अणुव्रत अधिवेशन में सम्मानित किया जाएगा। ❖ मासिक लक्ष्य पूरा करने पर कार्यकर्ता का फोटो पत्रिका में प्रकाशित किया जाएगा। ❖ स्टार परफॉर्मर कार्यकर्ताओं को पत्रिका प्रतिनिधि मनोनीत किया जाएगा एवं उनका नाम, मोबाइल नंबर व क्षेत्र की जानकारी पत्रिका में प्रकाशित की जाएगी। ❖ स्टार परफॉर्मर कार्यकर्ता की जानकारी सम्बंधित अणुव्रत समिति द्वारा अधिकृत रूप से देनी होगी। ❖ अपने क्षेत्र के विशिष्टजनों को निःशुल्क पत्रिका प्रेषण हेतु सौजन्य प्राप्त किया जा सकता है। 21 हजार या अधिक की सौजन्य राशि पर सौजन्यकर्ता की जानकारी पत्रिका में प्रकाशित की जाएगी। यह योजना "अणुव्रत" और "बच्चों का देश" दोनों पत्रिकाओं पर लागू होगी। ❖ स्टार परफॉर्मर समितियों को मूल्यांकन में अतिरिक्त अंक मिलेंगे।

+91 98994 45249, 91166 34512

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 Years 1989-2022

AGC

Akash Ganga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom, Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur, New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

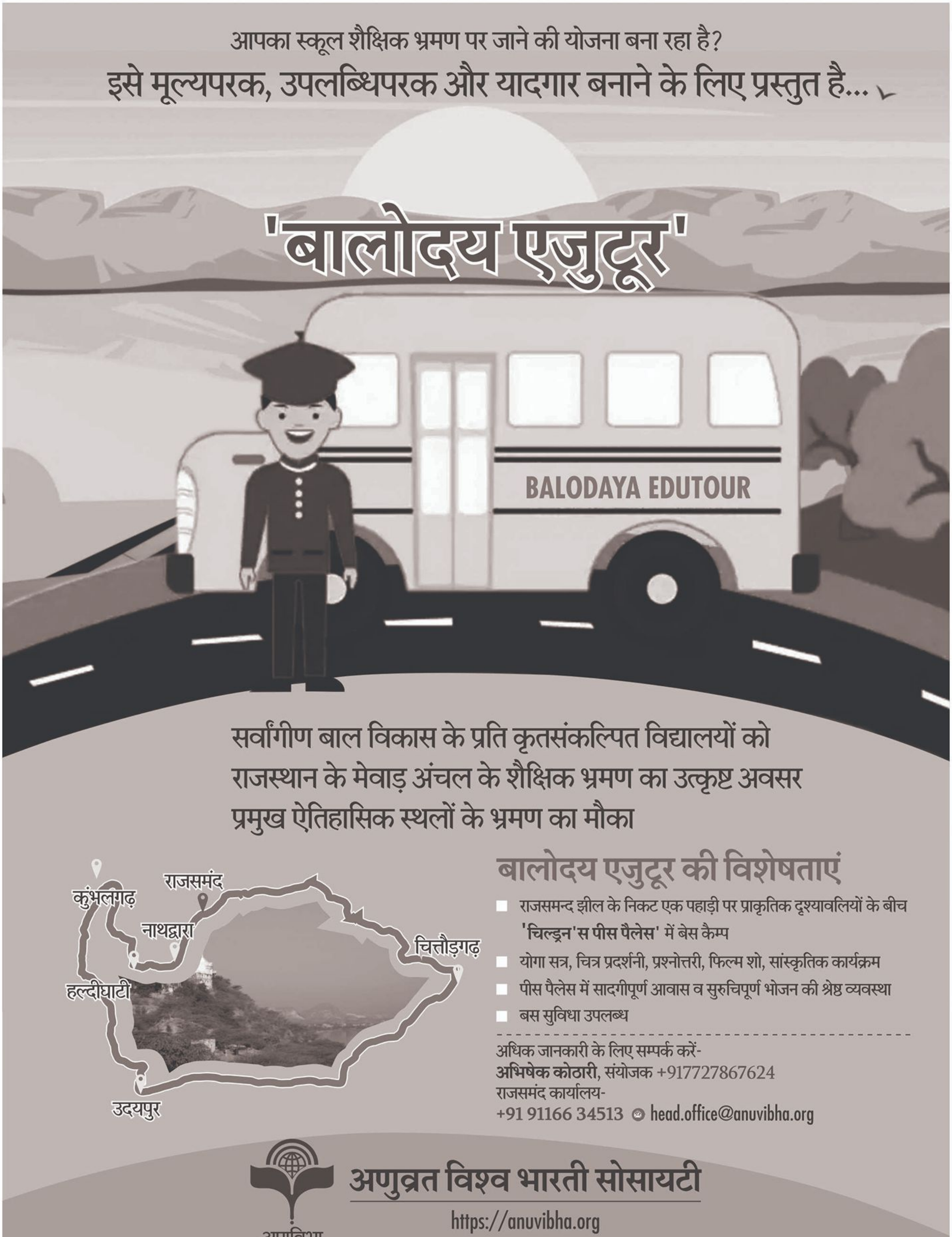
आपका स्कूल शैक्षिक भ्रमण पर जाने की योजना बना रहा है?
इसे मूल्यपरक, उपलब्धिपरक और यादगार बनाने के लिए प्रस्तुत है...
'बालोदय एजुटूर'
BALODAYA EDUTOUR
सर्वांगीण बाल विकास के प्रति कृतसंकल्पित विद्यालयों को
राजस्थान के मेवाड़ अंचल के शैक्षिक भ्रमण का उत्कृष्ट अवसर
प्रमुख ऐतिहासिक स्थलों के भ्रमण का मौका
कुंभलगढ़
राजसमंद
नाथद्वारा
चित्तौड़गढ़
हल्दीघाटी
उदयपुर
बालोदय एजुटूर की विशेषताएं
राजसमन्द झील के निकट एक पहाड़ी पर प्राकृतिक दृश्यावलियों के बीच 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' में बेस कैम्प
योगा सत्र, चित्र प्रदर्शनी, प्रश्नोत्तरी, फिल्म शो, सांस्कृतिक कार्यक्रम
पीस पैलेस में सादगीपूर्ण आवास व सुरुचिपूर्ण भोजन की श्रेष्ठ व्यवस्था
बस सुविधा उपलब्ध
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-
अभिषेक कोठारी, संयोजक +917727867624
राजसमंद कार्यालय-
+91 91166 34513 head.office@anuvibha.org
अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी
https://anuvibha.org
अणुविभा

ANUVRAT
RNI No. 7013/57
August, 2023

Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1261/2021-23
Licence No. U(C)-215/2021-23
Licenced to post without pre-payment
Date of Publication 25/07/2023
Posted at Delhi PSO Delhi-6 on 28-29 of the Previous Month

अणुविभा

75

1949 - 2024

अणुव्रत आंदोलन

अणुव्रत आंदोलन के गौरवशाली 75 वर्ष

अणुव्रत अमृत महोत्सव

21 फरवरी 2023 से 12 मार्च 2024

इस महाअभियान में जन-जन की सहभागिता का विनम्र अनुरोध

प्रकाशक एवं मुद्रक **संचय जैन** द्वारा स्वत्वाधिकारी **अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी** की ओर से श्री साई शिवानी प्रिंटर्स, बी-198, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, नई दिल्ली-110020 के लिए एड किंग डी-55/बी, हर्ष नगर, हरि नगर, ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। संपादक - **संचय जैन**